भारत में पोर्च्यूगीज़

(इतिहास)

लेखक

पं० रामनाथ पाँडे

जिला मानभूम,

पो० मुरादी

गाँव रामचन्द्रपुर।
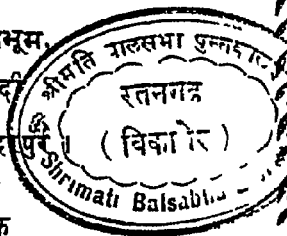
प्रकाशक

हरिदास एण्ड कम्पनी

२०१, हरिसन रोड,

कलकत्ता।

कलकत्ता २०१ हरिसन रोड की

"नरसिंह प्रेस में"

बाबू रामप्रताप भार्गव द्वारा

मुद्रित।

प्रथम वार १०००　　　　मूल्य ॥)
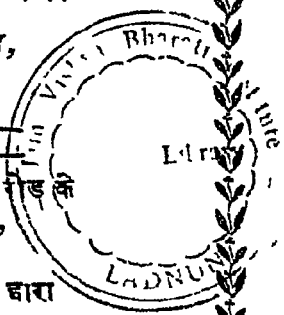
हमारा वक्तव्य

कालके भीषण भैरवी चक्र और परिवर्तन शील संसारके विचित्र हेरफेरोंपर जब ध्यान जाता है तो सहजहीमें मालूम हो जाता है कि अध्यवसाय और बुद्धिके बल्से वेही बातें जो कि बहुत दिन पहिले अनहोनी समझी जाती थीं, बिना किसी रुकावटके, बातकी बातमें, ऐसी सुन्दरतासे पूरी हो जाती है कि फिर उनपर लोगोंको आश्चर्यकी दृष्टिसे देखना पड़ता है। इसी प्रकार से राज्यका उलट फेर, व्यापारका घटना बढ़ना, किसी नवीन देशका आविष्कार करना, तथा व्यापार में एक अपरिचित और बिल्कुल नवीन जातिका अथाह रत्न-भाण्डार लेजाना आदि भी ऐसी ही अनहोनी बातें हैं जिन पर सर्व साधारणको सहज ही विश्वास नहीं होता और वे पुरुष तो, कभी भी, इनपर विश्वास करते ही नहीं जिन पर आलस्य, निरुद्यम और बुद्धिहीनता की भयानक छाया पड़ी हुई है। परन्तु अब वह समय नहीं है। जब तक देश में भरपूर धन धान्य रहता है, तब तक तो कभी किसी को किसी बातकी पर्वाह नहीं रहती, परन्तु जब उदर-ज्वाला चारों ओर से सताने लगती है तब सभी बातों को

पर्वाह करनी पड़ती है और सभी विषय जानने और सीखने पड़ते हैं।

इतिहास पर दृष्टि डालना, अपने देशकी प्राचीन अवस्था पर विचार करना और साथही अपने हीनतर होनेके कारणो को खोज निकालनेका उद्योग भी भविष्य-उन्नतिकी सूचना देता है। जो जाति अपने देशके इतिहाससे परिचित नहीं है, जिस जातिने अपने देशके उलटफेरों पर ध्यान नहीं दिया है, जिसने अपने पूर्व पुरुषोंके कामोंको आलोचना की दृष्टिसे नहीं देखा है, उस जातिका गौरव शीघ्र नष्ट हो जाता है। इसलिये प्रत्येक मनुष्यका काम है कि वह अपने देशके इतिहासको भली भाँति ध्यान से पढ़े और यही एक प्रधान कारण है कि अँगरेज भारत-सरकार ने शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकोंमें इतिहास को भी एक ऊँचा स्थान दिया है। परन्तु वे इतिहास राजत्व से सम्बन्ध रखनेवाले है, उन इतिहासोंसे राज्यके उलट फेरोंका पता लगती है और शिक्षा मिलती है, परन्तु जिन प्रधान कारणोंसे देशकी उन्नति और अवनति होती है उनका पता नहीं लगता।

देशका जीवन धन है, धन प्राप्तिका सबसे उत्तम उपाय वाणिज्य है। वाणिज्यसे जितना धन मिलता है, उतना धन और किसी तरह नहीं मिलता। इसीलिये वाणिज्यसे सम्बन्ध रखनेवाले इतिहासको जानना भी मनुष्यके लिये उतना ही आवश्यक है जितना कि देशवासी राजाओंके

जीवन-सम्बन्धी इतिहासको, अतः यही एक प्रधान कारण है कि भारतवासियोंको व्यापार में सबसे पहिले सम्बन्ध करनेवाले, एक दूर देशके राज्यका हाल सुनानेके लिये "भारतमें पोर्चुगीज" नामक ग्रंथ लेकर, आज हम उपस्थित हुए हैं। आशा है साहित्य-प्रेमी पाठकगण इससे कुछ शिक्षा लाभ करेंगे।

वाणिज्य-नीतिपर ध्यान देते हुए इस समय जरा जर्मनी की ओर दृष्टि डालिये—लोहे, चीन, टीन आदिकी चीजों में उसने किस तरह भूमण्डलको छा दिया है। मैञ्चेस्टर और बरमिङ्घमके कारखानोंकी ओर एक नजर फेरिये, देखिये तो किस तरह सब देशोंमें उनका सूती माल पहुँचकर उन देशोंको समृद्धिशाली कर रहा है। क्यों सब देशोंमें उनका माल पहुँचता है? क्योंकि सब देशोंके वाणिज्य-इतिहास और वाणिज्य नीतिसे वे सुपरिचित हैं, भारतवर्ष कृषि-प्रधान देश है; यहाँ का भी बहुत सा माल उन देशोंमें जाता है, परन्तु भारतको, भारतवासियोंके वाणिज्य-इतिहासके ज्ञान में कमी रहनेके कारण, भरपूर लाभ नहीं होता।

इस "भारतमें पोर्चुगीज़" नामक ग्रन्थ में, यहाँ से सात समुद्र पार यूरोपके पुर्त्तगाल नामक राज्यसे भारतका वाणिज्य सम्बन्ध दिखाया गया है। मामूली वाणिज्य के सहारे, पुर्त्तगालवासियों ने किस तरह भारत से अथाह धन रत्न ले जाकर अपने देशको भरा है, किस तरह भारतवासियो

के धन से अपने देशकी सेवा की है और कैसे कैसे भयानक अत्याचारों से अपना राज-कोष भरा है इत्यादि बातें वर्णन करनेका यथा साध्य उद्योग किया है।

दूसरी ध्यान देने योग्य बात उनका वाणिज्य प्रसार है, किस तरह और कितना शीघ्र उन लोगोंने भारत में अपना वाणिज्य अधिकार फैला लिया। किस तरह तलवार और अत्याचार के बलसे उन लोगोंने भारतका रत्न अपने देशमें भरा। वे अत्याचार अवर्णनीय है, इस छोटेसे ग्रन्थमें उनका क्या वर्णन हो सकता है? उनकी तलवारो, तोपो और बन्दूकोंने समुद्र-तटके भारतवासियोंको खाकमें मिला दिया, उनका धन गया, प्राण गया और धर्म भी गया। उस समय उन भारतवासियोंको किसीका भरोसा नहीं था। वे केवल ईश्वर के भरोसे उन कठोरतम अत्याचारोंको सहकर अपना सर्वनाश करते जाते थे, क्योंकि पुर्त्तगालवासियोंके अत्याचारके भय से भारतवासियों को उस समय कोई सहायता नही दिया चाहता था। बिचारे भारतवासी भयानक अत्याचारोंमें पडकर अपना जीवन खो रहे थे। विचारनेसे मालूम होता है, कि पुर्त्तगालकी ओरके आये हुए गवर्नर आलबूकर्क केवल वाणिज्य-विस्तारसे ही प्रसन्न न हुए थे बल्कि उन्होंने चाहा था कि तलवारके जोरसे भारतमें वे अपना राजत्व स्थापित कर दें और उन्होंने ऐसा उद्योग भी किया था। परन्तु उसी अत्याचारके सहारे भारतवर्षका सर्वनाश हुआ जाता

था। हम नहीं समझते, कि वे पुर्त्तगाल राज्यको भारतमें प्रतिष्ठा करनेवाले कहला कर कैसे चिरस्मरणीय हुए।

दुःखियोंका आर्त्तनाद ईश्वरके कानोंतक पहुँचा और दुःखित भारतवासियोंकी रक्षाके लिये, ईश्वरने एक बड़ी ही सहृदय और शान्ति-प्रिय अँगरेज़ जातिको भारतवर्षमें भेज दिया। यदि उस समय अँगरेज भारतमें न आते, यदि अँगरेजोंका व्यापार-बल धीरे धीरे बढ़ता न जाता तो इसमें कोई सन्देह नहीं, कि फिरङ्गियोंके अत्याचारके कारण भारत-वासियोंका कहीं ठिकाना न रहता। उस समय अँगरेज़ोंका आना, मानों भारतवासियोंके लिये सूखे खेतमें पानीका बर-सना हो गया। अँगरेजोंके कारण से ही भारतवासियोंके प्राण बचे। फिरङ्गियोंके लूटे हुए धनसे जो कुछ बचा था, वह उनको भोजन भरको रह गया और उनको शान्ति मिलने लगी। अभागे भारतवासियोंको ठोकरें खानी ही नसीब थीं। मुसल्मानोंकी ठोकरें लगीं, पुर्त्तगालवासियोंने उनका स-र्वनाश किया और उन्हें बात बातमें अपमानित और लाञ्छित होना पड़ा। यदि उस समय भी अँगरेजोंके आनेमें कुछ और विलम्ब होता, तो न जाने भारतवासियोंकी क्या दशा होती। सच तो यह है, कि अँगरेजोंकी उस समय भारत पर सुदृष्टि भारतवासियों के लिये ही हुई और ये अपने दलबल समेत यहाँ ऐसे आये कि ईश्वर की कृपासे इनको समस्त भारतका शासन भार ही मिल गया

और भारतवासी सब तरहसे सुखी हुए, नहीं तो फिरङ्गियों और मुसल्मानोंके जोर-शोरमें भारतको सुखकी नींद सोना कहाँ बदा था। इसमें कोई सन्देह नहीं, कि अँगरेजोंने भारतवासियोंके साथ बहुतसे उपकार किये। भारतवासियोंका धन बचा, प्राण बचे और उनको शान्ति मिली। उनके लिये शिक्षाका प्रबन्ध हुआ। अबाध वाणिज्य करनेकी आज्ञा मिली और भारतका माल मूल्य देकर बाहर भेजा जाने लगा। न्यायसे वाणिज्य चला। लूटपाट बन्द हुई और भारतमें भी शान्ति स्थापित हुई। ये ही सब ऐसे कारण थे, कि इन सुखोंको देखकर भारतवासियोंने प्रसन्नतासे राज-छत्र अँगरेजोंके हाथोंमें अर्पण कर दिया। यदि अँगरेज भी कहीं वही पद अनुसरण करते तो सम्भव था कि ऐसा अटल राज्य न जमने पाता। उस समयसे ही मानो भारत पर ईश्वरकी सुदृष्टि हुई और भारतवासियोंको आराम लेनेका अवसर मिलने लगा, क्योंकि पहिले की लूटपाट और हलचल में भारतवासी सब तरह से हीन हुए जाते थे। अब चारो ओर अमन चैन है। पहिले जितना ही अत्याचार था अब उतनी ही शान्ति है, पहिले जिस प्रकारसे लोगोंको सुखकी नींद नहीं मिलती थी, अब ब्रटिश-शासन में उतना ही आराम और सुख है। भारतमें ब्रटिश-शासन भारतवासियोंको सुखी कर रहा है और भारतवासी विद्या, बुद्धि, कला, कौशल आदि में अब धीरे धीरे उन्नति कर रहे हैं तथा हमारी ब्रटिश

सरकार उन्हें समय समय पर सहायता भी पहुँचाया करती है।

पोर्चूगीजोंके आनेके पहले अन्य कोई भी युरोपवासी व्यापारी भारत में न आया था। पुर्त्तगाल ने ही सबसे पहिले भारत से व्यापार सम्बन्ध किया था और इसी कारणसे जब अरबोंने देखा कि कालीकट बन्दरमें नये व्यापारियों का एक दल आया है, उसका पहिनाव उढ़ाव, खाना पीना, चाल व्यवहार भाषा आदि सभी नये हैं तो उन लोगोंने इन आगन्तुकोंका नाम "फिरङ्गी" रक्खा। पाठकों को खूब अच्छी तरह यह बात समझ लेनी चाहिये कि इस ग्रन्थ मे "फिरङ्गी" शब्द खास उन लोगोंके लिये बरता गया है जो पुर्त्तगाल राज्यकी प्रजा थे और पुर्त्तगाल राज्यसे भारतमें आये थे। युरोपके किसी अन्य देशसे आनेवालेका नाम 'फिरङ्गी' नहीं, बल्कि जिस देशके वे थे उस देशके अनुसार उनका नाम रखा गया है।

इस ग्रन्थमे पुर्त्तगालसे वाणिज्य सम्बन्ध रखनेवाले उन बन्दरोंका नाम तथा उनका इतिहास भी संक्षेप रूपसे अन्तमें इस लिये दे दिया गया है कि पाठकोंको उनका भली-भांति ज्ञान हो जाय और पाठकगण समझ सकें कि जिन बन्दरोंके राजाओंका आश्रय पाकर पुर्त्तगालवासी इतने बढ़े थे उनको पुर्त्तगालवासियोंने ही अन्तमे क्या दशा कर डाली।

इसके अतिरिक्त किन किन बन्दरोंमें क्या क्या पदार्थ पैदा

होते हैं, उनका व्यापार वहाँ किस तरह होता है, पहिले किसके हाथमें उनका व्यापार था, उन बन्दरोंके शासनकर्त्ता-ओंको उन पदार्थों के व्यापारसे क्या लाभ होता था और किस तरह अन्तमें फिरङ्गियोंने उनसे वह व्यापार ले लिया आदि सभी बाते दिखा दी गई हैं। सन् सम्वत आदि पर भी पूरा पूरा ध्यान रखा गया है। आशा है पाठक इस ग्रन्थको अपनाकर हमारा उद्देश्य पूरा करेंगे।

यह ग्रन्थ बहुत ही जल्दीमें छपा है अतएव सम्भव है कि प्रूफ शोधनेपर विशेष ध्यान न रहनेके कारण इसमें भूलें रह गई हों। आशा है, सहृदय पाठकगण सुधारकर समय समय पर हमें सूचित कर दिया करेंगे।

अन्तमें ईश्वर को धन्यवाद देकर, हम अपना वक्तव्य यहीं समाप्त कर देते हैं।

प्रकाशक—

भारत में पोर्च्यूगीज़।

वास्कोडीगामा।

प्रथम अध्याय।

नमस्यामो देवान्नतु हतविधेस्तेऽपि वशगा।
विधिर्वन्द्यः सोऽपि प्रतिनियतकर्मैक फलदः॥
फलं कर्मायत्तं किंममरगणैः किंच विधिना।
नमस्तत्कर्मभ्यो विधिरपि न येभ्यः प्रभवति॥*

भर्तृहरि।

अमेरिका के आविष्कार के पहिले यूरोपवाले दुनिया के पूर्व्वी अर्द्ध मण्डल के केवल उत्तर के आधे हिस्सों में बसे हुए स्थानोंको ही जानते थे। यहाँ तक कि

---

* देवताओं को हम नमस्कार करते हैं, किन्तु उनको विधाताके वशमें देखते हैं, इसलिये हम विधाताको नमस्कार करते हैं। पर विधाता भी हमारे पूर्व निश्चित कर्मके अनुसार फल देता है, तो फिर जब फल और विधाता दोनों कर्मके आधीन हैं तो देवताओं और विधातासे क्या काम है? इस कारण कर्म ही को नमस्कार है, क्योंकि विधाताकी भी सामर्थ्य उस पर नहीं चलती।

रशिया वा मसकोवी (Muscovy—जैसा कि यह तब कहा जाता था) का भी एक बड़ा हिस्सा यूरोपवालों को बिल्कुल मालूम नहीं था। एशिया के भी केवल उतने ही स्थानों को वे लोग जानते थे, जिनके नाम उनको बाईबिल वा धर्म्म-पुस्तक में लिखे हैं। तरतरी वा तातार* (Tartary), मङ्गोलिया (Mongolia), हिन्दुस्तान, कैथे (Cathey) या चीन (China) आदि का वे लोग केवल भ्रमात्मक नाम सुना करते थे, जैसे हम लोग मर्य्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र के समय की अयोध्या और राजाधिराज महाराज रावण की लङ्का आदि का हाल सुनते हैं। वे लोग अफ्रिका के ईजिप्ट (Egypt) और कुछ उत्तरीय किनारेके प्रदेशोंको जानते थे। उसमें भी एथिओपिया या एबीसीनिया (Ethiopia or Abyssinia) और पूर्वी किनारे पर गिनी की खाड़ी (Gulf of Guinea) के आस पासके सब स्थान अन्धकार में पड़े थे।

यूरोप मे सब से पहले फिरङ्गियों ने ही अनजाने स्थानों को खोज कर बाहर करने का काम आरम्भ किया था। विक्रम की सोलहवीं शताब्दी के आदि में वे लोग वरद अन्तरीप तक पहुंचे थे और वहां उन्होंने आबनूस की तरह काले चमड़े के आदमियों को देखा था। कुछ दिन बाद पुर्त्तगाल के राजकुमार हेनरी ने विचार किया कि

---

* तातार, मङ्गोलिया और कैथे आदिका वृत्तान्त सयुक्ताशमें देखिये।

अफ्रिका के किनारे किनारे बराबर चले जाने से कभी न कभी हिन्दुस्तान जरूर मिलेगा और इसी खयाल पर उसने विक्रम सम्वत् १५४३ (ई० सन् १४८६) में बारथोलोमियो-डियाज (Bartholomia diaz) नामक एक होशियार आदमी को प्रथम आविष्कार का काम सौंपा। डियाज आरेञ्ज नदी (Orange river) के पास पहुँच कर जहाज़ से उतर गये। किन्तु जब फिर वे वहाँ से आगे बढने को तैयार हुए, तब बड़े जोर से तूफान उठा और उसने उन्हें वहाँ से धकेल कर उत्तमाशा अन्तरीप के पार कर दिया और उन्होंने एङ्गलोआ उपसागर (Angloa Bay) में दूसरी बार जहाज बाँधा। यद्यपि डियाज का इरादा और भी आगे जाने का था, किन्तु उसके साथी लोग आगे बढना नहीं चाहते थे, इससे उन्हें वहीं से लौट जाना पड़ा। उसके बाद, उस आविष्कार का भार वास्कोडीगामा नामक एक बड़े विचक्षण और वीर पुरुष को दिया गया।

एक सौ साठ * घुडसवारों सहित वास्कोडीगामाके सेण्ट ग्यात्रियेल, सेण्ट मिगेल और वेरियो नामक जहाज जिस समय समुद्रकी छाती पर खड़े हुए, उस समय

* डोरसे (Dorsay) कहते हैं, कि १६० नहीं किन्तु २०८ घुड़सवार थे, लेकिन अलवरेज वेलपोकी डायरीमें १६० घुड़सवारों का ही जिक्र है। डबल्यू. डबल्यू. हण्टर और एम० टेनर आदि भी इसी मतका पोषण करते हैं।

सवार लोग काँपते हुए हृदय से ईश्वर का नाम लेकर जयध्वनि करने लगे और तीर पर खड़े हुए पुर्तगाल वासियों ने यह समझा कि ये लोग देश का अर्थ नष्ट करके समुद्र के शीतल हृदय में आश्रय लेने जा रहे हैं। सम्भवत, इनमें से एक भी मनुष्य लौट कर न आवेगा।

उस समय यूरोप में आविष्कार का युग चल रहा था। वास्कोडीगामा ने जब लिस्बन नगर छोड़ा, उसके ठीक पन्द्रह दिन पहिले, जान कैबट (John Cabot) ने उत्तर अमेरिकाका आविष्कार किया था। ठीक एकवर्ष पहिले, वे केवल अठारह आदमियोंको साथ लेकर, आटलाण्टिक महासागर होकर, भारतकी चेष्टामें निकले थे। राजा इमैन्युएल और वास्कोडीगामाने इस यात्राको धर्म्म-युद्धकी यात्राकी तरह समझा था। देश देशान्तरमें खीष्ट धर्म्म फैलानेकी जिस प्रबल इच्छाने एक दिन राजा हेनरीको मियान बिना नङ्गी तलवार हाथमें उठाये और क्रूशके चिन्हवाला पताका कान्धे पर लिये, राज्यमें नये जीवनका सञ्चार करनेके लिये, उत्साहित किया था और जो भयङ्कर आकांक्षा विक्रम सम्वत् १४७५ से १५५५ तक, ८० वर्ष, उसके पूर्व पुरुषोंके खूनकी धारोंके साथ प्रबल वेगसे नस नसमें प्रवाहित होती थी, इमैन्युएलने उसे सफल करनेका निश्चय किया था।

"राज्य फैलाना, व्योपार और धर्म्मका प्रचार करना" यही

तीन उद्देश्य हृदयमें लेकर वास्कोडीगामा प्राय: एक वर्ष समुद्र की छाती पर खेलते कूदते अन्तमें कालीकट * के निकट आ-पहुँचे। जेठ † के जलते हुए आकाशके नीचे, समुद्रकी छाती पर खड़े होकर, अस्ताचलको जाते हुए सूर्यकी मन्द मन्द किरणोंके उजेलेमें, भारतवर्षकी अस्पष्ट छायामय समुद्र-तीर की भूमि चित्रकी तरह देख कर, वास्कोडीगामा मारे खुशीके ईश्वरका गुणानुवाद करने लगे।

स्थान और काल दोनो वास्कोके अनुकूल थे। उन्होंने जब भारतवर्षमें पदार्पण किया, तब समग्र भारतमें "दिल्ली-श्वरोवा जगदीश्वरोवा" ‡ प्रचारित नहीं हुआ था। उस समय

---

* कालीकटका हाल पुस्तकके शेष भागमें दिये हुए अधुक्तांश वा Appendix में देखिये। प्र ले

† Sunday, May 20, 1498 (मई तारीख २० रविवार सन् १४९८ ई० सम्वत् १५५४

‡ उस समय, समग्र भारतवर्षमें मुगलोंका राज्य स्थापित नहीं हुआ था। उत्तरमें मुसलमानोंका राज था और दक्षिणमें विजय नगरके राजा नरसिंहराज राज्य करते थे। जिन राजाओं और सामन्तोंसे पुर्तगीजोंसे प्रथम मिलाप हुआ वे सब हिन्दू थे। हाँ, वाणिज्यके अधिपति अवश्य मुसलमान थे, किन्तु उनका शासनमें बिलकुल अधिकार नहीं था। Southern India or India South of Krishna river, remained independent under its Hindu chiefs or Nayaks in consequence of its remoteness from Delhi and even from the Deccan Mahomedan states —R C Dutt's Civilization of India

मुगलोंके राज-दण्डके भयसे हिमाचलसे कुमारिका पर्य्यन्त कम्पित नहो होता था। जिस प्रदेशमे वास्कोडीगामा उतरे थे, वह उस समय पर्वतोंसे घिरा हुआ था, उसमें छोटे छोटे राजा लोग राज्य करते थे और वह छोटे छोटे राज्योंमें विभक्त था, विशाल भारतवर्षके साथ उस प्रदेशका सम्बन्ध उस समय बहुत थोडा था।

हिन्दू साम्राज्य चेराके राजा "चेरामन पेरूमल" (Cheraman Perumal) उस समय हिन्दू-धर्म्म छोड कर मुसलमान हो गये थे और सिंहासन छोड कर वाणप्रस्थका अवलम्बन करके मदीना चले गये थे। उसी चेरा राज्यका अंश, हिन्दू विजय नगर साम्राज्यकी तरह इतिहासमें परिचित हुआ था। चेरा राज्यके समुद्र किनारेके भागके लिये, जो मालाबारके नामसे इतिहासमें प्रसिद्ध है, छोटे छोटे राजाओंमें उस समय खूब झगडा चल रहा था। कालीकटके राजा जमोरिन उन लोगोंमें प्रधान गिने जाते थे। ज़मोरिनने यद्यपि आस पासके पहाडी राजाओंसे मेल कर लिया था, तोभी वे, साधारणतः, "समुद्रराज" के नामसे ही मशहूर थे। उनका राज्य बहुत दूर तक फैला हुआ था*। समुद्रतीर

---

* It was then the most flourishing place on the Malabar Coast, the Zamorin or Emperor making in the capital of a very extensive state —Memoirs of Hindustan—J Rennel p 27

के अन्यान्य राजा लोग शक्तिहीन थे। हिन्दू भूगोलमें, भारतवर्ष जिन ५६ भिन्न भिन्न देशोंमें बँटा हुआ था उन्हींमेंसे एक का नाम केरल वा चेरा था। मालावार लम्बाई चौडाईमें केरल देशके केवल आठवें हिस्सेके बराबर था। उस समय कालीकट और कोचीन मालाबारकी दो शक्तियाँ गिनी जाती थीं। किन्तु विस्तारमें ये दोनों स्थान मालाबारके केवल आठवें अंशके बराबर थे। केरल साम्राज्यकी चिता-भस्मके ऊपर, जब हिन्दू राज्य विजय नगर प्रतिष्ठित हुआ था,तब सुना जाता है कि विजय नगरके आधीन तीन सौ बन्दर थे और उनमें कोई भी कालीकटसे छोटा नहीं था।

ईश्वरकी कृपासे पुर्तगीज पहिले मालाबारके ही किनारे पर आकर पहुँचे थे। मालाबार ही उस समय व्यौपार फैलाने, स्वदेशकी सेवा करने, धर्मका प्रचार करने और नया राज्य स्थापन करने आदिके उद्देश्यों की सिद्धि का उपयुक्त स्थान था। सम्भवतः, भारतवर्षके किसी दूसरे स्थानमें पहुँचनेसे, हिन्दुस्थानमें वास्कोडीगामा और उसीके साथ पुर्तगालको प्रतिष्ठा लाभ न होती। माला-बारके सामन्त—जमींदार—लोग संख्यामें बहुत थोडे थे और शक्तिमें भी क्षुद्र थे, वे लोग एक छोटोसी यूरोपकी शक्तिके साथ भी युद्धमें सामना करनेके योग्य न थे। विदेशी बनिये सर्वदा मालाबारके तीर पर आश्रय लेते थे। सामुद्रिक वाणिज्य व्यौपार से ही मालाबारके सामन्तोंके खजाने भरे

जाते थे। इसीसे वे लोग विदेशी व्यौपारियोंको आश्रय देनेमें कुण्ठित नहीं होते थे वरन् आग्रह ही प्रकाश करते थे।

क्रिश्चियन और यहूदी लोग बहुत दिनो से उन लोगों के राज्य में वास करते थे। सामन्त राजा लोग अपने देश में विदेशी धर्म्म के प्रचार होने में विघ्न नहीं करते थे। मालाबार में, उस समय, धर्म्म का बन्धन अनेक अंशो में शिथिल था। उस समय नाना धर्म्म, नाना रूप धारण करके, आत्म प्रकाश में व्यस्त थे। ईसाई, मुसलमान और यहूदी आदि वणिक उस समय बिना रोक टोक वाणिज्य करने की स्वाधीनता पाते थे। उत्तर भारत की तरह मालाबार में उस समय सनातन धर्म्म की दृढ प्रतिष्ठा नहीं हुई थी। उस समय नायर जाति आधी हिन्दू थी और निकटवर्त्ती पहाडी जाति कोई धर्म्म ही नहीं मानती थी। सामन्त लोग भी उस समय आधे हिन्दू समझे जाते थे। थोडे से ब्राह्मणों ने मिल कर उस समय मालाबार के तीर पर एक "सनातन-हिन्दू-धर्म्म-सम्प्रदाय" बनाया था। वह सम्प्रदाय

स्टीफेन्स साहब कुछ और ही लिखते है —

* The concentration of all commerce in the hands of the believers in the prophet was not favourably regarded by the wisest of the Hindu rulers, who were therefore inclined to heartily welcome any competitors for their trade—H M Stephens.

छोटा और शक्तिहीन था। लेकिन ब्राह्मण लोग अन्यान्य भारतीय ईसाइयों * की तरह राजाओं का मन्त्रित्व करते थे, ऐसा सुना जाता है।

इसीसे जब पोर्तगीज़ व्योपारियों ने मालाबार किनारे वाणिज्य करना चाहा, तब-समुद्र-तीर के राजाओं ने बड़ी खुशीसे उन लोगों को उसकी स्वाधीनता दे दी। मालाबार के तीर पर के बन्दर, उस समय, पूर्वी और पश्चिमी वाणिज्य के केन्द्रस्थल कहे जाते थे। यही नहीं, मिस्र के जितने व्योपारी सिंहल में या मलक्का द्वीप में व्योपार करने आते थे, वे लोग भारत उपसागर पार करके, पारस्य उपसागर की राह से, मालाबार में बिना जहाज बाँधे नहीं जाते थे।

जिस समय बहुत दूर पुर्तगाल से, पोर्तगीज बनियों ने आकर हिन्दुस्थानके तीर पर बड़ी खुशी के साथ पुर्तगाल की विजय पताका फहरायी, उस समय भारत के भीतर का हिन्दू राज्य विजय नगर † यद्यपि धन, जन, सौभाग्य, सम्पद, गौरव

* In 1442, an Indian Christian acted as prime minister to the king of Vijaynagar, the Suzerain Hindu State of Southern Indian-Sir W. W Hunter-cf Voyage of Abder-Rezak

† विजय नगर, मन्द्राज अहातेके होसपेट ताल्लुके में करीब ७०० मनुष्योंकी एक बस्ती है। इसके आस पास अनेक प्राचीन तीर्थ स्थान हैं। उनमें विरूपाक्ष शिव का मन्दिर, चक्रतीर्थ, स्फटिकशिला, आनागन्दी [इसको लोग सुग्रीव की राजधानी किष्किन्धा कहते है] पम्पासर आदि मुख्य हैं। सम्वत् १३९२, ई० सन् १३३६, में बुक्का और हरिहर ने इसे बसाया। वे लोग सम्वत् १३९० को तेलीकोटा की लड़ाई तक वहां रहे, उसके बाद गोलकुन्डाके मुसलमान बादशाहोंने उसे ले लिया।

ओर सभ्भ्रममें सब से श्रेष्ट था; तथापि नये उठे हुये मुसलमान राजाओं के द्वारा सर्वदा ही विध्वस्त और विपर्य्यस्त होता था। मालाबार और समुद्र तीरके विदेशी वणिक और विदेशी धर्म्म प्रचार इत्यादि की ओर ध्यान देनेका अवसर उस समय विजय-नगर को बिल्कुल नहीं था। विजयनगर उस समय भीतर भीतर तेलीकोटा * के भयङ्कर श्मशान के लिये तैयार हो रहा था। उस समय उसका अतुल ऐश्वर्य्य और अमित विक्रम कदाचित तेलीकोटा के तीव्र चितानल में चिर दग्ध होने के लिये ही धीरे २ मंत्र मुग्ध अजगर की तरह अग्रसर हो रहे थे।

उस समय, दक्षिण का मुसलमानी राज्य कभी कभी टूट कर चूर चूर हो जाता था और उसी भग्नावशेष पर नये नये मुसलमानी साम्राज्य नये सिरसे बनतेजाते थे। इतिहास प्रसिद्ध भामिनी वंश उस समय क्रमश: लुप्त होता जाता था और उसकी जगह पर आदिलशाही और वारिदशाही आदि पाँच मुसलमानी साम्राज्य सिर उठा कर प्रतिष्ठा लाभके लिये डरते डरते चोरोंकी तरह चारों ओर झाँक रहे थे।

उत्तर भारतमें, उस समय दुर्द्धर्ष † अफ़गान शक्ति धीरे धीरे कमजोर होती जाती थी। दिल्ली, उस समय पर्य्यन्त भी चौदहवी शताब्दी के भीषण घूर्णावर्त की विभीषिका से भीत

* तेलीकोटाका वृत्तान्त संयुक्तांश Appendix में है।

† दुर्द्धर्ष = ऐसी तेज या विक्रम वाली जिसके सामने जाने में भय हो

थी। उस समय पर्य्यन्त भी तैमूरलंग * की स्मृति विलुप्त नहीं हुई थी। चौदहवीं शताब्दी में तैमूरलंग घूर्णावर्त ने दिल्ली का जो ध्वंश किया था, पन्द्रहवीं शताब्दी में भी, उस ध्वंश राशिको हटा कर मुगलराज पूर्व प्रतिष्ठा प्राप्त करने में समर्थ नहीं हुए थे।

दिल्ली के सुलतान लोग उस समय शक्तिहीन हाथों से शासन-दण्ड चला रहे थे। अपने राज्य की सीमा को पार करके बाहर निकलने का साहस उस समय उन लोगों में नहीं था। इसीसे पन्द्रहवीं शताब्दी के शेष भाग में, जब वास्कोडीगामा मालावार में आये तब उन्होंने बड़ा सम्मान पाया था। जमोरिन ने अधिक शुल्क—चुङ्गी—पाने की आशा से उन्हें मन ही मन में वरन कर लिया। उनके महल में वास्कोडीगामा की अभ्यर्थना का आदेश होगया।

आजकल के ईसाइयों की तरह उस समय अरब लोग भारतवर्ष में प्रतिष्ठित थे। उन दिनोंमें 'मोफलम्' वा 'मैपिलस्' नाम सम्मान का चिन्ह समझा जाता था। मालाबार में अरबों के लिये स्वाधीन वाणिज्य की व्यवस्था थी। मालाबार के तीर पर रहने वाले अरब लोग उस समय दो सम्प्र-

* सम्वत् १४५४ [ई० सन् १३९८] में जब दिल्ली का राज्य महमूद के हाथ में था, उस समय तैमूर ने भारतवर्ष पर आक्रमण किया, दिल्ली को लूटा और वहांके समस्त अधिवासियों की हत्या करते हुए, लूटके धन माल को लेकर, वह मेरठ और हरिद्वार होकर कश्मीर की ओर चला गया था।

दायो में विभक्त थे। एक दलवाले भारत की शान्ति के सुख में लिप्त होकर, कुरान के साथ जो तलवार का एक दिन गाढ़ा सम्बन्ध था, उसे भूल गये थे। दूसरा दल तलवार और कुरान से महम्मद की शागिर्दी का परिचय देने में व्यस्त था। इस दूसरी सम्प्रदाय के लोग वाणिज्य की अपेक्षा धर्म्म के नाम से अधिक प्रसन्न होते थे। धर्म्म फैलाने का सुयोग पाने से पागल हो जाते थे और काफिर * लोगों को देख नहीं सकते थे। अरबों ने देखा कि मालावार के कालीकट बन्दर में नये व्योपारियों का एक दल आया है। उनका पहिनाव उढ़ाव, खाना पीना, चाल व्यवहार और भाषा आदि सभी नये है। पूछने ताँछने से मालूम हुआ, कि कहीं किसी समुद्र के पार पोर्तगाल है। ये लोग उसी स्थान से आये है। उन लोगों ने इन आगन्तुकों का नाम "फिरङ्गी" रक्खा।

इन फिरङ्गी बनियों का आना इस्लाम के सेवकों को अच्छा न लगा। उन लोगोंने खूब समझ लिया, कि कल ही लोहित सागर के रास्ते से, अरब के साथ भारत का वाणिज्य, फिरङ्गियों के द्वारा, विलुप्त हो जायगा। अब किस तरह फिरङ्गी लोग विध्वस्त होंगे, निकाल दिये जाँयगे और अमोरिन की विष-दृष्टि में पतित होंगे; वे लोग नित्य इसी की चिन्ता और चेष्टा करने लगे। अन्त में, अपनी मनोकामना

---

* काफिर = नास्तिक अर्थात् जो लोग ईश्वर को नहीं मानते।

सिद्ध करने के लिये, किस प्रकार उन लोगों ने जमोरिन की मन्त्रणा-सभा का आश्रय लिया था, वह कहानी पीछे कही जायगी।

दूसरा अध्याय ।

ताली पैगोडा ।

नयत्रस्थे मानं दधुरति भय भ्रान्त नयना ।
गलद्दानोद्रेक भ्रमदलि कदंबाः करटिनः ॥
लुठन्मुक्ताभारे भवति परलोकं गतवतो ।
हरेरद्यद्वारे शिव शिव शिवानां कल कलः ॥

भामिनी विलास ।

इस तरफ़ सेंएट गैबरियल जहाज के तख्ते पर बैठे वास्कोडीगामा कितने ही आकाश-कुसुम देख रहे थे। वे अरबों के विरोध की बात कुछ भी नहीं समझे थे। समझते कैसे? कोई एक वर्ष तक, समुद्र में मारे मारे फिरनेके बाद, एक दिन, थके हुए, तरङ्गोंके झोकोंसे विध्वस्त और समुद्रीय तूफान के ढकेले हुए पुर्तगीजों की आँखों के सामने एक नये

बड़े बड़े महोन्मत्त हाथी जिनके गण्डस्थलों से बराबर मद स्राव होता था, जिन पर भ्रमर गुंजार करते थे, उन हाथियों के मारे जाने पर उनके गण्डस्थलों से निकले हुए मोती जिस गुफा के प्रवेश द्वार पर अस्तव्यस्त पड़े हुए देख पड़ते थे, उस गुफा में वास करने वाले सिंह को बाहर निकल गया देख कर, हर। हर।! अब उस गुफा में क्षुद्र सियारों ने हड़ मचा रक्खा है।

राज्य का माया-द्वार सहसा मानो मन्त्र-बल से खुल गया। इस देश में शीत नहीं, कुहासा नहीं, दरिद्रता नहीं, यहाँ पर सभी नया और सभी आश्चर्यमय है। वे विस्मय भरे नेत्रों से देखने लगी, कि मालाबार * के निवासियों का वर्ण काला है, उन लोगों की डाढ़ी मूँछ लम्बी है, कोई सिर मुँड़ाये हुए और कोई जटाधारी है, केवल ख्रीष्टत्व † के चिन्ह की तरह किसी किसी के सिर पर काले बालों का एक गुच्छा हवासे हिल रहा है। उस लम्बे बालोंके गुच्छे का अगला भाग ऐंठा हुआ जूड़ेकी शकलमें ऊपरकी ओर उठा हुआ है। नेटिवों —देशियों—के कानोंमें अनेक छेद हैं। उन सब छेदों में सोने के गहने लटक रहे है। उन लोगों का शरीर कमर से ऊपर एक दम खुला हुआ है, किन्तु जिस वस्त्र से कमर के नीचे का भाग ढका है वह बड़ा ही सुन्दर और मुलायम है। धनवान लोगों का यही पहिनावा है। साधारण लोग तो जैसी जिसकी इच्छा होती है वैसीही पोशाक पहिनते है। स्त्रियाँ प्राय: बदसूरत, छोटे क़दकी और दुर्बल अंग वाली है।

---

*मदरास प्रहातमें, समुद्र के किनारे १४५ मील फैला हुआ मालाबार एक जिला है, जिसका सदर स्थान कालीकट है। इसकी चौड़ाई २५ मील से ७० मील तक है यह जिला उत्तरी मालाबार और दक्षिणी मालाबार के नाम से दो भाग होकर दो अफ़सरों के अधिकार में है।

† अलवरेज बेल्पो Alvareze Velpo ने अपने दिन-लिपि में हिन्दुओं को क्रस्तान कह कर वर्णन किया है।

उन के गले में भारी भारी सोने के गहने, अंग हिलने डोलने से, क्रीडा करते हैं। हाथो में बहुंटी शोभा दे रही है। पैरों की अंगुलियों में भारी दामों के पत्थरो से जडी हुई अँगूठियाँ सूर्य्य की किरणोंसे जगमग २ कर रही है। देखनेमें कुरूपा हैं, किन्तु स्त्रियाँ बडे कोमल स्वभाव की, भोली-भाली और बडी लोभी है।

वास्कोडीगामा ने मालाबार के तीर पर पहुँच कर अनुसन्धान किया तो मालूम हुआ, कि जमोरिन कही दूसरे स्थान में रहते है। दो फिरङ्गी दूतों ने सम्वाद लेकर, जमोरिनके पास आकर, वास्कोके आनेका समाचार देकर, कहा—"पुर्तगाल के राजा ने पत्र सहित अपने एक जहाज़ी सेनापति को भारतवर्ष में भेजा है। महाराजकी आज्ञा होने से, वे पत्र लेकर राज दरबार में हाजिर होंगे।" जमोरिन उस समय अधिक शुल्क—चुङ्गी—पाने की आशा में फूले हुये थे। उन्होंने तुरन्त बहुमूल्य वस्त्र उपहार देकर दोनो दूतोंको विदा करने का आदेश किया और पुर्तगाल के जहाज़ी सेनापति के साथ मिलने के इरादे से खुद कालीकट गये।

दूसरे दिन सवेरे, वास्कोडीगामा तेरह मनुष्यो को साथ लेकर जमोरिन की राज-सभा में जाने को तैयार हुए। पुर्तगीज सहनाई बजाने वाले सहनाई बजानेलगे। मन्द मन्द हवा में पुर्त्तगाल की विजय पताका भारतकी छाती पर उडने लगी।

अमोरिन ने वास्को की अगवानी के लिये एक भाली—राज्यका प्रधान मन्त्री—भेजा था। पोर्तगीज लोग अपनी अच्छी अच्छी पोशाकों से सज कर, जहाज परसे, झण्डियों से सजी हुई छोटी सी नाव के द्वारा, समुद्र के किनारे उतरे। घाट पर ही, दो सौ योद्धाओंको लेकर भाली महाशय अपेक्षा—इन्तज़ार—कर रहे थे। योद्धा लोग सब हथियारबन्द थे। किसी के हाथ में खुला बर्छा और किसी के हाथ में तेज़ फ़रसा था। सबोंने डोगामाका बड़े सम्मानके साथ अभिवादन किया। राजाकी आज्ञा से एक पालकी तैयार थी *। वे उसी पालकी पर सवार हुए और उनके साथी लोग साथ साथ पैदल चले।

कप्याकत्ता † (Capua) के भीतर होकर कालीकट का रास्ता था। कप्याकत्ता के एक धनाढ्य के घर में सबके विश्रामका स्थान निर्दिष्ट हुआ था। भोजन के लिये वहाँ अन्न, घी और पकी पकाई मछलियाँ तैयार थीं। कप्याकत्ता से कालीकट जानेमें कुछ दूर नाव पर जाना पड़ता है। नाव तैयार थी। फिरङ्गी लोग खा पी कर, फिर नाव पर चढ़े। उस समय मालाबार के एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त तक एक भया;

---

* उन दिनों अपने घर में पालकी रखने के लिये राज-कर देना पड़ता था। शायद इसी कारण से पालकी सम्मानका चिन्ह समझी जाती थी।

† कप्याकत्ता का वृत्तान्त उपक्रम में देखिये। प्र० ले०

नेक चञ्चलता प्रस्तुत होगयी थी। सबोंने सुना कि, मालाबार से कुछ अद्भुत जीव आये है। वे उन्हीं लोगो की तरह हँसते, उन्हीं की तरह बोलते और उन्हीं की तरह चलते फिरते हैं, किन्तु उन लोगोंका पहिनाव उढाव नया, भाषा नयी एवं बिल्कुल अबोध्य है और वे लोग फिरङ्गी हैं। स्वयँ भाली आकर फिरङ्गियों को बड़े आदर से राज-सभा में लिये जा रहे है। हथियारबन्द सिपाही पहरा दे रहे है। यह सब सुन कर, उन लोगों का कौतुहल इतना बढ गया था कि, वे झुण्डके झुण्ड कोई पनसुइया—छोटी नाव—पर चढ कर जल की राह से, कोई पैदल और कोई बिना ज़ीन चारजामे के घोडे की पीठ पर चढकर देखने को चल दिये। इतना ही नहीं, स्त्रियाँ भी छोटे २ बालकोंको काँखमें दबाये और छाती पर चढाये, फिरङ्गियों के दर्शन के लिये दौड रहीं थीं। उस समय सबों के मुँह से एक ही बात निकलती थी—"फिरङ्गी फिरङ्गी"।

नाव पर से उतर कर, फिरङ्गी लोग सब से पहिले एक देव-मन्दिरमें गये। वहाँ जाकर देखा, कि मन्दिर बडा भारी और खुदे हुए पत्थरों से बना है। मन्दिर की छत ईंटोंकी बनी है। सिंहद्वार की बगल में, जहाज़ के प्रधान मस्तूल की तरह, एक पीतल का ऊँचा स्तम्भ—खम्भ—है। उस स्तम्भ के ऊपर एक पक्षी की मूर्ति स्थापित है। उस पक्षी की शकलकी मूर्त्तिको देखनेसे जान पडता है कि मानों एक मुर्ग़ा बैठा रक्खा

है *। प्रवेश द्वारके दूसरी ओर एक और स्तम्भ है और ठीक मध्य भागमें पतला गुम्बजदार एक मन्दिर है। यह भी खुदे हुए पत्थरोंका बना है। इस मन्दिरका दरवाज़ा इतना तङ्ग है, कि बड़ी कठिनतासे केवल एक मनुष्य उसमें प्रवेश कर सकता है। सामने पत्थरोंकी बनी हुई सीढियाँ पीतलके दरवाजेकी ओर फैली हुई है। मन्दिरके भीतर एक छोटीसी मूर्त्ति शोभा दे रही है।

सिंहद्वारकी भीतिमें सात छोटे छोटे घण्टे लटक रहे है। इसी स्थान पर बैठ कर, वास्कोडीगामा और उनके साथियोंने पहिले उपासनाकी। फिरङ्गी बनिये, उस समय, यह नहीं जानते थे और जान भी नहीं सके, कि जिस देव-मूर्त्तिके सामने घुटना टेक कर उन लोगोंने उपासनाकी, वह मूर्त्ति मेरीकी नहीं, बल्कि गौरी की थी।

किसी फिरङ्गीको मन्दिरके भीतर जानेका अधिकार नहीं मिला, कारण पूजक 'काश्राफो"—ब्राह्मण—के सिवा किसीको वह अधिकार नहीं था। इन कोश्राफियोंको देख कर उन लोगोंने समझा, कि यही लोग इस चर्च—गिर्जे—केविशप ‡ 'डिकन' वा 'प्रीस्ट' ‡ होंगे। उन लोगोंके ऐसा समझनेका कारण भी विद्यमान था। पोर्तगीज़ 'डिकन' लोगोंके

* अनेक हिन्दू-मन्दिरोंमें खम्भेके ऊपर गरुड़की मूर्त्ति स्थापित रहती है जिसे गरुड़ स्तम्भ कहते है। रा० मा० ‡ विशप = धर्माध्यक्ष, पादरियोंका पेशवा।

‡ डिकन वा प्रीष्ट = पुजारी वा पुरोहित।

ष्टोल्स § की तरह कोआफियोंके बाँयें कन्धोंके ऊपर और दाहिनी भुजाओंके नीचे होकर एक डोरा—यज्ञोपवीत—लटक रहा था।

कोआफियोंने, अपने नियमके अनुसार, फिरङ्गियोंके शरीर पर गङ्गाजल छिड़ककर उन्हें चन्दन उपहार दिया। उन लोगोंने देखा, कि इस नये खीष्टान सम्प्रदायके राज्यमें प्रत्येक खीष्टान, कपालमें, छातीमें, गलेके इधर उधर और बाँहके नीचे चन्दन लेपे हुए हैं।

चर्च—मन्दिर—के बाहर होनेके समय उन लोगोंने देखा, कि मन्दिरकी दीवारमें अनेक साधुओंके चित्र खिंचे हैं। किन्तु यह सब मूर्त्तियाँ 'बेलेम' नामक गिर्जेके एपसलोंकी मूर्त्तियोंकी तरह नहीं हैं। इनके सिर पर मुकुट है, हाथ चार हैं और किसी किसीके दाँत इतने बड़े हैं, कि मुँहसे प्रायः एक इञ्चके अन्दाजन बाहर निकल आये हैं। मन्दिरकी भीत पर, ये सब और अन्यान्य भद्दी मूर्त्तियाँ अङ्कित देख कर, उन लोगोंमेंसे कोई कोई बहुत ही विरक्त हुए। सेण्ट राफिल नामक जहाजके कप्तान 'डायामाडिसा' ने, मन्दिरके भीतर उपासना करनेके समय, वास्कोडोगामासे कहा—"If these are devils, I adore the living God"‡ जो हो फिरङ्गी बनियोंने अपने अपने मनमें यह समझा, कि इस नये देशका

§ ष्टोल्स=एक प्रकारका डोरा जो पादरी लोगोंका चिन्ह समझा जाता है।

‡ यदि ये मूर्त्तियाँ प्रेतोंकी हैं तो मैं जीवित देवताकी उपासना करता हूँ।

धर्म्म-मन्दिर भी नया है। इसलिये उस विषयमें अधिक चिन्ता न करके, वे लोग हिन्दुओंके "तालो पेगोडा" में, निश्चिन्त मनसे, मेरीकी आराधना करके, शान्त और सन्तुष्ट चित्तसे बाहर निकले।

तीसरा अध्याय।

—○*○—
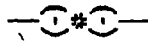
राज-दर्शन।

सारम्या नगरी महान्स नृपतिः सामन्त चक्रंचत
त्पार्श्वेतस्यचसापिराज परिषत्ताश्चन्द्र बिम्बाननः
उद्रिक्तः स च राजपुत्र निबहस्ते बन्दिनस्ताःकथाः
सर्वं यस्य वशादगात्स्मृति पथं कालाय तस्मैनमः॥*

भर्तृहर

"ताली पैगोडा"—देव-मन्दिर—से बाहर निकल कर फिरङ्गी लोग आगे बढे। उस समय रास्तेके अगल बगल इतनी भीड थी,कि रस्ता चलना कठिन था। राजाकी आज्ञासे, प्रधान मन्त्री के छोटे भाई, बडे समारोह के साथ, उन लोगोंकी अभ्यर्थना के लिये आये थे। उनके साथ विजय-नगाडा, तुरही, बाँसुरी और सहनाई वगैरः लेकर और बहुत से लोग आये थे। बन्दूक लिये सिपाही लोग आगे आगे

---

* वह रमणीक नगर, वह प्रतापी राजा और उसके अधीनस्थ जमींदार लोग तथा उसकी सभाके पण्डितोंका समाज, वह राज-भवनकी चन्द्रमुखी स्त्रियाँ, वह गौरवान्वित राजपुत्रोंका दल, वह भाट लोग और वह कहानियाँ अब कहाँ हैं? जिस कालने उन सबका विनाश किया है उसको नमस्कार है।

बन्दूकोंकी आवाज़ करते करते चलने लगी। बड़ी गम्भीरतासे जय-ढोल बजने लगा। मालाबारके तीर और कालीकटको कम्पित करती हुई भेरी बजने लगी। बन्शी और सहनाई आदिने एक स्वरसे बज कर, फिरङ्गी बनियोंका आगमन जनाया। उन लोगोंने विस्मयके साथ देखा, कि स्पेनमें रह कर, स्पेनके नवपति—जहाज के सर्दार—के भाग्यमें इतना सम्मान लाभ नहीं घटता।

धीरे धीरे आदमियोंकी भीड़ बढ़ने लगी। रास्तेमें बिलकुल जगह न रह गई। अन्तमें, लोगोंने घरकी खिड़कियों पर, छतों पर, यहाँ तक कि किसी किसीने पेड़की डाल पर आश्रय लिया। प्रायः दो हज़ार सिपाही भी अस्त्र शस्त्रसे सज कर, उसी कलकोलाहलपूर्ण जनस्रोत में मिल गये।

फिरङ्गी बनियोंने, सन्ध्याकालके कुछ पहिले, जमोरिनके राज महलमें प्रवेश किया। फाटक पर से ही राज्यके प्रधान प्रधान लोग उन्हें अभिनन्दन करके ले चले। महलके सबसे आखिरी दरवाजे पर, एक हृष्ट छोटे कदके ब्राह्मण पुरोहित खड़े थे। उन्होंने वास्कोडीगामाको गलेसे लगाया। फिरङ्गियोंने समझा कि यही इस खीष्टान राज्यके विशप हैं—यही इस देशके राज-पुरोहित हैं। इस तरहसे, फिरङ्गियोंने जमोरिनके राज-महलमें प्रवेश करके, राजाके सभागृह में जो कुछ देखा उससे चकित हो गये। वे लोग मनमें कहने लगे, कि इस देशमें इतनी सम्पद इतना धन और इतनी समृद्धि है!!

विस्मयभरी आँखोंसे, साथियों सहित, वास्कोडीगामा देखने लगे, कि कमरेमें एक सब्ज रङ्गकी मख़मल बिछी है। उस मखमलके ऊपर एक मूल्यवान गालीचा शोभित है। उसके ऊपर खूब सुन्दर मुलायम और बर्फ़की तरह सफेद जाजिम बिछी है, जिसके चारों ओर बहुत से तकिये रक्खे हैं। उस सुन्दर शय्याके ऊपर, एक जरी बादलेके कामसे बनी हुई मसनद पर, समग्र मालाबारके राजा, कालीकटके ज़मोरिन, अपने बन्धु बान्धवो सहित बैठे है। उनके हाथोमें एक बडा सा सोनेका बरतन है, पान खाकर वे उसी स्वर्ण-पात्र—पीकदान—में पीक थूक देते है। जमोरिनकी दाहिनी ओर, एक गोलाकार सोनेके बरतनमें, बहुत सा पान और मूर देशकी चाँदीकी छूरियाँ सजी है। उस सोनेके बरतनका व्यास इतना बडा है, कि दोनों हाथ फैलाने पर भी कठिनतासे वह पकडा जा सकता है। पानदानके पास खड़े होकर, एक मन्त्री थोडी थोडी देरमें जमोरिनके हाथमें पान उठा कर देते है। मसनदके ऊपर सोनेका चन्दोवा, उनकी अतुल सम्पद का अन्यतम परिचय स्वरूप, सभा-भवनकी सुन्दरता बढा रहा है।

जब वास्कोडीगामाने उस कमरेमें प्रवेश किया, तब ज़मो-रिनने, देशकी रिवाज के अनुसार, दोनों हाथोंको ऊपर उठा कर उनको अभिवादन किया* और दाहिना हाथ बढा

---

* By clasping his hands and raising them up towards

कर इशारे से उन्हें उसी चन्दोवेके तले बुलाया। पानदान उठानेवाले खवास तथा सगे सम्बन्धियोंके सिवा और कोई राजाके बहुत पास नहीं जा सकता था ; इसीसे वास्कोडीगामा भी अधिक आगे नहीं बढ़े। फिर जमोरिनने सबको बैठ जानेका इशारा किया , तब वे लोग पासके एक पत्थरके आसन पर बैठ गये। जो लोग अपार समुद्रके रास्तेसे, एक अनजाने और अनाविष्कृत देशसे, निडर होकर, हजारों योजनका रास्ता पार करके, उनके सिंहासनके तले आकर पहुँच गये, उन लोगोंको असीम वीरता और साहसको देख कर जमोरिन मोहित और प्रसन्न हो गये। उन्होंने राज-महलमें ही फिरङ्गी व्यौपारियोंको यथोचित अभ्यर्थनाका आदेश दे दिया। तुरन्त हाथ मुँह धोनेके लिये मीठा ठण्डा जल और जलपान करनेके लिये फल मूल आ पहुँचे। सभा-भवन में बैठ कर वास्कोडीगामा और उनके साथी लोग जब तक आरामसे खाने पीनेमें लगे रहे तबतक जमोरिन आनन्दसे उन्हें देखते रहे और बगल में बैठे हुए कर्मचारियों से बात-चीत करते रहे। खाना पीना खतम होने पर, उन्होंने वास्कोडीगामाकी ओर देख कर कहा :—

"यहाँ पर जो लोग हाजिर हैं, वे सब ऊँचे दर्जेके आदमी हैं, आपको जिस चीज की जरूरत हो इन लोगों से कहिये।

Heaven as the Christians do to God and whilst raising them opening and clenching his fists repeatedly —The Journal

ये लोग वह सब लादेंगे।" * जमोरिन की बात सुन कर, वास्को बोले, "मैं पुर्तगाल के राजा का दूत हूँ। महाराज के लिये दो पत्र लेकर आया हूँ, उन्हें दूसरे के सामने देने की आज्ञा नहीं है।"

जमोरिन—"अच्छा, चलिये हम लोग दूसरे कमरे में चलें।" इसके बाद जमोरिन और डिगामा दूसरे कमरे में गये। वहाँ एक रङ्गबिरङ्गी मसनद पर बैठ कर ज़मोरिन ने फिर वास्कोडिगामा से पूँछा—

"हमारे राज्य में आपका किस मतलब से आना हुआ है?"

वास्को—"हम पुर्तगाल-राज के दूत हैं। पुर्तगाल के राजा, उस प्रदेश के अनेक राजाओं से, बहुत बलवान और समृद्धिशाली राजा है। वे जानते हैं कि भारतवर्ष में उन्हीं की तरह ईसाई धर्म्म के माननेवाले राजाही राज्य करते हैं। इसी से वे प्रतिवर्ष भारतवर्ष का आविष्कार करने के लिये पुर्तगाल से जहाज भेजते थे। हम लोग भी उसी उद्देश्य से यहाँ आये हैं। हमारे देश में बहुत सोना चाँदी पाया जाता है, उसे प्राप्त करने की प्रत्याशा से हम लोग भारतवर्ष में नहीं आये हैं और आने का कोई खास प्रयोजन भी नहीं है। इतने दिनों तक और दूसरे जहाजोंके कप्तान लोग, दो एक

* जमोरिन और वास्को की बातचीत एक द्विभाषी (interpreter) द्वारा होती थी।

वर्ष, भारतवर्ष की खोज में, समुद्र में फिरते फिरते, खाने का सामान चुक जाने से निराश होकर, पुर्तगालको लौट जाते थे। पुर्तगाल के वर्तमान राजा इमैन्युएल ने अबकी बार तीन नये जहाज बना कर हमको भारतवर्ष के अनुसन्धान के लिए भेजा है। भारतवर्षमें न आकर, यदि हम आधे रास्ते से ही लौट जाते तो वे हमको मार डालते, उनकी ऐसी ही आज्ञा थी। पुर्तगाल-राजने आप के हाथ में देने के लिये दो पत्र दिये हैं और मुंह से भी कह दिया है कि वे भारत के ईसाई राजा के भाई बन्धु हैं। दोनो पत्रों को हम कल साथ ले आवेंगे।"

जमोरिन—"स्वागत! अपने राज्य में, हम आप लोगोंको सादर अभ्यर्थना करते हैं। पुर्तगाल-राजको अपने भाई और बन्धु की तरह पाकर हम भी बहुत प्रसन्न होंगे। आप जब अपने देश को लौटेंगे, तब हम भी आपके साथ अपना एक दूत भेजेंगे।"

इसी तरह और भी बहुत सी बात-चीतों में क्रमशः रात अधिक बीत गई। वास्कोडीगामा जमोरिन से विदा लेकर अपने साथियों के पास आये। राज-महलके बरण्डे में, पीतल के एक बड़े भारी झाड़ में, कई एक दीपक जल रहे थे। उन्हीं दीपों के उजेले से जगमगाते हुए विस्तृत बरण्डे में डीगामा के सहचर लोग अधीर की तरह बैठे हुए थे।

रात को लगभग ग्यारह बजेके समय, फिरङ्गी लोग, राजा

ने जहाँ उन लोगों के रहने का स्थान ठीक किया था, जाने को तैयार हुए। उस समय मूषलधार वृष्टि हो रही थी, लेकिन वे लोग ठहरे नहीं। उसी पानी में सैकड़ो फ़ौज़ीन तमाशबीनों के झुण्ड से घिर कर चलने लगे। जमोरिन के भेजे हुए एक प्रतिष्ठित मूर रास्ता दिखाने के लिये साथ साथ जा रहे थे। बहुत दूर पैदल चल कर, उन लोगों ने उसी धनवान मूर के घर में पहुँच कर देखा कि, घर के भीतर खुले स्थान में एक मचान है। उस मचान के ऊपर ईंटों की बनी हुई छत है। कई एक तोशक मचान पर रक्खी है। दो बड़े बड़े झाड़ों में तेल के दीये जल रहे है। दीये लोहे के बने है, प्रत्येक में चार चार बत्तियाँ हैं और चारो मशाल की तरह जल रही हैं। उन प्रदीपो में से इतनी तेज रोशनी निकलती है, कि चारो ओर उजेला ही उजेला फैला हुआ है।

वहाँ वे लोग थोड़ी देर ठहरे थे कि इतने में वास्कोडी-गामा के लिये एक घोड़ा आया, किन्तु उस पर कुछ साज सामान न देख कर, डीगामा पैदल ही अपने स्थान को चले। उन लोगों के डेरे में पहुँचने के पहिले ही, जहाज़ में से उनके कई एक साथी वास्कोडीगामा का बिछौना ओढ़ना तथा थोड़ी सी बहुत ज़रूरीर चीजें ले आकर इन्तज़ारी कर रहे थे।

फिरङ्गियों ने बड़े आनन्द से अपनी मालाबार की पहिली रात बिताई। उस समय कौन जानता था, कि यही बहुरूपिये

बनिये एक दिन मालावार के एक छत्र व्योपारी के नाम से संसार में प्रसिद्ध होंगे और पुर्तगाल के काव्य और इतिहास में स्थान पाकर समग्र यूनानी मण्डली के प्रशंसाभाजन होंगे? उस समय किसने समझा था, कि एक दिन फिरङ्गियों के किलो और शहरपनाहों से मालावार का तीर कण्टकित हो जायगा और इन लोगों के वाणिज्य और वाणिज्य-नौकाओं की भरमार से भारतवर्ष के साथ अन्य जातियों का वाणिज्य सम्बन्ध शिथिल हो जायगा? उस समय कौन जानता था, कि जिन मालावार-अधिवासियों ने आज फिरङ्गी बनियों को आश्रय दिया और राजा का अधिक सन्मान दिखाया और जिस ज़मोरिन ने नये मिहमान समझ कर मुग्धचित्त से अपने महल के भीतर, राज-सभा-भवन में उन लोगों की खातिरदारी और मिहमानी की, कुछ दिन में वे ही लोग मालाबार सिंहासन के परम शत्रु की तरह वज्रनिनादी कमानों—तोपों—से अनल वर्षन करके मालाबार ध्वंश करने का प्रयास करेंगे और अन्तमें मालावार में अपनी जाति की विजय-पताका उड़ा कर, आगे के आतिथ्य का स्मरण करते हुए अधिवासियों के नाक कान छेद कर गर्व्व सहित धन रत्न लूटेंगे और माल मसालो से भरे सैकड़ो व्योपारी जहाज़ पुर्तगाल भेज कर अपने देश की श्री वृद्धि करेंगे? किन्तु परम पिता परमेश्वर की इच्छा ऐसी ही थी और कुछ काल बाद हुआ भी ऐसा ही!

चौथा अध्याय।

नज़राना।

—:o:—
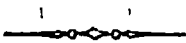
आशा, इच्छा और उद्वेग से चञ्चल हृदय वास्कोडीगामा जब भारत-आविष्कार के गौरव का सुख स्वप्न देखते देखते अज्ञात समुद्रके जलमें अन्धकार अदृष्ट—भाग्य—के ऊपर निर्भर करके राजा इमैन्युएलके उत्साह-वाक्यों से, हृदयमें बल सञ्चय करके, समुद्र-यात्राको तैयार हुए थे; तब उन्होंने नाना देशों के राजाओं को नजर देने के लिये बहुत सी सभियो भी साथ ले ली थी।

कोरिया (Corria) का कथन है, कि उस समय वास्कोडीगामा के साथ अनेक बहुमूल्य चीजें थीं। कीमती मालो से खूब सज कर वास्को का जहाज़ समुद्र में उतराया था। कोरिया के वर्णन के साथ अलवरेज़ ('Alveraze Velpo) की डायरी का मेल नहीं पाया जाता। पुर्तगाल परित्याग करने के बाद से ही, अलवरेज़ ने दिनलिपि लिखना आरम्भ किया था। वह दिनलिपि रोटेइरो (Ratairo)के नाम से जगत् में परिचित है। दिनलिपि पढने से जाना जाता है, कि वास्कोडीगामा के जहाज़ में बहुत सी खाने की सामग्री थी

और डोरी रस्सी, जञ्जीर, लंगर और मस्तूल आदि भी आवश्यकता से अधिक थे, किन्तु जहाज़ सजाने में इमैन्युएलने अधिक धन नहीं लगाया था। उन दिनों, पुर्तगाल में एक साधारण जहाज बना कर भारतवर्ष को भेजने में सब खर्च लगा कर ६११४० रुपया लगता था *।

पुर्तगाल से एक बार भारतवर्ष में आने और जाने के उपयोगी जहाज का खर्च ही जब इतना लगता था, तब जिस जहाज ने सबके पहिले भारतवर्ष आविष्कार करने की यात्रा की थी उसकी तय्यारी में कितना खर्च हुआ होगा वह सहज ही अनुमान किया जा सकता है। इसीसे बहुमूल्य सामग्रियों से जहाज सजाने के लिये इमैन्युएल ने उस समय अधिक धन खर्च किया था, यह बात सम्भव नहीं मालूम पडती, और किसके लिये उस समय भेंटही भेजी होगी? जब वास्कोडोगामा पुर्तगालसे चले थे तब क्या किसीने सोचा था कि किसी दिन उनका सेण्ट राफेल या सेण्ट गेबरियल भारतवर्ष के किनारे खडा होगा? जिनके न होनेसे काम चलता ही नहीं, वास्को के साथ उस समय वही चीजें थीं। कई एक आग वर्षानेवाली तोपें, उपयुक्त परिमाण गोले, बारूद, और अरबी भाषा जाननेवाले मल्लाह, यही डोगामाने साथमें लिये थे।

* The ordinary cost of construction and equipment of a single vessel intended for India, with the pay of the captain and crew for one voyage, was calculated at £ 4076 —Sir W. W Hunter's History of British India Vol I

इसके सिवा अठारह हतभाग्य राज-कैदी थे जो डिग्रे डाडोर (Degradadors) के नामसे परिचित थे। पहिले किये हुए किसी गुरुतर अपराधके लिये इन सबोंको फाँसी पर लटकाने की आज्ञा थी। किसी नये स्थान पर जहाज लगनेसे पहिले यही लोग उतारे जाते थे। स्थानकी अवस्था, देशकी अवस्था और अधिवासियोंका व्यवहार और चरित्र आदि बहुत सी बातोंकी खबर लानेके लिये यह लोग जहाज छोड कर छोटी सी नाव पर चढकर तीर पर आते थे। अनेक समय नये स्थानके नये अधिकारियोंके हाथसे मारपीट खाकर कितनोंको प्राण छोडना पडता था। जिसका भाग्य खूब अच्छा होता, परित्यक्त अवस्थामें, विदेशमें और विपदके बीचमें रह कर, वही हतभाग्य जब नये देशकी भाषा और रीति नीतिको सीखकर आगे होनेवाले आविष्कारका रास्ता सुगम कर देता, तब राजा के अनुग्रहसे वह प्राण-दण्डसे मुक्त होता था। वास्कोडीगामाके साथ भी इसीसे डिग्रे डाडोर थे। वे अफ्रिकाके किनारे पर बहु-तेरोंको छोड भी आये थे। जो हो इसी तरहसे सजकर डीगामा भारतकी खोजमें निकले थे। कोरियाकी वर्णन की हुई उपहार आदिकी बात मलवरेजकी दिनलिपिमें नहीं देख पड़ती।

भारतवर्षके रास्ते में अफ्रिकाके जितने स्थानोंमें डीगामाने जहाज बाँधा था उन सब स्थानोंके अधिवासी लोग झुण्डके झुण्ड नये दृश्यको देखनेके लिये बड़े शौकसे समुद्रके किनारे

आकर खड़े होते थे। उन लोगोंको लाल रंगकी टोपियाँ और छोटी छोटी घण्टियाँ आदि देकर विदा करते थे। वे लोग उन सब चीजों को बहुत कीमती समझकर लेते और उनके बदले में हाथीदाँत के गहने आदि देकर प्रसन्न-मन से ताली बजाते बजाते अपने अपने घर लौट जाते और सबको बुला बुला कर दिखाते और कहते थे 'देखो हम क्या लाये हैं'। किसी किसी स्थान में पीले रंग के काँचके टुकडो के बदलेमें वास्को-डीगामा बहुत से मुर्ग, बकरे और कबूतर आदि पाते थे। इसी तरह से जब वे मोम्बासा में पहुँचे, तब उन्होंने वहाँ के राजा के पास एक मूँगे की चूड़ी भेजी थी। यही उनका बहुमूल्य नजराना था।

कालीकट पहुँचने के कुछ पहिले मेलिण्डो * में आकर वास्कोडीगामा के साथ तीन हिन्दुस्थानी व्यौपारी जहाजों की मुलाक़ात हुई। इसी स्थान से एक पथ-प्रदर्शक लेने की इच्छासे, वे मेलिण्डो के मुसल्मान अधिपति के साथ मित्रता करने की चेष्टा करने लगे। उस समय मेलिण्डो एक समृद्धि-शाली नगर समझा जाता था। मेलिण्डो के मुसल्मान राजा नीले रंग के साटिनकी पोशाक पहिनकर और बहुमूल्य मुकट से सुशोभित होकर डीगामा से मिलने आये थे। उनके शरीर की रखवाली करनेवाले सिपाहियों की कमर में चाँदी के म्यानमें तेज़ धारवाली तलवार लटक रही

---

* इसका वृत्तान्त परिशिष्ट मे देखो।

थी। धनवान बन्धु के सम्मान के लिए वास्कोडीगामाने भी अपनी ओरसे मूल्यवान ही उपहार दिया था। मलवरेज़ने लिखा है, कि मेलिण्डो के अधिपति के लिये निम्न लिखित वस्तुएँ भेजी गई थीं—'एक अङ्गत्राण (बख़्तर), दो मूँगे की चूड़ियाँ, एक विलायती टोपी, दो टुकड़े चारखाने के कपड़े (Lambis), कई एक छोटे छोटे घण्टे और तीन जलपात्र'।

जमोरिन के साथ मुलाक़ात करने के दूसरे दिन प्रातःकाल वास्कोडीगामा ने चुन चुन कर सब से उत्कृष्ट सामग्रियाँ भेंट देने के लिये निकाली थीं। यदि उनके साथ, जैसा कोरिया ने लिखा है, मूल्यवान द्रव्य आदि ही होते तो वे जमोरिन के लिए बारह टुकड़े चारख़ाने के कपड़े, लाल रंग के चार हुड (Hoods), छः विलायती टोपियाँ, चार मूँगे की चूड़ियाँ, छः बर्तन और दो मधु से भरे और दो तेल से भरे, सब लेकर चार, धातु के बने हुए डब्बे, * नज़र देने के लिये न निकालते। वास्कोडीगामा ने कदाचित् यह विचारा था, कि इतनी चीज़ एक साथ

* M Taylor ने जो तालिका दी है वह कुछ स्वतन्त्र है। नीचे फेहरिस्त दी जाती है —Four pieces of scarlet cloth, six hats, four branches of coral, six almasars, a parcel of brass, a box of sugar, two barrels of oil and one of honey were selected from the stock, and, *as* may be supposed, these homely articles were laughed at —History of British India P. 217

देखने से जमोरिन अवश्य तृप्त होंगे। राज्य के नियमानुसार दो प्रधान अमात्यों के पास समाचार भेजा गया। कारण पहिले उन लोगों को बिना दिखाये कोई चीज जमोरिन के पास नहीं भेजी जाती थी। थोड़ी देर बाद, अमात्य लोग आये और वे वास्कोडीगामा का राज्य-उपहार देखते ही बड़े जोर से हँसने लगे। हँसते हँसते बोले 'इन सब चीजों का यहाँ कुछ काम नहीं है। ये सब राजा के पास नहीं भेजी जा सकतीं। मक्का के दीन दरिद्र लोग भी आकर इससे बहुत अधिक उपहार दे जाते हैं। यदि सचमुच जमोरिन के पास नजराना भेजने की ही आप की इच्छा हो तो सोना भेजिये। यह तुच्छ उपहार ज़मोरिन न ग्रहण कर सकेंगे। ये सब द्रव्य हम लोग राज-दरबार में भेज भी नहीं सकते।" राज-कर्म्मचारियों की बात सुनकर वास्को बड़े उदास हुए और गम्भीरता से बोले "हम सोने का ढेर साथ में लेकर इस देश में नहीं आये हैं और भारत में व्योपार करने का भी हमारा उद्देश्य नहीं है। हम केवल पुर्तगाल नरेश के दूत की तरह आये हैं। हमारे पास जो कुछ है उसी में से सब से उत्कृष्ट सामिग्री हमने जमोरिन के लिये निकाली है। पुर्तगाल के राजा इमैन्युएल ने ये सब चीजें नहीं भेजी, ये सब हमारी निज की हैं। अब की बार जब पुर्तगाल के दूत इस देश में आवेंगे तब राजा इमैन्युएल उनके साथ अनेक बहुमूल्य भेंट भेजेंगे। यदि राजा-

धिराज जमोरिन एक दम यह सब सामग्री ग्रहण न करेंगे, तो हम और क्या कर सकते हैं बाध्य होकर अपने जहाज पर लौट जाँयगे।" राज-अमात्यों ने यह बात कुछ न सुनी। यह सामान्य * उपहार वे लोग किसी तरह जमोरिन के पास भेजने को राजी न हुए। कई एक मूर बनिये उसी समय वहाँ आपहुँचे, उन लोगों ने भी कहा "यह सब सामान्य द्रव्य जमोरिन के उपयुक्त नहीं है।" वास्को इन लोगों की पेंचीली बातें सुनकर बड़े विचार में पड़ गये।

निरुपाय फिरङ्गी बनियों ने शेष में कहा "यदि तुम लोगों ने एक दम हमारा नजराना राजा के सामने न भेजने का ही निश्चय किया है तो हमको उनके पास ले चलो। उनसे जो कुछ कहना है सो कहकर, हम अपने जहाज पर लौट जायँगे।" वह भी न हुआ। "इसके विषय में जमोरिन के साथ सलाह करके उत्तर देंगे"—यह कहकर वे लोग चले गये। डीगामा निराश होकर उसी जगह बैठे रहे। राह देखते देखते दिन भर बीत गया, कोई भी लौटकर न आया। उनके साथियों ने 'नेटिवों' की बंशी सुनकर, नाच गायन में वह रात बिताई। डीगामा का हृदय नाना प्रकार के सन्देहों से आन्दोलित होने लगा, वे विचार करने लगे कि इस देश के लोग कैसे शठ और कैसे दगाबाज हैं।

---

* कोरिया वर्णित बहुमूल्य नजरानेकी बातको अलीक बतानेके लिये वास्कोडी-गामा की बात ही एक प्रमाण है।

दूसरे दिन सवेरे, वही मूर लोग, जो पहिले आये थे, आकर वास्कोडीगामा और उनके साथियों को राज-महल में ले चले। उस समय महल के चारो ओर शस्त्रधारी सिपाही लोग सावधानीसे पहरे पर नियुक्त थे। महलकी बगलमें, प्राय: चार घण्टे तक बाट जोहने के बाद सम्वाद आया कि वास्कोडीगामा दो साथियों से अधिक लेकर राजा से मिलने न जाने पावे गे। उन दोनो मनुष्यो का भी पहिले परिचय देना आवश्यक है। इसी आज्ञा के अनुसार वास्कोडीगामा एक दुभाषी—दो प्रकार की बोलियाँ बोलनेवाला—और एक सहयात्री—साथी—को साथ लेकर जमोरिन के दर-बार में जाने को तैयार हुए। महल के भीतर जमोरिन के निकट पहुंचने पर जमोरिन ने कहा "हमने समझा था कि आप कल हमारे साथ मिलने आवेगे, किन्तु आप नही आये।"

वास्को—"मै रास्ता चलने से बहुत थक गया था, इसी से कल हाजिर न हो सका। वह दोष क्षमा कीजिये।"

जमो०—"उस दिन आपने कहा था कि हम बड़े समृद्धि-शाली देश से आये है, किन्तु हमारे लिये तो आप कुछ भी नही लाये। जिस पत्र की आपने चर्चा की थी वह पत्र भी नही दिया।"

वास्को०—"राजाधिराज! मै आप के उपयुक्त कोई भी वस्तु साथ मे नही लासका, मै केवल भारतवर्ष की खोज

में निकला था। यह केवल आविष्कार की यात्रा है। जब पुर्तगाल का जहाज फिर इस देश में आवेगा तब आपकी उपयुक्त उपहार भी अवश्य आवेगा। पत्र तो मेरे पास ही है, आज्ञा हो तो दूँ।"

जमो०—"क्या कहा? आप आविष्कार करने आये हैं? क्या आविष्कार? पत्थर या मनुष्य? यदि मनुष्य की खोज में आये हैं तो साथ में कुछ नहीं लाये यह क्या?"

इसी तरह की बहुत सी बात-चीत के बाद वास्कोडीगामा ने राजा इमैन्युएल के पत्र निकाले। दो पत्रोंमेंसे एक अरबी भाषा में लिखा था। * उसे पढ़कर जमोरिन ने खूब खुश होकर, डीगामा को भारतवर्ष में बिना रोकटोक व्यौपार करने का अधिकार दिया और कहा "आपके देश से क्या क्या चीजें व्यौपारके लिए बाहर भेजी जाती है?

वास्को०—बहुत प्रकार के कपड़े, गेंहूँ, लोहा और पीतल वगैरः अनेक चीजों की रफ्तनी (Export) होती है।"

जमो०—"क्या आपके साथ किसी तरह की बिक्री की चीज़ है?"

---

* The letters sent by the King of Portugal, one of which was fortunately written in Arabic, were, however, honourably received by Zamorine who gave permission to DeGama to open trade,—History of British India M Taylor

वास्को०—"जी हाँ। सब तरह के माल के नमूने मेरे साथ हैं, आज्ञा हो तो जहाज पर से उतार लाऊँ।"

ज़मो०—"अच्छा, अब आप साथियोंके साथ तुरन्त जहाज़ पर जाइये। किसी निरापद स्थान में जहाज रखकर सुविधामत अपनी चीजें बेचिये।"

ज़मोरिन को भरोसा था कि फिरङ्गियों के धन से तुरन्त खजाना भर जायगा *। इसीसे उन्होंने मालाबार तीर के सब बन्दरों में वास्कोडीगामा को वाणिज्य करने का अधिकार दे दिया, वास्कोने आशातीत अधिकार पाकर अपने को भाग्यवान तो समझा, किन्तु यह सौभाग्य कितने दिन स्थिर रहा? कुछ काल बादही उसने समझलिया कि भारतमें व्यौपार करनेके लिये पहिले बल सञ्चय करना चाहिये। फिरङ्गियोंकी यह कहानी इतिहासमें खूब प्रसिद्ध है।

---

* The Zamorin of Calicut received them graciously and looked forward to an increased customs revenue from their trade —Sir, W W Hunter's British India.

पांचवां अध्याय ।

—*—

सहसा विदधीत न क्रियाम विवेकः परमापदांपदम् ।
वृणुतेहि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वमेवसम्पदः ॥

भारवी । १

उस समय अरेबिया * से ताँबा, पत्थर, छुरी, गुलाब-जल, तूतिया, पशमी कपड़े, लाल वस्त्र और पारा आदि अनेक पदार्थों की कालीकटमें आमदनी होती थी। वाणिज्यके सम्बन्धमें मालाबारके तीर पर मुसल्मानोंका एकाधिपत्य था। वे लोग सर्वदा फिरङ्गी बनियोंकी गतिविधि और कार्य्यकलाप पर लक्ष्य रखते थे। राजाके साथ वास्कोडीगामाकी जो वाणिज्य सम्बन्धी बात-चीत हुई थी, उसे उन लोगोंके कान तक पहुँचनेमें कुछ विलम्ब न हुआ।

राज-दरबारमें पुर्तगालके नाविकोंका इतना सन्मान और उन लोगों पर राजाका इतना अनुग्रह देखकर वे लोग बहुत जलने लगे। जब उन लोगोंने सुना कि फिरंगी बनियोंको केवल कालीकटमेंही नहीं बरन मालाबार तीर पर जितने

---

१ (भावार्थ) आदमीको कोई काम बिना विचार किये सहसा न करना चाहिये। अविवेक बहुत बड़ी बड़ी आपदाओंका घर है। जो लोग सोच समझ कर काम करते हैं उनके गुणों पर लुब्ध सम्पदाएं कभी उनका साथ नहीं छोड़ती।

* अरेबियाका सचित्र वृत्तान्त संयुक्तांशमें देखिये।

बन्दर हैं उन सभी बन्दरोंमें उन्हीं लोगोंकी तरह व्यौपार करनेका समान अधिकार मिला है, तब मुसल्मान व्यौपारी बड़ी चिन्तामें पड़े और भारतवर्षकी सीमासे फिरङ्गियोंको किसी प्रकार निकाल बाहर करनेकी चेष्टा करने लगे।

उस समय समुद्र-तीर पर समुद्री डाकुओंका भय अत्यन्त प्रबल था। इनके दल जलदस्यु छोटी छोटी नावों पर बैठकर समुद्रमें और तीर पर फिरा करते थे, सुविधा पातेही निश्चिन्त बनियोंको घेरकर उनकी मालटालसे भरी नावोंको लूट लेते, किसीको मार डालते और किसीको घायल करते थे। अन्तमें आग लगाकर, उन लूटी हुई नावोंको भस्म करके, अन्धकारमें समुद्रके भीतर इस तरह लुक जाते थे कि उनको खोज कर बाहर करना कठिन हो जाता था। इस लूट मारसे केवल व्यौपारियोंको ही चतिग्रस्त होना पड़ता था सो नहीं, राज-कोष भी चतिग्रस्त होता था।

उन समुद्री डाकुओंके साथ अनेक समय व्यौपारियोंके सिपाहियोंका युद्ध भी होता था। किन्तु जलयुद्धमें प्रायः समुद्री डाकूही विजय लाभ करके बनियोंको दबा देते थे। समय समझकर मुसल्मान बनियोंने राजाके अमात्योंके मनमें इन डाकुओंका भय बढ़ा दिया। धनसे क्या नहीं होता? † धनके बलसे मुसल्मान बनियोंने राज्यके प्रधान प्रधान अम-

† They therefore bribed the ministers of the King to denounce the Portuguese Admiral as a practical adventurer Dorsay

लूदारोंको समझा दिया कि फिरङ्गी लोग इस देशमें व्यौपार करने नहीं आये, इस देशको लूटने आये हैं। वे लोग व्यौपारी नहीं हैं, किन्तु समुद्री डाकू हैं। साधारण डाकुओंकी अपेक्षा अधिक सुसज्जित और भयङ्कर हैं।

दुर्भाग्यवश वास्कोडीगामाका जहाज साधारण तरहका नहीं था। जहाज़में तोपें थीं, गोला बारूद था और अन्यान्य युद्धका उपकरण प्रचुर परिमाणसे भरा था। मुसल्मान लोग इन जहाजोंको फिरङ्गियोंके लुण्ठनव्यवसायके उपयोगी बताकर राज-अमात्योंका मतिभ्रम घटाने लगे। उन लोगोंने भी सन्दिग्ध चित्तसे देखा, कि बनियोंके साथ इतने अस्त्र शस्त्र क्यों, इतनी तोप बारूद क्यों और इतना युद्धका सामानही क्यों है? उस समय फिरङ्गियोंका आचार व्यवहार कुछ सन्देह-जनक जान पड़ता था। ऐसा मालूम होता था कि वे लोग मानो मालाबार तीरको लूटनेही आये हैं। अमात्योंने स्थिर सिद्धान्त कर लिया, कि वास्कोडीगामा और उनके साथी लोग सब जलदस्यु हैं। इन लोगोंके अत्याचारसे सम्भवतः शीघ्रही मालाबारका वाणिज्य विलुप्त हो जायगा और कोई विदेशी व्यौपारी मालाबारके तीर पर पैर न रक्खेगा। यह बात तो ठीक नहीं है। राजाका खज़ाना कैसे भरेगा? नाना प्रकारकी युक्ति और तर्कके बाद, शेषमें सिद्धान्त हुआ कि फिरंगी लोग व्यौपारी नहीं, निश्चय ही जलदस्यु हैं। उन लोगोंके जहाज वाणिज्यके लिये नहीं वरन युद्धके लिये हैं। इसलिये अब उन

लोगोंको निकाल बाहर करना होगा। किन्तु उस समय ज़मोरिनके आदेशसे फिरंगी लोग अवाध वाणिज्य करनेके अधिकारी थे। राजाके अमात्य लोग मुसल्मानोंके साथ मिलकर कुछ उपाय निर्द्धारन करने लगे। अर्थकी जय हुई।

इधर वास्कोडीगामाको इन बातोंकी कुछ भी ख़बर नहीं लगी थी। ज़मोरिनकी आज्ञासे उन्होंने प्रातःकाल पालकी पर चढ़कर पैनडरम्‌की ओर यात्रा की। पैनडरम्‌के पास ही उनके जहाज बँधे थे। डीगामा पालकी पर चढ़े और उनके साथी लोग पैदल जा रहे थे। पैनडरम्‌में पहुँचतेही सूर्य्यास्त हो गया। वास्कोने उसी समय जहाज पर जानेकी इच्छासे 'भाली' से डोंगी माँगी, किन्तु उन्होंने गामाका अनुरोध न माना। लाचार होकर वास्कोडीगामा डाँटकर बोले "यदि आप अभी नाव न देंगे तो हम राजाके पास जाकर सब हाल कहेंगे। उन्हींके आदेशसे हम अपने जहाज पर जा रहे हैं।" नाराजीका भाव देखकर राजाके अमात्य लोग उन्हें समुद्रकी ओर ले चले।

राजाके कर्मचारियोंका व्यवहार देखकर वास्कोडीगामाको पहिलेहीसे सन्देह हो गया था। उन्होंने अपने भाईको खबर देनेके लिये चुपचाप अपने दलके तीन मनुष्योंको भेज दिया। क्रमशः रात अधिक होने लगी। नाव मिलीही नहीं। लाचार होकर, फिरंगियोंने एक मूर नागरिकके घरमें आश्रय लिया। राजाके कर्मचारी चले गये।

दूसरे दिन सवेरे कई एक मूर उसी स्थान पर आये; डोगामाने उनसे नाव माँगी तब उन लोगोंने आपसमें कुछ सलाह करके कहा "जो आप अपने जहाज़ोंको किनारेकी ओर निकट मँगावें तो हम आपको नाव दें।"

वास्को०—"यदि हम इस समय जहाज़ोंको निकट लानेका आदेश भेजेंगे, तो हमारे भाई कदाचित यह समझेंगे कि आप लोगोंने हमें कैद करके बलपूर्व्वक यह आदेश निकलवा लिया है और इससे वे शायद तुरन्त जहाज खोल कर पुर्तगालकी ओर यात्रा करेंगे।"

मूर०—"हम लोग यह सब कुछ नहीं मानते, आप यदि जहाजों को और निकट नहीं मँगा सकते, तो उस पार जाने की आशा परित्याग कीजिये।"

वास्को०—"क्या आप लोग नहीं जानते, कि हम महाराजकी खास आज्ञासे जहाज पर जा रहे है? हमें रोककर यदि आप लोग राजाका अपमान करेंगे, तो हम शीघ्रही राजाके निकट सब बात प्रगट करदेंगे।

मूर लोग हँस कर बोले "राजाके पास जानेकी इच्छा हो तो आप चेष्टा कर सकते है, किन्तु यह रास्ता हम लोगोंने बन्द कर दिया है। यह देखिये चारो ओरके अर्गल (हुड़के) दृढ़तासे बन्द है और बाहर सिपाही लोग सशस्त्र पहरा दे रहे है।"

अब वास्कोडीगामाने समझा कि वे साथियो सहित

मूरोंके हाथोंमें बन्दी हो गये। जहाजोंको तीरके निकट न लानेसे और उस समय मुक्त होनेका दूसरा कोई उपाय न था, डीगामाने मूरोंकी बात-चीतसे अनुमान किया कि जहाजोंके निकट आनेसे वेलोग सब मिलकर कदाचित आक्रमण करके द्रव्यादि लूट लेंगे और अन्तमें सबका प्राण-वध करके भाग जायँगे। अत: उन्होंने स्थिर किया कि हम लोगोंके भाग्यमें चाहे जो कुछ हो, हम किसी प्रकार जहाजोंको तीर पर लानेका आदेश न देंगे।

धीरे धीरे भूख प्याससे बहुतही व्याकुल होने लगे। क्षुधाकी यन्त्रणा असह्य होने लगी, किन्तु किसी प्रकारके भोजन मिलनेका उपाय नहीं। मूर लोग हँस कर बोले "मरो चाहे बचो, हमें उससे कुछ हानि लाभ नहीं है, हम लोग तुम्हें किसी तरह न छोड़ेंगे।" सभी चेष्टाएँ विफल हुईं। फिरङ्गी लोग हताशकी तरह अपने अपने अदृष्ट—भाग्य—की चिन्ता करने लगे। इतनेमें उन लोगोंके भेजे हुए एक नौकरने जहाजसे लौटकर खबर दी, कि कल सन्ध्यासेही 'निकोलस कोयेलो' नाव लेकर तीर पर इन्तजार कर रहे हैं। यह बात सुनतेही डीगामाने खूब चुपचाप एक नौकरको भेजकर जहाजों को दूर रखनेका आदेश किया। मालिकका आदेश पातेही निकोलस जहाजोंको दूर लिये जा रहे थे, किन्तु यह बात छिपी न रही। धूर्त मूरोंने शीघ्रही नावलेकर जहाजोंका पीछा किया, किन्तु जब पकड़ न सके तब हार कर लौट आये।

दूसरे दिन भी छुटकारा पानेका कोई उपाय न देख पड़ा। फिरङ्गियोंने कैदियोंकी तरह मूर नागरिकके घरमें दिन बिताया। उद्वेग, सन्देह और शङ्का उन्हें व्याकुल करने लगीं। क्रमशः रात अधिक होने लगी और शस्त्रधारी सिपाहियोंकी संख्या भी बढ़ने लगी। नङ्गी तलवार, तीक्ष्ण बाण, भारी भारी धनुष और चमचमाते हुए कुठार वगैरः लेकर सिपाहियोंने कैदियोंको घेर लिया। उन लोगोंके व्यवहार और बात-चीतसे अत्यन्त क्रोध प्रकाशित होता था। कैदियोंने समझा, कि या तो ये लोग इस गम्भीर रातमें सबको मारही डालेंगे अथवा कैदियोंकी तरह प्रत्येकको पृथक पृथक स्थानमें भेज देंगे, किन्तु ऐसा होनेसे छूटनेका कोई उपाय न रहेगा। फिरंगी लोग उस समय एकाग्र मनसे विचारने लगे, ईश्वरने यह क्या किया!

इसी तरह शत्रुओंसे घिरे सङ्कट-संकुल स्थानमें भय और उत्कण्ठासे रात भर जागते जागते प्रभात हो गया। कई एक राज-कर्मचारियोंने आकर कहा "अगर कोई व्योपारी-नाव मालाबार तीर पर आवेगी तो राज-विधि—क़ानून—के अनुसार उस परकी सब चीजें किनारे पर उतार ली जायँगी और उसके मल्लाहोंको भी तीर पर आकर बैठना होगा। जब तक सब माल किनारे पर न उतर आवेगा, तबतक किसीको नावके भीतर जानेका आदेश नहीं है।"

राज-कर्मचारियोंकी बात सुनकर डीगामाने तुरन्त अपनी

कई एक ज़रूरी चीज़ोंके लिये अपने भाईको पत्र लिखा और अन्यान्य द्रव्य आदि भी तीर पर उतारनेका आदेश दिया। उन्होंने अपने मनमें कहा कि अबकी बार धूर्त मूरोंको धूर्ततासे पराजित करेंगे।

वास्कोकी विडम्बनाके समयका शेष हो आया था। वे साथियोंके साथ छुटकारा पाकर अपने जहाजको लौटे और पहुँचतेही बची हुई चीज़ोंका उतारा जाना बन्दकर दिया। जितनी चीजें तीर पर उतारी गई थीं उनकी रक्षा करनेके लिये दो हथियारबन्द सिपाही पैनडरम्के तीर पर पहरा देने लगे।

जहाज पर पहुँचनेके कोई चार पाँच दिन बाद वास्कोडी-गामाने जमोरिनके निकट पत्र भेजकर सब समाचार जनाया और उसीके साथ यह भी लिखा, कि आपकी आज्ञासे जो सब चीज़ें जहाजसे उतारकर तीर पर रक्खी गई थीं, वह सब मूरोंने लूट ली हैं। पत्रके उत्तरमें जमोरिनने कई एक बनियों और एक प्रसिद्ध नागरिकको भेजा। बनियोंको दर भाव करके मसाला खरीद लेनेकी आज्ञा दी गई थी। जमो-रिनने यह भी आदेश दिया था, कि बदमाश मूर लोग जो फिरंगी बनियोंकी चीज़ोंके पास जायँगे तो कोई उनका सिर काट लेगा तौभी कुछ सुनाई न होगी। उस समय तक भी वास्कोको जमोरिनका कोई बुरा इरादा नहीं जान पड़ा,

जमोरिनने जिन बनियोंको भेजा था वे प्रायः एक सप्ताह

तक वहाँ ठहरे सही किन्तु कुछ भी खरीदा नहीं, केवल लूटा। मूर लोग और उस तरफ़ नहीं बढते थे, जब कभी कोई फिरगी किसी कामके लिये जहाजसे तीर पर उतरता; तो झुण्डके झुण्ड दुष्ट मूर लोग दूर खडे होकर उसके ऊपर थूक फेंकते और पुर्तगल! पुर्तगल!! कह कर चिल्लाते थे।

छठा अध्याय।

तू जान के भी अनल प्रदीप,
पतङ्ग जाता उसके समीप।
अहो! नहीं है इसमें अशुद्धि,
विनाशकाले विपरीत बुद्धि।

मैथिली शरण गुप्त।

पैन्डरम घाट पर फिरङ्गी बनियों की जो कुछ चीजें उतारी गई थीं, वह सब जमोरिन के भेजे हुए बनियों ने लूट लीं। यह देखकर वास्कोडीगामा बड़ी चिन्ता में पड़े। उन्होंने समझा, कि इस देश में इन सब चीजों की बिक्री होने की सम्भावना नहीं है और इसीलिये ओंग्रही वह सन्देशा जमोरिन के निकट भेजा।

सम्वाद पाते ही जमोरिन ने एक 'भालो' को भेजा और उससे कह दिया, कि राज सरकार के खर्च से कुली मजदूरों की पीठ पर लदवाकर वास्कोडीगामा का सब माल असबाव कालीकट में भेज दो। भालो ने वही किया, किन्तु केवल जमोरिन के ऊपर भरोसा रखकर ही वास्को चुप नहीं रहे, उन्होंने आज्ञा दी,—'दल के सभी लोग एक एक बार

कालीकट जायँ और वहाँ रहकर असबाब की रखवारी करें।'

उस समय, राज्य में बड़ी गड़बड़ फैली हुई थी। मुसल्मान बनिये ही उसके कारण थे। वे लोग जब कोई उपाय से डीगामा को निकाल बाहर न कर सके, तब एक दम अस्थिर हो गये। अन्तमें, क्रमश: जमोरिनके दरबार तक फिरङ्गी बनियो के सम्बन्ध में आलोचना उपस्थित हुई। मक्का में उस समय पुर्तगाली व्योपारियो का नाम प्रसिद्ध था। सब मूर बनियो ने, जो मक्का और अफ्रिका आदि स्थानो से व्योपार के लिये इस देश में आते थे, किसी तरह जमो-रिन को समझा दिया, कि ये फिरङ्गी जलदस्यु यदि कालो-कट में रहेंगे तो मक्का, खम्बात और अफ्रिका आदि किसी भी स्थान से अब व्योपारी लोग वाणिज्य करने के लिये मालाबार तोर पर न आवेंगे। राजा के अमलदारो ने भी मूरों को रिशवत खाकर राजासे यही बात कही। जमोरिनने भी देखा, कि सचमुच फिरङ्गियों को आश्रय देकर वाणिज्य करने का अधिकार देना अच्छा नहीं हुआ। ये लोग यदि एक बार किसी तरह से मालाबार के साथ वाणिज्य सम्बन्ध संस्थापन कर लेंगे तो सर्वनाश होगा। वाणिज्य शुल्क ही जमोरिन का प्रधान भरोसा था। जमोरिन डर गये। मुसल्मानो के साथ साथ वे भी उस समय विपद निवारण करने का उपाय ढूँढने लगे*।

---

*But in short time, as if he (The Zamorine) had been

इधर फिरङ्गी बनियों में से एक एक दो दो आदमी बराबर कालीकट जाने आने लगे। इसी तरह यहाँ के रहने वालों के साथ उनका मेल धीरें धीरे बढने लगा। अलवरेज ने अपनी दिन-लिपि में लिखा है '—

"कालीकट जाने आने के समय हिन्दुस्तान (हिन्दू) अधिवासी लोग हमलोगो के साथ खूब अच्छा वर्ताव करते थे। यदि हम लोग किसी दिन सोने वा खाने के लिये उनमें से किसी के द्वार पर अतिथि होते, तो वे लोग बड़े प्रसन्न होते थे। बहुत से लोग रोटी और मछली वेचने के लिये जहाज पर आया करते थे। हम लोग सर्वदा उनका आदर सम्मान करते थे। जब कभी कोई नागरिक अपने छोटे छोटे बच्चे वा क्रीतदास अथवा गुलामों * को साथ लेकर जहाज पर आता तो हम लोग उन्हें खाने को देते थे। हमलोग यह सब खासकर इसलिये करते थे, कि जिससें हमारा नागरिकों के साथ मेल बढे और देश में हमलोगों की प्रशंसा फैले।

भिखारियो का दल हम लोगों को बहुत ही तंग करता

---

inspired with foresight of all the calamities now approaching India by this fatal communication opened with the inhabitants of Europe, he formed various schemes to cut off Gama and his followers —W Robertson's Work Vol XII

* आगे भारतवर्षमें भी गुलामी की प्रथा प्रचलित थी। लोग दो चार रुपयोंमें ही एक नौकर खरीद लेते थे और वह जन्म भर खरीदार का गुलाम बना रहता था।

था। यहाँ तक कि कभी कभी वे लोग रात में भी आकर नाव पर उपस्थित होते थे। हम लोगों का कोई उपाय न चलता; किसी तरह उन लोगों को विदा न कर सकते। सत्य ही, इस देश की लोक-संख्या जितनी अधिक है उसके परिमाण में भोजन-सामिग्री यहाँ नहीं है। जहाज का पाल बाँधनेके लिये अनेक समय हमलोग तीर पर जाते थे। दोपहर को खानेके लिये उस समय पॉकिट में बिस्कुट रहता था। खाने के समय बालक, युवक और वृद्ध स्त्री पुरुष इतने भिक्षुक आकर जमा होजाते, कि वे हम लोगों के हाथो में से बिस्कुट छीन कर खा जाते थे। हम लोग देखते ही रह जाते और प्रायः समस्त दिन बिना खाये ही व्यतीत करते। जब जब हम लोग कालीकट जाते; तब तब छिपाकर वा दिखाकर बहुत सी चीजें बेचने को ले जाते। वह सब चीजें हमलोगो के घर की रहती थीं; सरकारी नहीं। टीन, कमीज, चूड़ी और छोटे छोटे घण्टे आदि अनेक चीजें हम लोगों के पास थीं; किन्तु उनका दाम पूरा नहीं मिलता था। हम लोग एक दम कम दाम में उन्हें बेच देते थे। कोई भी जरूरी समझकर इन चीजों को नहीं खरीदता था। बहुत दूर पुर्तगाल की चीजों के नाम से ही जो कुछ बिकता सोई बिकता था। खरीद बिक्री खतम होने पर, जब हम लोग जहाज़ पर लौटते तब हम से कोई भी कुछ न बोलता। हम लोग निर्विघ्न चले आते थे"।

जो हो, फिरङ्गियों के साथ स्थानीय अधिवासियों का सद्भाव क्रमशः बढ़ता देखकर वास्कोडीगामा ने स्थिर किया, कि अब और आशङ्का का कारण नहीं है। अब किसी एक आदमी के जिम्मे थोड़ी बहुत चीजें रखकर सब लोग स्वदेश को लौट सकते हैं। इसी मर्म्म का एक पत्र डीगामा ने ज़मोरिन के निकट लिखा भेजा और उसीके साथ उनके लिये थोड़ी सी सामग्री उपहार की तरह पर भेजी।

डिउगोडियाज़ (Deogodiaz) वास्कोडीगामा का पत्र लेकर ज़मोरिन के दरबार में गये। चार दिनतक अपेक्षा करने के बाद, ज़मोरिन ने क्रोध करके पूछा "तुम क्या चाहते हो"? प्रत्युत्तर में, डिउगोडियाज ने वास्को का पत्र निकाल कर ज़मोरिन के सामने रख दिया और कहा "हम आपके लिये कुछ भेंट भी साथ लाये हैं"।

जमोरिन यह सुनकर बड़ी डाँट से बोले ;"हम वह सब कुछ नहीं देखना चाहते, पहरेदार के पास रक्खा जाय। यदि तुम्हारे ऐडमिरेल कालीकट छोड़ना चाहते हैं, तो उनसे कहना कि हम उनसे छः सात 'जिराफ़िन' (४० पाउण्ड १० शिलिङ्ग) चाहते हैं। कालीकट का ऐसा नियम है, कि जो कोई विदेशी यहाँ आकर वास करता है तो उसको वह देना पड़ता है"।

ज़मोरिन की बात सुनकर डिउगोने सविनय सलाम करके बिदाई ली। वे जब राज-महल के बाहर निकल रहे

थे, उसी समय कई एक राज-कर्मचारी महल से निकल कर फिरङ्गियो के गोदाम में जाकर उपस्थित हुए। वहाँ पर, उस समय, माल असबाव की रखवारी के लिये केवल दो चार फिरङ्गी पहरा दे रहे थे। राज्य-कर्मचारियो ने वहाँ राज के सिपाहियों का पहरा बैठाकर आदेश किया "देखो, होशियार रहना, जिसमें इन क़ैद किये हुए फिरङ्गियों में से कोई बाहर न जाने पावे"। नगर में डुग्गी पिट गई कि कोई मनुष्य नाव लेकर फिरङ्गियो के जहाज के निकट न जाय। नियम भङ्ग के लिए कुछ खास दण्ड की भी व्यवस्था जरूर हुई होगी, किन्तु उसका कोई उल्लेख नहीं पाया जाता।

अभागे क़ैदी लोग वास्को के पास खबर भेजने को व्याकुल हो गए। किन्तु सन्देशा लेजाता कौन? और जाने के लिये नावही कौन देता? अन्त में एक बालक राजी हुआ। उस समय सन्ध्यादेवी का आगमन हो रहा था और सूर्य्य देवता दिन भर के कठिन परिश्रम की थकावट मिटाने के लियें अस्ताचल की ओर जा रहे थे। जब सन्ध्या देवी की सवारी निकल गई और सूर्य्य देवता भी अस्ताचल को पहुँच गए, तब वह विश्वासी बालक मल्लाहों की एक डोंगी लेकर रात के अँधेरे में, छिपकर फिरङ्गियो के जहाज में जा पहुँचा। दम भर में, फिरङ्गियों को समाचार मिल गया कि फिर कई मनुष्य क़ैद कर लिये गये है।

वास्कोडीगामा को गुप्त भाव से इधर उधर की खबर लेने से मालूम हुआ, कि मूर लोग फिरङ्गियो को क़ैद करके हत्या करने का जमोरिन से अनुरोध कर रहे हैं और जमोरिन भी मूर व्यौपारियों की बात में सम्मत देख पड़ते है। वास्को का हृदय काँपने लगा। धीरे धीरे दो दिन बीत गये। डीगामा कोई उपाय न कर सके। तीर पर से एक भी नाव जहाज के निकट न आई। डीगामा अपने भाग्य पर निर्भर करके, साथियों की विपद का हाल सुनकर, दु खित हृदय से सुयोग की अपेक्षा करने लगे। तीसरे दिन, चार लड़के कुछ क़ीमती पत्थर बेंचने के लिये जहाज पर आये। डीगामा ने उन लोगों का इतना आदर किया, कि चारो बालक मोहित हो गये और लौटने के समय गामा के क़ैद किये हुए साथियों के लिये पत्र ले गये।

जब नगर-वासियो ने देखा, कि फिरङ्गियों ने जमोरिन के अत्याचार से पीड़ित होकर भी उन बालकों के साथ कुछ बुरा बर्ताव नहीं किया, बल्कि उनका आदरही किया है तब फिर धीरे २ दो चार मनुष्य बेचने की चीज़ें लेकर फिरङ्गियों के जहाज़ पर आने लगे। जो कोई आता वास्कोडीगामा और उन के साथी लोग उसका हदसे जियादा आदर और यत्न करते। इसी तरह कई दिन बीत गये। जब सब के मनमें विश्वास हो गया, कि फिरङ्गी लोग किसीके साथ किसी प्रकार का अन्याय व्यवहार नहीं करेंगे अथवा किसी का किसी प्रकार से

अनिष्ट नहीं करेंगे, तब एक दिन प्राय' पचीस मनुष्य आकर जहाज़ मे उपस्थित हुए।

डीगामा ने अनुसन्धान करके जाना, कि उपस्थित दर्शकों में छः मनुष्य सम्भ्रान्त नागरिक है। उन्होने यह सुयोग हाथ से न जाने दिया। शीघ्रही उन लोगोको और उन्हीके साथ दस बारह दूसरे आदमियों को कैद कर लिया। बचे हुए भीत दर्शको ने डीगामा की आज्ञा से पत्र लेकर तीर का रास्ता पकड़ा।

मूरोने जब सुना, कि कालीकट के कई एक नामी भले आदमी कैदियोंकी तरह फिरङ्गियोके जहाज में बन्द किये गये है तब वे लोग बहुत ही घबराये। तीर पर कैद किये हुए फिरङ्गी व्योपारियो के अनिष्ट की आशङ्का कुछ कुछ दूर हुई। दो एक दिनके बाद, डीगामा ने फिर जमोरिन को लिखा, "हम लोग पुर्त्तगाल जाते हैं, किन्तु शीघ्र ही कालीकट फिर आवेंगे, तब तुम लोग देखना कि हम जलदस्यु,—समुद्रीय डाकू—है या और कुछ।"

पत्र भेजने के बाद, डीगामा का जहाज लङ्गर उठाकर कुछ दूर आगे बढा। तीर पर खड़े होकर कालीकट के दुःखित आदमी और भी घबराये। मूर बनिये देखने लगे, कि फिरङ्गी लोग अपने साथियोंको शत्रुके राज्यमें छोड़ कर चले जा रहे है और कुछ देर बाद ही शायद बहुत दूर समुद्र में नजर से बाहर हो जायेंगे।

वास्कोडीगामा का भाग्य! वह भारतवर्षकी छाया न छोड सके। हवा उठी थी, लेकिन थम गयी। थोडी दूर बढकर, वह जहाज ठहरानेको वाध्य हुए। मूरोंने देखा कि अभी भी समय है।

सातवां अध्याय।

It was the fierce enmity of the Mohommedan merchants which caused the early Europeans traders to take the attitude of invaders —H M Stephens *

जमोरिन, राज महलमें धूर्त्त सूरों और अमात्यों से घिरे हुए, शायद फिरङ्गियोंके विनाश का उपाय ढूँढने में लगे हुए थे। ऐसे समय में उनके पास खबर पहुँची, कि फिरङ्गियोंने हिकमत से कई एक नामी मनुष्योंको कैद करके पुर्त्तगाल की ओर यात्रा की है। यह सुनकर वे बहुत ही घबराये। दल बल सहित फिरङ्गियोंका नाश वा वास्को को पैरोंके तले कुचल डालनेकी जो कल्पना उन्होंने मनमें की थी, वह पल भरमें अथाह चिन्ता-सागरमें डूब गई। जमोरिन किंकर्तव्य विमूढ हो गये।

थोडी देरके बाद उन्होंने डिउगोडियाज को बुलाकर बडे आदर से उनकी खातिरदारी की और खूब मीठी बोली में कहा, "डिउगो! ऐडमिरल ने हमारे आदमियो को कैद क्यो किया है?"

डिउगो०—"महाराज! आपकी आज्ञा से हमलोग कैद में रक्खे गये हैं उसी से शायद ऐसा हुआ है।"

---

* भावार्थ—मुसल्मान व्यौपारियों के ही भयङ्कर द्वेष (दुश्मनी) के कारण यूरोपियन सौदागरों को युद्ध का उपक्रम करना पड़ा था।

जमोरिन ने, अन्त में, सब दोष अपने नौकरों के सिर पर डाल देने की चेष्टा करके कहा :—

"डिउगो! अपने बन्धु बान्धवों को लेकर तुम जहाज पर लौट जाओ। ऐडमिरल से कहना, कि वे हमारे आदमियों को छोड़ दें और हमारे राज्यमें उन्होंने जो पत्थर का स्तम्भ स्थापन करने को कहा था उसे भी उन्हीं लोगोंके साथ भेज दें। तुम तो अभी लौटकर अपने देश को नहीं जाते? अपने माल असबाब की देखा भाली करनेके लिये नियुक्त होकर इसी देश में कुछ दिन रहोगे न? जो हो, यह पत्र लेते जाओ, ऐडमिरल से कहना कि वे इसे अपने राजा के हाथमें दें।"

डिउगोडियाज जमोरिनके कहने के अनुसार लोहेकी कलमसे ताड़के पत्ते पर यह लिखने लगे —

"वास्कोडीगामा नामक एक सम्भ्रान्त व्यक्ति आपके राज्य से हमारी राजधानी में आये हैं। उनके व्यवहार से हम खूब सन्तुष्ट हुए हैं। हमारे राज्यमें दारु, चीनी और अभ्रक आदि सब प्रकार के मसाले और नाना प्रकारके बहुमूल्य पत्थर पाये जाते हैं। आप सोना, चाँदी, मूँगा और लाल रंग भेजिये।"

उपरोक्त पत्र लेकर डिउगोडियाज और उनके साथी लोग वास्कोडीगामाके पास पहुँचे। उस समय तक डीगामा अनुकूल हवा की अपेक्षा में जहाज बाँधकर बैठे हुए थे।

उन्होंने साथियोंको पाकर फिर उन्हें लौटने न दिया। कालीकट के गोदाम में जितनी चीजें थीं वह सब वहीं पड़ी रह गईं। कैदियोंके बदले में कालीकट के रईस नागरिक छोड दिये गये। किन्तु तीर पर जितनी चीजें अरक्षित अवस्था में थीं, उनके जामिन की तरह बचे हुए बारह आदमी छुटकारा न पा सके।

मन्द मन्द पवन बहने लगी। डीगामा का जहाज अधिक दूर न बढ़ सका। क्रोधसे मत्त मूरोंने ७० (सत्तर) सुसज्जित नावोंको लेकर जहाज का पीछा किया। उन नावों में भी तोपें थीं। मूर लोग, नावों में जो गोली मारने के छेद थे, उनमें पशम देकर लाल कपड़े से उनका मुँह बन्द करके धीरे धीरे आगे बढ़ने लगे। वास्कोडीगामा तुरन्त ही धूर्त्तता समझ गये। उनके जहाज़ में से बारम्बार गोलियाँ बरसने लगीं। शत्रु और अधिक देरतक न टिक सके। उसी समय बड़े जोर से आँधी उठी और वास्कोका जहाज़ बहुत दूर बढ गया। धावा करनेवाले हताश होकर फिर आये।

अनुकूल हवा में वास्कोडीगामा अपने देशको लौट रहे थे। कर्तव्य-पालन से आत्मा को जो सुख होता है, डीगामा को वह पूरी तरह से हुआ। वे और उनके साथी लोग, आनन्द में मत्त होकर, भारत महासागर की हरहराती हुई तरङ्गों को तुच्छ समझकर, बहुत दूर अपने देशकी ओर

दौड़े जा रहे थे, किन्तु राह में उनके दो जहाज़ टूट गये। उनके छोटे भाई मृत्युके मुँह में चले गये और आधे से अधिक मल्लाह समुद्र के शीतल गर्भ में सर्वदा के लिये बैठ गये।

वास्कोडीगामा, कालीकट छोड़नेके एक वर्ष बाद, लिस्बन नगर में पहुँचे। यात्रा में जितना खर्च हुआ था, उसका साठ गुना लाभ हुआ देखकर पश्चिमी व्योपारियोंमें हल-चल मच गयी। पुर्त्तगाल भर आनन्द में मत्त हो गया। घर घर जय जयकार होने लगी और राजा इमैन्युएल ने वास्कोडीगामा को ऊँची पदवीकी मर्य्यादा से विभूषित किया*। उनके शुभागमन का सम्वाद पाकर जिस समय समस्त देश आनन्द से सजीव होकर उनकी खातिरदारी का बन्दोबस्त कर रहा था, उस समय वे दुःखी हृदय से समुद्रके किनारे बालूपर बैठकर अपने छोटे भाई और वीर साथियों की मृत्यु का स्मरण करके आँसू बहा रहे थे। उन आँसुओंकी

* On Vasco De Gama the King conferred well deserved honours He was granted the use of the prefix of Dom or Lord, then but rarely conferred, he was permitted to quarter the Royal Arms with his own, he was given the office of Admiral of the Indian Seas, and in the following reign, when the importance of his voyage became more manifest, he was created Count of Vidigueira – H M. Stephens

और किसी ने न देखा और देखने का समय भी न मिला, कारण एक दिन जिस भारत में वाणिज्यके लिये पुर्त्तगाल के हजारों † जहाज़ आने जाने वाले थे, वास्कोडीगामा उसीका प्रथम बीज बोकर आये थे। उस समय पुर्त्तगाल के प्रत्येक अधिवासी के हृदय में मानो एक नई शक्ति सञ्जीवित होकर उन लोगोंको कर्म-पथमें उत्साहित कर रही थी, राजा इमैन्युएल तो उस समय आत्म-विस्मृत हो गये थे।

केवल पुर्त्तगाल वासी ही इस आविष्कार को एक टक लगा कर देखते थे ऐसा नहीं, यूरोप की सभी जातियो की आग्रह-दृष्टि-वास्कोडीगामा के ऊपर पड़ी थी। भारतवर्ष के धन सम्पद की ओर सभी की नजर थी, सभी उस समय उस सोने के स्वप्नमें मग्न थे। उसीसे भारतवर्ष में जानेका यह नया पथ आविष्कृत हुआ देखकर, यूरोप के व्योपारियोंमें एक बड़ी भारी हलचल उपस्थित हुई। भारत महासागर के स्वर्ण तीर पर जो अमूल्य निधि पड़ी थी उसको कौन अपनावेगा, उस समय पाश्चात्य जातियो के मन में यही चिन्ता प्रबल हो उठी थी। तब के युगमें जो जाति सबके पहिले जिस देशका आविष्कार करती थी उस देश के वाणिज्यमें उसी जाति का पूरा अधिकार होता था। पुर्त्तगालवाले उसीसे भारतवर्ष की ओर बड़ी लालच की नजर से देख रहे थे। एक सौ रुपये में छः सौ रुपये लाभ। इससे किसको

† See W Rebertson's Work Vol XII

लोभ न होगा:* ? जिस कोहनूर को इतने दिनों से इसैन्य एक स्वप्नमें देख रहे थे, अब उन्होंने उसे मानो बाँह पर बाँध लिया। उसकी विमल आभा से पुर्त्तगाल भर जगमग २ करने लगा। उसने यूरोप को चकित कर दिया।

लिस्बन और वीनिस दोना भिन्न भिन्न दृष्टि से भारतवर्ष की ओर देखते थे। डीगामा के लौटने के साथ ही साथ विनीस-वासियो ने समझ लिया कि हम लोगोंका भाग्य फूटा, जिस अर्थ से और जिस धन सम्पदा से हमारा देश समृद्धिशाली हुआ था वह धन रत्न अब हम लोगोंका नहीं है, अब वह सब पुर्त्तगाल का है। पुर्त्तगाल ने देखा कि अनन्त, अपार रत्नाकर के एक कोने में हम लोगोंके लिये इतना अज्ञात धन रत्न मानों इतने दिनो से लुका हुआ था। हम लोगोंने माया मन्त्रके बल से उसे प्राप्त किया है। इतने दिन ये लोग निद्रित थे, कमला के कोमल-कमल कर के स्पर्शसे निद्रा भङ्ग होनेपर, आँखें खोलकर देखा तो अमूल्य रत्नका ढेर इन लोगो के द्वारको जगमगाता हुआ देख पडा, अब उठा उठाकर लेने ही की देर रह गई।

---

* Correia estimates the king of Portugal's profit on Vasco de-Gama's expedition of six thousand per cent, although the species brought back were not of the first quality वास्कोडीगामा दो अच्छी अच्छी चीजें ले गये होते तो शायद और भी अधिक लाभ होता। ग्रन्थकार।

कविलइम ने एक दिन जिसका सूत्रपात किया था, वास्को ने अब उसी को कार्य्य में परिणत कर दिया। अब पुर्त्तगाल के सामने एक बड़ा भारी कर्म-क्षेत्र अकस्मात् उद्भासित हो गया। वह कर्म-क्षेत्र बहुत दिनोंसे पुर्त्तगालियो की तोपो की गर्ज्जनासे काँप रहा था। उसने बहुत दिन तक उसकी वाणिज्य-नौकाओंमें रत्न भर भरके उठा दिये थे और बहुत दिनोसे उसके चरणों की सेवामें नियुक्त था। पुर्त्तगालका अभाग्य, कि वह इतनी समृद्धि का रक्षा न कर सका। एक दिन जिसके व्यौपारी जहाज उत्तमाशा अन्तरीप से लेकर कैनटून नदीके तीर तक सब स्थानों के सभी बन्दरोंमें आते जाते थे, एक दिन जिस वाणिज्य की रक्षा करनेके लिये फिरङ्गी लोग अगणित दुर्ग, खाइयाँ और गोदाम वगैरः तय्यार कर रहे थे, आज भारतवर्ष में उन लोगोका अत्यन्त दरिद्रता सूचक चिन्ह मात्र बाकी रह गया है। गौरव श्री का भस्मावशेष मात्र अब पुर्त्तगाल की विजय-कहानीको सञ्जीवित किये हुए है।

एक दिन इस भारतवर्ष में पुर्त्तगाल का वाणिज्य, अवाध और असीम था। पुर्त्तगाल का प्रतिद्वन्द्वी कहने को भी कोई न था। फिरङ्गी बनिये भारतवर्ष में आकर जितनी चीजें खरीदते और बेचते उसका दाम ठहराना बेचनेवाले की इच्छा के आधीन नहीं था, किन्तु खरीदार के अनुग्रह पर निर्भर था। एक दिन वे लोग इस भारतवर्षसे जो कुछ अमूल्य, जो कुछ दुष्प्राप्य

और जो कुछ आवश्यक होता वही ले जाते। उसमें कोई चूँ भी न कर सकता था। आज उन लोगों की बात याद करने से दु:ख होता है। किन्तु पुर्त्तगाल के अध:पतन के लिये सहानुभूति नहीं होती, कारण उसने अपने पैरों में आपही कुठार मारा था। गोआ में राज्य सस्थापन कर-के, अपने विनाश का रास्ता उसने आपही साफ कर दिया था। ससार के इतिहास में ऐसी ध्वंश-कहानी विरल नहीं हैं।

आठवां अध्याय

फिरङ्गियोंका अत्याचार।

It is to be deplored that these (Portuguese) soldiers were possessed by a spirit of fanaticism against the religion of Islam which stained their victories with cruel deeds.

H M Stephens.

हिन्दुस्तानी व्यौपारी चीज़ों से भरा हुआ जहाज लेकर, फिरङ्गी व्यौपारी वास्कोडीगामा जिस साल लिस्बन लौट गये थे, उसके दूसरे ही वर्ष पुर्त्तगाल के राजा इमैन्युएल ने घोषणा की—"ईश्वर के अनुग्रह से भारतवर्ष के वाणिज्य का आविष्कार करनेवाले हम लोग है और हिन्दुस्थान के साथ व्यौपार करने के सब हक हमी लोगों को हैं, किन्तु पुर्त्तगाल का प्रत्येक अधिवासी और हमारा आज्ञा-पत्र लेकर पुर्त्तगाल में रहनेवाले अन्यान्य विदेशी लोग भी समान भाव से हिन्दुस्थान के साथ व्यौपारका नाता जोड सकते हैं।"

भाग्यवान परदेशी बनियों के ऊपर कृपा करके ही यह हुक्म दिया गया था, ऐसा नही जान पडता, क्योंकि व्यौपार करने से उन लोगो को जो कुछ लाभ होता, उसका चौथा हिस्सा पुर्त्तगाल के राज-कोष में देने की बात ठहरायी गयी थी। इससे, आक्षेप का विशेष कारण नहीं था। उन दिनो में

हिन्दुस्थान अथाह रत्नो का भण्डार समझा जाता था, उस समय हिन्दुस्थान की एक मुट्ठी धूल भी धन के लोभी विदेशी बनियोंकी आँखोंमें बड़ी कीमती जँचती थी। वास्कोडीगामा के हिन्दुस्थान में आने से यह प्रमाणित हो गया था, कि एक बार हिन्दुस्थान में आने जानेका जो खर्च लगता है, लाभ का हिस्सा उससे बहुत ज्यादा, प्रायः साठ गुना, होता है। इस अवस्था में व्योपार से मिले हुए धन का चौथा भाग राज-कोष में देकर राजा को राजी रखना कौन नहीं चाहता था ?

इतने दिनोंसे, इमैन्युएल अपनी चकित आँखों से धन माल से भरे हुए हिन्दुस्थान को केवल मोहिनी चित्र की तरह देखकर अचरज और खुशी में दिन बिता रहे थे। इस समय तक भी उन्होंने अपने मन में इस चिन्ता को स्थान देने का साहस नहीं किया था, कि एक दिन वही हिन्दुस्थान पुर्त्तगाल के सिंहासन के तले माथा झुकावेगा। लेकिन वास्कोडीगामा के स्वदेश फिर जाने के बाद ही इमैन्युएल ने प्रतिज्ञा की,—"अब हिन्दुस्थान को जीतने का सामान करना होगा। अब कल्पना को अथाह समुद्र के जल में डुबाकर, सत्यरूपी सोने के मन्दिरका द्वार खोलकर, संसार भर को धमण्ड के साथ दिखाना होगा कि हिन्दुस्थान हमारा है।"

इमैन्युएल ने और देरी नहीं की, जहाँ तक हो

सका। जल्दी ही तेरह व्यौपारी-जहाज़ सजाये गये। पुर्त्तगाल के साहसी और चतुर मल्लाह उन जहाज़ों के अध्यक्ष होकर तोप, गोला और बारूद आदि लेकर, होशियार रास्ता दिखानेवाले के इशारे से हिन्दुस्थान की ओर चले। विधर्म्मी नेटिवों को सर्वदा के अन्धकार में से उजेले में लाने के लिये सोलह धर्म्म-याजक भी, दयाके वश में होकर, हिन्दुस्थान आने को साथी हुए। इनके कप्तान पिद्रू अलवरेज (Pedru-Alveraze) जब कालीकट पहुँचे, तब ज़मोरिन बड़े ही प्रसन्न हुए। हाय रे! वाणिज्य-शुल्क की मोहिनी माया!

पिद्रू अलवरेज ने समुद्र किनारे एक गोदाम बनाकर बड़ी खुशी के साथ व्यौपार आरम्भ कर दिया। अरबी व्यौपारी तो आगे से ही फिरङ्गियो से जलते थे। पहिले मिलाप में ही, वे उन लोगोंको नहीं देख सकते थे। अब उन लोगोंने बड़ी अचरज की दृष्टि से देखा, कि फिरङ्गी पिद्रूने समुद्र में एक अरबी जहाज पकड़कर ज़मोरिन के पास भेंट —नज़र— की तरह भेज दिया और कालीकट के बन्दर में भी मुसल्मानी व्यौपारी-नावों को लूटकर उनपर का माल असबाब उठाने लगे। अरबी व्यौपारियो ने समझ लिया, कि एक हाथ में नंगी तलवार और दूसरे हाथ में क्रूश लेकर जो फिरङ्गी लोग हिन्दुस्थान मे व्यौपार करने आये है, वे ऐसे वैसे मनुष्य नहीं हैं, अतएव हम लोगो के साथ फिरङ्गियों का जीने मरने का झगड़ा उपस्थित हुआ है।

महाशक्तिशाली मुहम्मद ने भी खाली हाथों से धर्म्म का प्रचार नहीं किया था। उनके चेलों ने कृपाण और कुरान का जन्मभर का सम्बन्ध अच्छी तरह समझ लिया था। इसीसे विक्षुब्ध, विध्वस्त और दूसरे की बढती को देखकर जलनेवाले कई एक अरबोंने एक दिन पुर्त्तगाल के कालीकटवाले प्रख्यात गोदाम पर आक्रमण करके उसके कोठीवाल और ५२ नौकरो को जान से मारडाला। फिरङ्गी बनियो के तपे हुए लोहू ने उसी दिन प्रथम हिन्दुस्थान का चरण रँगकर फिरङ्गियों को भविष्यत् प्रतिष्ठा का पथ सुगम कर दिया। पिड्र इस अपमान को भूले नहीं। वे बारह अरबी जहाजों का नाश करने के लिये कोचीन की ओर चले।

घर घर का विवाद भारतवर्ष में सदा सर्वदा से प्रसिद्ध है। आगे भी कोचीन और कालीकट में सख्य सम्बन्ध नहीं था। कोचीन के राजाने विचार किया, कि जब ईश्वर ने सुयोग दिया है तब क्यों इसे योंही निकल जाने दें, अत: उन्होंने पिड्र के साथ मित्रता कर ली। पिड्र ने कल्प-वृक्ष होकर वर दिया—"हम किसी दिन जरूर तुमको जमोरिन की गद्दी पर बैठावेंगे। जब हम लोग हैं तब भय काहेका और चिन्ता हो कैसी?" कोचीन के राजा ने कालीकट के सिंहासन के सुख-स्वप्न से मोहित होकर खूब सस्ते दामो में पिड्र के हाथ अनेक प्रकार की चीजें बेच दीं

और बिना कुछ विचारे ही उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। कोचीन के तीर पर फिरङ्गी बनियों की कोठी बड़े घमण्ड से सिर उठाकर भारत महासमुद्र की लहरों का हिलोरा देखने लगी।

पिद्रू की मनोवासना पूरी हुई। कुइलन और कानानोर आदि के राजाओं ने भी पिद्रू को मित्र की तरह पाकर अपने को कृतार्थ समझा। पिद्रू अलवरेज ने बड़े अचरज से देखा, कि मालाबार तीर को छोड़कर भी भारतवर्ष में बहुत से व्यौपार करने लायक बन्दर हैं। वे मन में कहने लगे, कि ये सब एक दिन पुर्त्तगाल के ही हो जायँगे। कीमती चीजें जमा करके पुर्त्तगाल को लौटने के समय पिद्रू दुर्भाग्यवश या भूल से कोचीन के एक सम्भ्रान्त व्यक्ति को पकड़ ले गये थे। यह काम भ्रम से ही हुआ था, कारण उस समय कोचीन की कोठी में कई एक फिरङ्गी कोठीवाल की तरह पर वास करते थे।

इधर राजा इमैन्युएल भी हाथ बांध कर चुप चाप नहीं बैठे रहे, पिद्रू के अपने देश को लौटने के पहिले, जोआओडानोवा (Joaodanova) चार जहाज लेकर मालाबार तीर की ओर पिद्रू के पद-चिन्ह का अनुसरण करने को व्यस्त हुए। कालीकट के लूटे और जलाये हुए जहाजों में से धूआँ का ढेर उठकर मालाबार किनारे फिरङ्गियों का पराक्रम विघोषित करने लगा। राजा इमैन्युएल ने देखा कि

उनके सामने दो रास्ते खुले हैं—एक तो शान्ति और दूसरा समर, या तो मालावार उपकूल के बन्दरों के साथ व्यौपार का सम्बन्ध जोड़ना, नहीं तो कालीकट का नाश करके अरबी बनियों को भारतवर्ष से निकाल बाहर करके हिन्दूस्तान में एक छत्र व्यौपार फैलाना। खीष्टान इमैन्युएल अब इस चिन्ता में पड़े, कि कौन रास्ता पकड़ें, अलिभशाखा या खून की प्यासी नंगी तलवार? व्यौपार फैलाने के समय, शान्ति की सुशीतल छाया के तले खड़ा होकर कौन कब समृद्धिशाली हुआ है? इमैन्युएल कृपाण उठाकर कृतार्थ हुए, उसीसे भारत महासमुद्र के सेनापति वास्कोडीगामा ने फिर २० जहाज लेकर भारतवर्ष में पुर्त्तगाल की पताका गाड़ने के उद्देश्य से यात्रा की।

अधिक दिन नहीं, पाँच वर्ष पहिले जबकि और जहाज लेकर टेगस तीर से भारतवर्ष को चले थे, उस समय पुर्त्तगाल ने निराशा में पड़ कर इमैन्युएल के कार्य्यका भीषण प्रतिवाद किया था। बस, प्राणहारी अभियान से डीगामा का निकास करने के लिये पुर्त्तगाल के अधिवासियों ने हाथ उठा २ कर अनेक चेष्टाएँ की थीं। किन्तु अब की बार वैसा नहीं हुआ। डीगामा पुर्त्तगाल का आशीर्वाद सिर पर रखकर, बड़े घमण्ड से हँसते खेलते हिन्दुस्तान के लिये रवान. हुए। वेलेम मन्दिर ने विजय-घण्टा बजा कर वास्को का अभिनन्दन किया। वास्कोडीगामा पहिले

भारतवर्षमें आये थे आविष्कार करने। अबकी बार उन्होंने यात्रा की उसी नीले समुद्र से धुले हुए भारत की ओर को क्रूश और कृपाण की सहायता से आविष्कार की भित्ति को दृढ करनेके लिये और कमला का भरा हुआ भण्डार लूटकर पुर्त्तगालका राज्य-कोष भरनेके लिये। इसीसे उस बार देश के अर्थनाश की आशङ्का करके पुर्त्तगालवासियों ने दुःख और क्षोभ से वास्कोडीगामाको जिस प्रकार अभिशाप दिया था, इस बार उसी प्रकार हृदय भरके आशीर्वाद करने लगे। उस दिन और इस दिनमें कितना प्रभेद!

पुर्त्तगालका कर्म पथ अब लाल किरणोंसे समुज्वल हो कर सर्व साधारणको कर्तव्य-पालन में प्रबोध करने लगा। पुर्त्तगाली लोग अक्लान्त अध्यवसाय और असीम उत्साह से उसी पथ में अग्रसर होने लगे। एक हाथ वाणिज्य से और दूसरा हाथ खून से रँगा हुआ रणदेवी के कन्धे पर रखकर पुर्त्तगालकी कर्म-व्याकुलता उन्नति के मार्ग में दौडी। उस अप्रतिहत वेग के सामने, दूर अतिक्रम और बाधा व्यतिक्रम सब हर हर करता हुआ जल प्रवाह में तिनके की तरह बह गया। आगे कर्मके अनन्त यश से भरा हुआ सुवर्ण-पथ और पीछे मूर्त्तिमान उत्साह स्वरूप नरपति इमैन्युएल कर्म और वाक्यसे, कौशल और विचक्षणता से तथा दृढता और धीरज से सर्वदा पुर्त्तगाल को उत्साहित करते थे, तथापि बुद्धि और वीर्य्य, कौशल और उत्साह समस्त ही निष्फल होते

यदि कर्मके प्रकृत क्षेत्रमें खड़े होकर प्राणपण से विजय लाभ करनेके उपयुक्त कर्मचारी न रहते, किन्तु इमैन्युएल के शिक्षित नेत्र लोक-निर्वाचन में सुदक्ष थे, उसी से वास्को-डीगामा के प्रथम अभियान के बाद, चौबीस वर्ष में ही मलक्का पर्य्यन्त पुर्त्तगाल की विजय-पताका उड़ने लगी।

उस समय मलक्का * की तरह समृद्धिशाली बन्दर और नहीं था, ऐसा कहने में अत्युक्ति न होगी। एशिया के पूर्व्व और पश्चिम भागके बीच में अवस्थित होनेके कारण मलक्का एशिया के वाणिज्य का केन्द्र स्वरूप हो रहा था। मलक्का में, उस समय चीन और जापान आदि एशियाके सभी राज्यों के जहाज़ देख पड़ते थे और इस ओर मालाबार, सिंहल, कारोमण्डल, यहाँतक कि बङ्गाल के व्योपारी भी व्योपार के लिये मलक्का आते जाते थे। अधिक काल नहीं, चौबीस वर्ष के भीतर ही, पुर्त्तगाल इस मलक्का में सुप्रतिष्ठित हो गया था। केवल यही नहीं, वह गोआ और डिउ † नगर में उपनिवेश (Colony) स्थापन करके मालाबार उपकूल में एकाधिपत्य कर रहा था और लोहित सागर के पथ से मिश्र और भारतके वाणिज्य में विषम बाधा डालकर फिरङ्गियोंकी सुख समृद्धि की वृद्धि कर रहा था।

उसी परम उत्साही इमैन्युएल की द्वारा दूसरी बार प्रेरित

---

* मलक्का का संक्षिप्त हाल संयुक्तांश में देखिये। प्र० ले०

† गोआ और डिउ का हाल संयुक्तांश में देखिये। प्र० ले०

होकर, वास्कोडीगामा विक्रम संवत् १५५८ (ई० सन् १५०२) में फिर कालीकट आये। अरबोंकी आगकी शत्रुता डीगामाके हृदय में सर्वदा जाग रही थी। वे जामोरिनकी बन्धुता और अनुग्रह भूल कर, जिस कालीकट ने उनको एक दिन सादर अभिनन्दन किया था और राजाका अधिक मान प्रदर्शन किया था, उसी कालीकट पर अग्नि वर्षाने लगे। अरबों के व्यौपारी जहाज जो तीर पर थे उन सबको नष्ट कर दिया। वास्को जिस उद्देश्य से दूसरी बार भारतवर्षमें आये थे, वह थोडा बहुत सफल तो हुआ था, किन्तु उनके नाम के साथ नृशंस अत्याचारकी कहानी ऐसी संयुक्त हो गई थी कि फिरङ्गी बनियों के नाम से ही लोग अत्यन्त शङ्कित होते थे। उन लोगोंको राक्षसकी तरह समझते थे। अँगरेज वर्णित नृशंस हैदरअली भी वास्कोडीगामाकी तरह अत्याचार नहीं कर सके थे, तौभी हैदर का इतिहास लिखनेके समय अँगरेज ऐतिहासिकोंने नाक भौं सिकोडी है।

डीगामा ने बडी बहादुरी से कालीकट में पहुँचकर, वहाँके जहाजों को पकडा, साथ ही साथ आठ सौ मल्लाहों को कैद कर लिया और समुद्र के जल में मनुष्यत्व विसर्ज्जन करके, उनमें से प्रत्येकके दोनों हाथ और दोनों कान खेलकी तरह काट लिये। यदि वे इतना ही करके शान्त हो जाते, तौभी समझते कि उनके पाषाण सदृश कठोर हृदय में मनुष्यत्व का चिन्ह थोडा बहुत वर्तमान था।

किन्तु नहीं, उन्होंने वे सब कटे हाथ और रक्तसे तराबोर नाक कान इकट्ठे करके वृक्षों की सूखी पत्तियों के ढेरमें लपेटकर जमोरिन के पास भेज दिये। क्यों ? राजाके चरण कमल में उपहार की तरह। यह समझकर, कि जमोरिन भोजन बनवाकर खायेंगे *। यह कहानी सुनकर विश्वास करनेका साहस नहीं होता, हृदय काँपने लगता है, किन्तु निरपेक्ष इतिहास धर्म्म-साक्षीकी तरह इस भयङ्कर अत्याचार की कहानी की सत्यता प्रमाणित करनेके लिये सप्रमाण जीवित रहेगा। सब दिन यही कहेगा, कि यह पैशाचिक काण्ड फिरङ्गियों के ही उपयुक्त था और किसी के नहीं।

जिस समय यह पैशाचिक व्यापार घटा था, उस समय, जान पड़ता है, डीगामा भूल गये थे कि एक दिन जमोरिन के राज-महलमें अच्छे अच्छे फल मूलों से उनके जल पान की व्यवस्था की गयी थी, कालीकटके अनेक रईस, गृहस्थ और धनाढ्यों के घरमें एक दिन डीगामा ने भूख में भोजन, प्यास में पानी और आराम के लिये बिस्तरा पाया था। उसी के उपयुक्त पुरस्कार की तरह, फिरङ्गी बनियोंके श्रेष्ठ सरदार कालीकट को विध्वंश करनेके लिये उद्यत होकर, निरपराध मल्लाहों के खून से सिंचे हुए कटे हाथ, कटे कान और कटी नाकें भोजन बनाने के लिये राज-महल में भेजकर पृथ्वीपर

---

* Sir W W Hunter s British India

यशस्वी हुए थे *। हतभाग्य 'नेटिवो' वा अधिवासियो में से जो लोग बन्दी होकर विचारके लिये डोगामा के निकट लाये गये थे, कड़े कड़े काठ वा पत्थरोंके टुकड़ों से उनके दाँत तोड़कर, टूटे हुए दाँतो के टुकड़े उनके पेटमें घुसेड़ दिये गये थे। अत्याचार के सब से ऊँचे सिंहासन पर बैठकर भी, इस प्रकार के अत्याचार की प्रक्रया की कल्पना की जा सकेगी कि नहीं, इसमें सन्देह है।

सम्बाद पहुँचानेवाला एक अभागा ब्राह्मण दूरदृष्टिसे फिरङ्गियोंके मुँहमें पड़कर केवल प्राण बचानेके लिये स्वीकार करनेको वाध्य हुआ था, कि वह सन्देशा पहुँचानेवाला नहीं बल्कि गुप्त चर (खुफ़िया पुलिस) है। हतभाग्य को और दूसरा उपाय नहीं था, किन्तु उसकी यन्त्रणाका शेष यहीं नहीं हुआ। फिरङ्गी सरदारने पैशाचिकता में उन्मत्त पिशाचको भी पराजित करके, ब्राह्मणका होठ और दोनों कान काट लिये। उसके बाद एक कुत्ते का तुरन्त काटा हुआ कान उस हतभाग्य के कटे हुए कानो के स्थान पर लगाकर, उन्होंने उसको ज़मोरिनको सभामें भेज दिया। हाय ब्राह्मण! तालो पैगोडा में पाँच वर्ष पहिले तुम्हीं लोगोंने न एक दिन इस राक्षस तुल्य हिंस्र स्वभाववाले फिरङ्गी सरदारको खूब सम्मान दिखाकर गौरीके मन्दिर में चन्दन उपहार दिया

* Sir W. W Hunter s British India.

था ? राज-महल के फाटक पर तुम्हीं लोगोंने न एक दिन इस नर पिशाचके लिये सम्भ्रम सहित अपेक्षा की थी ?

जैसे सरदार उनके अनुचर लोग भी वैसे ही उपयुक्त थे। एक दिन विनसेण्टो नामक एक फिरङ्गी ने एक बड़े माननीय अरबी बनिये को बिल्कुल अकारण अथवा कल्पित कारणसे बेत मारते मारते अचेत कर दिया था; उससे भी तृप्ति न होने पर, उस बेहोश हतभाग्यके मुँहमें विष्ठा भरवाकर उसके ऊपर एक टुकड़ा सूअरका माँस रख कर मुँह बाँध दिया था। सुनते हैं, वह मन्दभाग्य अरबी बनिया कदाचित एक दिन महामान्य विन्सेन्टो सोड्रीको अपमान सूचक वचन बोला था, ऐसा उन्हें सन्देह हुआ था। कोई २ कहता है, कि अपमानजनक बात बोलनेकी बात आत्माभिमानी सोड्रीकी सम्पूर्णतया गढ़ी हुई है। इसके मूलमें जरा भी सत्य नहीं है। इतिहासवेत्ता हण्टर साहबने इसीसे कहा है:—"The Portuguese cruelties were deliberate rather than vindictive." "फिरङ्गियोंका अत्याचार प्रतिहिंसक नहीं था। उन लोगोंने इच्छामत अत्याचार किया था।"

प्रतिहिंसा परायण होकर मनुष्य जब अत्याचार करता है, तब उसके लिये क्षमा वा उत्तर रहता है। किन्तु जो मनुष्य अकारण, अनायासही, अत्याचार करनेका प्रण करके अत्याचार

करता है उसके लिये क्षमा कभी नहीं होती। वह मनुष्य मानव-विचारकी अमलमें आनेके योग्य भी नहीं है।

अमानुषिक अत्याचारके स्रोतसे समग्र मालाबारको विध्वस्त करके, डोगामा विजय ढोल पीटते पीटते पुर्त्तगालको लौट गये। इतने दिनों बाद जमोरिनको समझ पड़ा, कि फिरङ्गियोंने उनकी बन्धुताका सम्मान कहाँ तक और किस तरह रक्खा है। इतने दिनो बाद वे समझे, कि वाणिज्य-शुल्क की प्रत्याशासे उन्होंने कैसी भयङ्कर आपद् बुलायी। अब उनको याद हुआ, कि पाँच वर्ष पहिले जब मुसल्मान बनियोंने फिरङ्गियोंके विरुद्ध अभियोग किया था, मालाबारसे उन लोगोंको विताडित करनेके लिये सविनय अनुरोध किया था, उस समय उन लोगोंकी कातर प्रार्थना पर कान न देकर उन्होंने क्या ही भयङ्कर भूल की थी।

अरबी बनिये पूर्व्वापर फिरङ्गियोंसे विद्वेषही रखते थे। वे लोग इन सब भीषण अत्याचारोंका बदला लेनेके लिये उन्मत्त हो गये थे। अत्याचारसे मरे हुए अरबोंका एक एक रक्त-विन्दु रो रो कर बदला माँगने लगा। महम्मदका शानदार खड्ग काँपने लगा। क्रोधसे मत्त, क्षुब्ध, अरबोंने फिरङ्गियोंके मित्र कोचीन-राजके राज्य पर चढ़कर पुर्त्तगीज कोठीवालों को छीन लेना चाहा; किन्तु कोचीन-राजने शरणागत फिरङ्गियोंकी रक्षा करनेके लिये युद्ध, कलह और विपद आदिका कुछ भी ख़याल न किया।

इधर वास्कोडीगामाने भारत परित्याग करनेके पहिले मालाबारमें खूब रोना पीटना मचवाकर, कोचीन, कानानोर, कुइलन और काटोकालामें व्योपारका खूब दृढ बन्दोबस्त करके, दो नयी कोठियाँ बनाईं थी और राजाकी आज्ञाम कानानोरकी कोठीमें बडी भारी भारी तोपें, बारूद और गोले आदि युद्धके सामान इकट्ठे करके जमीनके नीचे गाढ़ रक्खे थे। कुछ काल बाद गोला गोली देखकर कानानोरके सोये हुए अधिवासी अकस्मात जाग उठे। कोचीन-राजने काली-कटकी दुर्दशा सुनकर भी नहीं सुनी। वे फिरङ्गी बनियोंके पैशाचिक अत्याचारकी कहानी सुनकर भी सतर्क न हुए। जमोरिनके सिंहासनने उस समय उन्हें मोह मुग्ध कर रक्खा था। नीयत खराब होनेसे कोई क्या कर सकता है?

मालाबार और अरबोंका खौलता हुआ श्राप सिर पर लेकर, फिरङ्गी डीगामा लिस्बनको तो लौटे, किन्तु उनके स्थान पर जो फिरङ्गी कर्त्ता बनकर आये, वे भी उनके पद-चिन्हका अनुसरण करनेसे विरत न हुए। यह कहानी आगे कही जायगी।

नवां अध्याय।

रोनेको चाहती हाय पर रो नहीं पाती,
हृदय-वेदना हृदय बीचही दब २ जाती।
रक्तमई है पीठ फूट की लागी गाँसी,
गले लगी विश्वासघात ईर्षा की फाँसी॥

पांडेय लोचनप्रसाद।

मालाबारको विध्वंश करके, जलाके, और अरबी बनियोंको विनष्ट करके वास्को जब लिस्बन नगरको लौटे थे, तब भारत महासागरमें वाणिज्यकी और कोचीनकी कोठीकी रक्षाके लिये विन्सेन्टो सोद्रीको रख गये थे। सोद्री कुछ दूर तक डीगामाके साथ साथ जाकर विदेशी बनियोंकी वाणिज्य-तरनी लूटने, डुबाने और जलानेके लिये फिर आये। डीगामाका यही आदेश था।

गामाका साथ छोड़कर लौटनेके समय एक दिन सवेरे सोद्रीके साथ कालीकटके जहाजोंकी मुलाक़ात हुई। कप्तान कोजम्बर कालीकटके एक जहाजी सेनापति थे। उनके बीस बड़े बड़े जहाज़ोंमेंसे तोपोंने गर्ज्जना करके फिरङ्गी सोद्रीका अभिनन्दन किया। सोद्री भी कुछ कम नहीं थे। उनके भी

जहाज़से एक तोपके गोलेने ठीक निशानेसे छूटकर, कालीकटके सेनापतिके प्रधान जहाज़का मस्तूल चूर चूर कर दिया। जमोरिनकी विजय-पताका उसी टूटे हुए मस्तूलके साथ समुद्रकी तरङ्गमें बहने लगी। पासही खोजा क़ासिम और भी कईएक रणतरी लेकर तैयार थे। उस समय कोजम्बर और क़ासिमके साथ पुर्त्तगालवालोंका घोर युद्ध उपस्थित हुआ। फिरङ्गी लोग बड़े निशानेबाज़ थे और उन लोगोंके युद्ध जहाज भी तोप, गोला और बारूदसे सुसज्जित थे। ज़मोरिनके दोनो सेनापति रणमें पीठ दिखाकर भाग निकले।

उनके भागनेके बाद क़ासिमका एक जहाज पुर्त्तगीजों यानी फिरङ्गियों ने पकड़ लिया; विजयी सोद्रीने उस जहाज़को लूटकर क़ीमती माल असबाब और कई एक सुन्दरी औरतों को लेकर प्रसन्न-मनसे प्रस्थान किया। कई एक मूर बनियोंके स्त्री, पुत्र, परिवार भी उसी जहाजमें थे। पुर्त्तगीज मल्लाहोंने उनको भी ले लिया। मुहम्मदकी मणि मुक्ता खचित एक स्वर्ण-मूर्त्ति, विजय गौरवसे पाकर सोद्री बड़े प्रसन्न हुए। रणमत्त पुर्त्तगीज सेनापतिकी रण-पिपासा तब भी ह्रास न हुई, उन्होंने तुरन्त भागनेवाले व्यवसायी जहाज़ों पर आक्रमण किया। निरुपाय मूर लोग फिरङ्गियोंके हाथसे रक्षा पानेके लिये समुद्रमें कूद पड़े। उन लोगोंके छोड़े हुए खाली जहाजोंको कालीकटके निकट खींचकर फिरङ्गी

सोद्रीने बड़ी खुशीसे उनमें आग लगा दी। ढेरके ढेर धूएँने आकाशमें उठकर कालीकटके सिंहासनके तले पुर्त्त-गीज़ोंकी विजय-कहानी विज्ञापित की। बालूमय वेलाभूमि पर खड़े होकर भयसे घबराये हुए अधिवासी—'नेटिव'—लोग देखने लगे, कि समुद्रका हृदय आगसे घिर गया है। हर तरङ्गके सङ्ग मानों एक आगका पहाड़ कालीकटको जलानेके लिये बड़ी तेज़ीसे चला आ रहा है।

प्रतिहिंसा परायण वास्कोडीगामाने तब भी भारतवर्षकी छाया परित्याग न की, वे दल बल सहित कानानोरमें सोद्री की राह देख रहे थे। सोद्रीसे युद्धकी बात सुनकर, घबराये हुए गामा कानानोरकी कोठीकी खूब रखवारी करने लगे। उन्होंने समझ लिया था, कि बिना सुरक्षित किला बनाये भारतवर्षमें पुर्त्तगीज़ोंको जगह नहीं मिलेगी।

खुला खुली क़िला बनानेकी बात-चीत ठीक न होगी, ऐसा जानकर अनेक उपायोंसे कानानोरके राजाको समझा-बुझाकर गामाने बहुतसी तोपें, उनके लायक़ गोले और बारूद कानानोरकी कोठीमें रक्खे। लेकिन युद्धका समान उस-समयके लिये भूमिमें गाड़कर रक्खा गया था।

कोटकी क़िलाबन्दी करनेके लिये मज़बूत प्राचीरकी ज़रूरत होती है। इसलिये कानानोरकी कोठीही उस समय फिरङ्गियोंका क़िला हुई। वास्कोडीगामाने कानानोरके राजाको राज़ी करके कोठीके चारों ओर शहर-पनाह

बनवानेकी आज्ञा ले ली। कानानोरके राजाने समझा, कि इसमें हानिही क्या है? कोठीमें जो पुर्त्तगीज बनिये वास करेंगे, उनकी जान मालकी रखवारीके लिये कोठी को मज़बूत दीवारसे घेरना बहुतही जरूरी है। इन लोगोंके मनमें किसी तरहका छल कपट नहीं है। ये लोग जब यहीं रहेंगे तब तो सब हमारीही प्रजा है।' अस्तु, बातकी बातमें कानानोरकी कोठीके चारों ओर पत्थरकी मज़बूत दीवारने सिर उठाया। दीवार होनेसे आने जानेका रास्ता भी चाहिये, इसलिये दीवारमें एक बड़ा भारी दृढ़ फाटक बना। डीगामाने राजाको समझाया, कि उपद्रव करनेवालोंके हाथोंसे बचनेके लिये फाटकको बन्द करनेका भी बन्दोबस्त करना ज़रूरी है। दरवाजेकी चाभी हमारेही पास रहा करेगी। हम रोज रातमें उसे बन्द करेंगे और सवेरे फिर खोल दिया करेंगे।

वास्कोडीगामा भारतवर्षमें सब दिन रहने नहीं आये थे। स्वदेशवासी जो लोग भारतवर्षमें रहे, उन्हीं सब पुर्त्तगीजोंके लिये जहां तक हो सका अच्छा बन्दोबस्त करके संवत् १५५८ ई० सन् १५०२ के एक दिन सवेरे डीगामा सदल २ ही अपने देशको रवानः हुए। फाटककी चाभी कोठीवालोंके हाथमें रक्खी गई। विन्सेन्टी सोद्रा कप्तान मेजरका पद पाकर, भारत महासागर का कर्त्तभार ग्रहण करके, कालीकटका जहां तक हो सका अनिष्ट करने और सुविधा होनेसे मक्का जानेवाले

मूर जहाज़ोंको लूटनेका अख़्तियार पाकर बडे भारी कर्म-क्षेत्रमें उतरे।

अपमानित और पीडित जमोरिन बराबर बदला लेनेका अवसर ढूँढ रहे थे। उन्होंने देखा, कि कोचीन-राज त्रिमम-पुरा फिरङ्गी बनियोंके साथ व्यौपारके सम्बन्धमें बँध गया है। यह उनसे सहा न गया। उन्होंने प्रतिज्ञा की, कि जिस प्रकारसे हो कोचीनके राज्यसे चिर शत्रु फिरङ्गियोंको निकाल बाहर करनाही होगा। मौक़ा समझकर, बनियोंने भी ज़मोरिनको उसकाना शुरु किया। फिरङ्गियोंके अत्याचार ने उन लोगोंको उन्मत्त और पागल कर दिया था। त्रिमम-पुराके सभासदोंने इस काल युद्धसे अपनेको अलग रखनेके लिये बहुत चेष्टा की, पर शरणमें आये हुए फिरङ्गियोंकी रक्षा करनेके लिये दृढ़ प्रतिज्ञ होकर, अन्तमें उन लोगोंने ज़मोरिनके साथ युद्ध करना ही अच्छा समझा।

कोपे हुए जमोरिन पचास हजार (५००००) सेना लेकर कोचीनके निकटवर्त्ती रेपेलिम द्वीपमें आ पहुँचे। उसी समय सोद्री भी कोचीन आये। फरनान्डेज और कोरिया आदि पुर्त्तगीज़ोंने उनसे विनय पूर्व्वक हज़ार अनुरोध किया, पर व्यर्थ। सोद्री अपने युद्ध-जहाज और सेना सामन्त लेकर युद्ध के पहिले ही भाग निकले। कोई कहता है, कि जमोरिन के भय से और कोई कहता है कि लोहित समुद्र में मूर व्यौपारियों के क़ीमती माल मसालों

से भरे हुए जहाजोंको लूटकर, स्वयम् धनवान होनेकी इच्छा-से हो, सोद्री कोचीन-राजकी सहायताके लिये आगे नहीं बढ़े। यहाँ तक कि अपने प्रवासी देशवासियोंको भी भूल गये।

जमोरिनके साथ त्रिममपुराका भयङ्कर युद्ध आरम्भ हुआ। ज़मोरिनके धन (घूस) के लोभमें आकर, त्रिममपुराकी सेना-मेंसे बहुतेरोंने ज़मोरिनके झण्डेके नीचे जमा होकर कोचीनके विरुद्ध हथियार उठाये। डोगामाके साथ, दो इटली निवासी भारतवर्षमें आकर, कोचीनमें पुर्त्तगीजोंके साथ वास करते थे। उन लोगोंने भी कोचीन-राजका पक्ष परित्याग करके जमोरिनका पक्ष ले लिया। त्रिममपुरा हारकर, कोचीन छोड़, निकटवर्ती विपिन-द्वीपमें भाग गये, किन्तु भागनेके समय भी शरणागत फिरङ्गियोंको नहीं भूले। ज़मोरिनने कोचीन तो ले लिया, किन्तु वे विपिन द्वीप पर अधिकार न कर सके। कोचीनमें कालीकटकी विजय-पताका उड़ने लगी।

इधर लोभी सोद्री, अपने देशवासियों और मित्र कोचीन-राजकी विपदकी बिलकुल परवाह न करके, लूट करनेकी इच्छासे, लोहित सागरमें पहुँचे थे, किन्तु धर्मकी आँखोंसे वह सहा न गया, रास्तेहीमें भयानक तूफ़ान उठा और उनके जहाज डूब गये। सोद्री और उनके भाई विशाल तरङ्गोंके साथ कहाँ बह गये सो किसीने न जाना।

वहाँ पुर्त्तगालके राज्य सिंहासन पर बैठकर डोन मैनोएल

नै (Don Manoel) विचार किया, कि जब तक जमोरिन मूर बनियोंको सहायता करते रहेंगे तब तक भारतवर्षमें पुर्त्तगालकी प्रतिष्ठा असम्भव है। जमोरिनको परास्त करके दलित न कर सकनेसे, वास्कोडीगामाने जो इतने खर्च और मिहनतसे चढ़ाई की है वह बेफ़ायदा और निष्फल हो जायगी और पुर्त्तगालकी आशा पर पानी फिर जायगा। अतएव उनकी आज्ञासे नौ खूब बडे बडे नये जहाज़ सजाये गये। अफोन्सोडा अल्बुकार्क और उनके बहनोई फ्रान्सिस्कोडी अल्बुकार्क छः जहाज लेकर भारतका माल मसाला लेनेके लिये रवानः हुए और बाकी तीन जहाजोंको लेकर अन्टोनियो डासालधाना लोहित सागरमें मक्काके वाणिज्य शासनके लिये चले।

यहाँ युद्धके अन्तमें कोचीनमें थोडी बहुत फौज रखकर, ज़मोरिन कालीकट चले आये थे। सेना भी निश्चिन्त होकर कोचीनमें रहती थी। एक दिन अकस्मात् फ्रान्सिस्कोडा आल्बुकार्क वहाँ आ पहुंचे। ज़मोरिनकी सेना फिरङ्गियोंके भयसे इतनी डर गई थी, कि फिर उन लोगोंके आनेकी खबर सुनतेही कोचीन छोडकर भाग गई।

शरणागत-रक्षक होनेके कारण फ्रासिस्कोडीने, कोचीन-राजको खूब धन्यवाद दिया और डोम मैनोएलके नामसे १०००० दश हज़ार रुपया उपहार दिया। कोचीन राज बिना मिहनतही अपने सिंहासन पर प्रतिष्ठित हुए।

त्रिमसपुराके सिंहासनपर सुप्रतिष्ठित होनेके बाद, विद्रोही शासन * का समय आया। निकटवर्ती एक द्वीपके राजा ने कोचीनके सिंहासनकी छाया परित्याग करके जमोरिनका आश्रय लिया था, इसलिये फिरङ्गियोंकी तलवार खूनकी प्यास मिटाने लगी। मनुष्योंसे भरे हुए गाँवकी अटारियाँ भस्मके स्तूपमें परिणत होकर, फिरङ्गियोंकी वीरता बताने लगीं। फिरङ्गियोंकी चोखी तलवार द्वीपान्तरमें राज-महल के भीतर पहुँच गई। राजपुरी लुट गई; राजाके रक्तने रो रो कर पृथ्वीकी पीठ पर अत्याचारका चित्र लिखा और प्राण-हीन नगर स्मशानके तुल्य हो गया। देखतेही देखते रैपेलिम फिरङ्गियोंके रण कोलाहलसे थर्रा उठा। उस स्थानमें एक दिन जमोरिनकी छावनी मुकर्रर की गई थी, इसीसे रैपेलिमके अधिवासी लोग दलके दल मारे जाने लगे। रैपे-लिमके राजकुमार बड़ी बहादुरीसे युद्ध करके पराजित हुए। उनकी सेनाके वीर सिपाहियोंने शत्रुकी तलवार और तोपोंसे निहत होकर और किसी किसीने समुद्रके पेटमें कूद कर प्राण छोड़ा। वह समृद्धिशाली स्थान क्षण भरमें भस्मके स्तूपमें परिणत होकर, ठण्ढी ठण्ढी हवाके स्पर्शसे, समुद्र-गर्भमें उड़ गया।

पुर्त्तगीजोंकी मित्रता और वीरतासे कोचीन-राज बड़े

* विद्रोही-शासन—वैरियोंको सज़ा देना।

प्रसन्न हुए। फिरङ्गियोंने यह बात नहीं समझी सो नहीं, वास्कोडीगामा एक दिन जिसका सूत्रपात कर गये थे, आज फ्रान्सिस्कोडी आलबुकर्क उसीको पूरी प्रतिष्ठा करनेका शुभ मुहूर्त खोजने लगे। उन्होंने समय जानकर, एक दिन त्रिमम्पुराके निकट प्रस्ताव किया, कि कोचीनकी रक्षा करनेके लिये एक दुर्ग बनानेकी बड़ी आवश्यकता है। दुर्ग बननेसे राजका भी भला होगा और पुर्त्तगीज़ कोठीवालोंको भी सुविधा होगी; किन्तु कोचीन-राजका विशेष भला होगा। कारण जमोरिन यदि शत्रुतावश किसी दिन कोचीन पर आक्रमण करेंगे, तोभी कुछ भयका कारण नहीं रहेगा। त्रिमम्पुरा जिन्होंने उनके अनुग्रहसे अपना राज्य-सिंहासन यहाँ तक कि जीवन भी पाया था उनका अनुरोध टाल न सके। टालनेकी उनकी इच्छा भी न हुई। ऐसे हितैषी बन्धुका किसी तरह अविश्वास करनेका उस समय कोई कारण न था। उन्होंने खुशीके साथ दुर्ग बनानेकी अनुमति दे दी और खर्च बर्च भी अपने पाससे देनेकी हामी भरी।

शीघ्रही एक अच्छा ऊँचा स्थान फिरङ्गियोंकी राय से ठीक किया गया। राजा की आज्ञा से हजारों मनुष्य दुर्ग बनाने में सहायता करने लगे। फिरङ्गियोंने भी जहाँतक हो सका चेष्टा करनेमें त्रुटि नहीं की। उन लोगोंके उत्साह और एकाग्र चेष्टा से तथा सर्वसाधारण और राजा की सहायतासे थोड़े ही समय में भारतवर्षमें फिरङ्गियोंका पहिला पत्थरका क़िला तैयार हो गया।

भारत में पुर्त्तगीजों के अधिकार जमाने की उस प्रथम सीढ़ी को फिरङ्गी लोग बड़ी आशा और बड़े आनन्द से देखने लगे। भारत महासागर की नीली, फेनदार तरङ्गों की लहरों से स्नूपमान होकर वह नया शिला-दुर्ग शक्ति और दृढ़ता तथा बुद्धि और कार्य्य कुशलता की अनलमूर्ति की तरह इमैनुयेल का पवित्र नाम लेकर "मैनोयेल" के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

रेपेलिम द्वीप का एक भाग नाश करके भी फिरङ्गी लोग शान्त न हो सके। थोड़े ही दिनों में रेपेलिम के राजकुमार के अन्यान्य नगर और ग्राम आदि पर आक्रमण करके उन लोगों ने हजारों निरपराध नगरवासियों को निहत किया। यह खबर जब नायरों के पास पहुंची तब ६००० हजार नायर लोग प्राण देने का प्रण करके फिरङ्गियों को बाधा देने के लिये तैयार हुए।

नायर जाति समर में दुर्द्धर्ष थी। उन लोगों ने बड़ी बहादुरी से फिरङ्गियों का सामना किया। समर पटु सुदृढ़ हाथों में तेजधार वाली चोखी तलवार लेकर नायर लोग स्वदेश और स्वजनोंके लिये निडर होकर लड़ने लगे † फिरङ्गी

---

† एक विख्यात इतिहासिक लिखते हैं —The report of this attack soon spread and the whole country rose in arms to expel the invaders, while above 6000 Nairs hastened to the assistance of their country men They attacked the Portuguese

बनियों को समझ पड़ा कि इस देश में भी योद्धा हैं, यहाँ भी वीरता है और इस देश में भी रणकौशल वर्त्तमान है। वे लोग ज्यादा देर तक न ठहर सके। नायरों के आक्रमण से पीछे हट कर उन लोगों ने निकटवर्ती नदी का आश्रय ग्रहण किया और अन्त में किसी तरह कोचिन में लौट कर प्राण बचाया। यदि अलबुकर्क समय पर सहायता न करते तो कदाचित् सब के सब मारे जाते।

उस दिन तो पुर्त्तगीज लोग हट गये किन्तु दूसरे दिन रात को फिर युद्ध उपस्थित हुआ। रात भर युद्ध करने के बाद फिरङ्गी लोग कई एक ग्राम जला कर खूब सवेरे कम्बलम् द्वीप में जा पहुंचे। कम्बलम् में ७०० सात सौ अधिवासियों के तप्त शोणित से दम भर में समुद्र का जल लाल हो गया। फिरङ्गियों ने उसके बाद उन्मत्त, खून के प्यासे जमोरिन से शत्रुता करने की प्रतिज्ञा की। कम्बलम् को भस्म करके वे लोग खून से तरबतर नंगी तलवारें हाथों में लेकर जमोरिन के राज्य में धँस गये और जो कुछ सामने मिला उसी को ध्वंस करने लगे।

---

with so much fury that they forced them to retreat and drove them back to the river In this retreat Durtate Pacheco had a narrow escape of being cut off , he would probably have been taken or killed, had not Albuquerqe gone to his aid

सन्मुख समर मे अकृतकार्य्य हो कर जमोरिन ने मूर बनियो के सहित कौशल का आश्रय ग्रहण किया। उन्होंने विचारा कि फिरङ्गी लोग नाना प्रकार का माल मसाला लेने के लिये ही भारत में आये हैं यदि वह सब सामग्री न पावेंगे तो आप ही मालावार को परित्याग करके चले जायँगे। इधर जमोरिन इसी का उपाय रचने लगे। किन्तु कौशली आल्बुकर्क कुइलन की रानी के राज्य में दो जहाज मसाला इकट्ठा करके जहाज में लदवाने लगे। रानी के मन्त्री लोग उनको अनेक प्रकार से सन्मानित और सन्तुष्ट करने लगे। अन्तमें कुइलन में एक कोठी बनाने की आज्ञा दे दी। कुइलन में मूरो के सिवाय और कोई विदेशी व्यौपारी नहीं था। इसीसे अलबुकर्क को सब विषयो में इतना सुभीता हुआ था।

कुइलन-राज्य से फिरङ्गियों को निकाल बाहर करने के लिये जमोरिन कुइलन की रानी से बार बार अनुरोध करने लगे, किन्तु कुछ फल न हुआ। रानी ने उत्तर दिया '— "फिरङ्गी लोग हमारे राज्य में आकर कोई अत्याचार नहीं करते, हमारी किसी प्रजा से भी छेड छाड नहीं करते फिर हम उनके साथ क्यों शत्रुता करें।" जो हो, अन्तमें फिरङ्गियों के साथ जमोरिन की एक सन्धि हुई, किन्तु फिरङ्गियो के अन्याय करने से वह सन्धि थोडे ही दिनो बाद भङ्ग हो गई।

जिस भारतवर्ष के भीतर आने की इच्छा करनेवाले अनेक

वीरों का हृदय एक दिन दूर से ही देखकर काँपने लगता था, अब वही पुर्त्तगालवासी धीरे धीरे राज्य जमाने लगे। अफोन्सोडा अलबुकर्क और उनके बहिनोई ने भारतवर्ष में पुर्त्तगीजों की प्रधानता की रक्षा और विस्तार का सम्पूर्ण आयोजन किया। इधर अण्टोनियो सालधाना ने अफ्रिका की पूर्व सीमा को लूटने और जलाने में लगी रहकर लोहित सागर से मुसलमानों के साथ मिश्र का वाणिज्य-सम्बन्ध तोड़ देने का पथ साफ किया। समुद्रतीर के बड़े बड़े जिमीदारों के साथ अलबुकर्क की सन्धि हो गई और उसमें सेन्ट-टामस खृष्टानों का पूर्व प्रचलित सुविधा सुयोग सब स्थिर रहा। कुइलन की दीवानी और फौजदारी की विधिव्यवस्था पर उस देश के खृष्टानों का सम्पूर्ण अधिकार रहा। कोचिन के शिलादुर्ग ने फिरङ्गियों की विजय घोषणा करके गर्व के साथ सिर उठाया। इसके पहिले डोगामा के शिष्य सोद्रो ने मालावार के किनारों में लूटमार करके पुर्त्तगाल की वाणिज्य तरणि परिपूर्ण कर ली थी।

अफोन्सोडोगामा अलबुकर्क, अधिक दिन भारतवर्ष में रहते, किन्तु किसी कारण वश वे शीघ्र ही देश को लौट गये। एक दिन वास्कोडीगामा ने भारत से लिसबन में पहुंच कर जैसी ख्याति और सन्मान पाया था, अलबुकर्क भी उसी तरह आँखों पर बैठा कर सम्मानित हुये थे। पाँच मन छोटे और आध मन बड़े मोती, एक बहुत बड़ा हीरे का

टुकड़ा तथा एक पारसी और एक अरबी घोड़ा और अन्यान्य द्रव्यादि उपहार की तरह लेकर जब अलबुकार्क लिसबन नगर में उपस्थित हुये तब चारों ओर आनन्द का डङ्का बजने लगा।

यहाँ जमोरिन पुर्त्तगीजों का अत्याचार भूले नहीं, अफोन्सो के भारत से जाने के बाद ही वे मालावार के अन्यान्य राजाओं से मिलकर कोचिन के पुर्त्तगीजों को निकाल बाहर करने की चेष्टा करने लगे। २८० दो सौ अस्सी युद्ध जहाज अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित हुए। ३८२ तीन सौ बयासी तोपें और सब मिलाकर प्राय ५०,००० पचास हजार सेना के सहित जमोरिन युद्ध करने चले। पुर्त्तगीजों के सरदार दुरातट पैचेको (Durtate Pacheco) ने कोचिन राज्य का सेनापतित्व ग्रहण किया। पुर्त्तगीज और देशी सब समेत उनकी सेना की संख्या केवल ५०० पाँच सौ थी।

पाँच मास तक घोर युद्ध हुआ। उसकी कहानी यहाँ पर न कही जायगी। जमोरिन ने बहुत सी पीतल की तोपें तैयार करायीं किन्तु वे पुर्त्तगीजों से युद्ध में पार न पा सके। पुर्त्तगीज बनियों की प्रतिष्ठा भारत के भाग्य में अग्नि के अक्षरों से लिखी हुई थी। उसी से मालावार के सम्मिलित राजाओं की शक्ति ने भी पुर्त्तगीजों की वीरता से हार मान ली। उन लोगों का उत्साह और उद्यम सभी व्यर्थ हुआ। शत्रु के दलके दो एक स्वजनद्रोही, खलस्वभाव, दुरात्माओं की अर्थ

(घूस) से बश में करके शत्रु के भोजन में खूब तेज विष मिलाने की चेष्टा भी शेष में निष्फल हो गई।

बारम्बार परास्त होकर जमोरिन की सेना पीछे हट गई। अन्त में १८००० उन्नीस हजार सेना के जीवन प्रण पर जमोरिन कोचिन-राज्य से सन्धि करने को बाध्य हुए। वहां लिसबन के राजसिंहासन पर बैठे पुर्त्तगालके राजाने विचार किया कि भारत के एक राजा के साथ दूसरे भारत के ही राजा का युद्ध करा देने से भारत में पुर्त्तगीजों की प्रतिष्ठा का पथ सुगम हो जायगा, और एक दल यूरुपीय सेना तैयार करके उनका अनुकरण करने के लिये यूरुपीय सेनापति के नेतृत्व में भारतवर्ष की सेनाओं को शिक्षा देने से भारत में पुर्त्तगीजों की शक्ति चिर प्रतिष्ठित और अजय हो जायगी। अतएव नरपति इमेनुयेल ने शीघ्र ही खूब बडे बडे तेरह जहाजों के साथ १२०० बारह सौ सेना भेजी। लोपो-सोआरेज उस सेना का नेतृत्व भार ग्रहण कर के भारतवर्ष में आये।

जिस बन्दर में अरबी बनियों की विशेष उन्नति देख पडने लगी, सोआरेज भारत में आकर उसी बन्दर को एक दम ध्वंश करने लगे। जितने पुर्त्तगीज बनिये आगे से कालीकट में बन्दी थे और जिन दो एक मिलनीजों ने साम्प्रति जमोरिन का आश्रय ग्रहण किया था, सोआरेज ने उन सभोंको छोड देने को कहा। जमोरिन सोआरेज के पहिले प्रस्ताव में तो

सहमत हुये, किन्तु वे शरणागत दोनों मिसलीनो को पुर्त्त-गीजों के मुंह में धर देने को प्रस्तुत न हुए। इस प्रत्युत्तर से सोआरेज के आत्माभिमान में बड़ा धक्का लगा। उन्होंने तुरन्त कालीकट पर आग बर्षाना आरम्भ कर दिया। कालीकट का ध्वंश कार्य्य दो दिन तक चलता रहा। कालीकट ध्वंश कर के पुर्त्तगीज सेनापतिने निरपराध क्रागानोर पर दृष्टि दौड़ाई। क्षण भर में क्राँगानोर और उसके बन्दर के समस्त युद्ध जहाज भस्मीभूत् हो गये। यहूदी और मूरोंके उपासना मन्दिर भी लुट गये।

बुद्धिमान, ऐश्वर्य्यशाली अरबी बनियों ने तब खूब समझ लिया कि, 'भारतवर्षमें अब हम लोगो को स्थान न मिलेगा।' भारत उपकूल के शक्तिशाली राजा लोग भी पुर्त्तगीजो के अत्याचार से उन लोगों की रक्षा करने में असमर्थ हुए। अत-एव उन लोगोंने एक दिन अपना अपना धन व माल जहाज में भर कर मिस्र का रास्ता पकड़ा। सोआरेज का शिकार निकल जाने पर उन्होंने मूरों पर आक्रमण किया और २७ सत्ताईस वाणिज्य तरणियाँ लूट लीं। २००० दो हजार मूर बनियों ने नितान्त निर्दयता से निहत हो कर समुद्र के शीतल गर्भ में स्थान लिया। चारों दिशाओ को चिता के धूएँ से छा कर लोपो-सोआरेज गौरव के साथ लिसबन को लौट गये।

अनेक अत्याचार सहन करके अनेक प्राणों की बलि देके और बहुत धन नष्ट करके अन्तमें महा समृद्धिशालिनी कालो-

काट नगरी के चिताभस्म पर खड़े होकर जमोरिन विचारने लगे कि अरबियों के बहकाने से फिरङ्गी व्यौपारियों के साथ इतने दिनों तक युद्ध करके क्या फल पाया। सोआरेज ने सङ्गतिशाली मूरों का नाशकर दिया। उन्हीं के साथ जमोरिन का सब आशा भारत महासागर की चञ्चल तरङ्ग माला की तरह उसी अगाध और असीम समुद्र में मिलगई। जमोरिन ने तो उन्हीं लोगों के साहस पर निर्भर करके आशा का सुवर्ण मन्दिर बनाया था—उन्हीं लोगों की सहायता और उन्हीं लोगों के धन से समुद्र तीर पर एकाधिपत्य लाभ किया था और उन्हीं लोगों के गौरव से गौरवान्वित होकर आप 'सामुरि' के नाम से ख्यात हुये थे। इतने दिनों बाद अब मालावार तीर का अरब के वाणिज्य का दृढ़ प्रतिष्ठित कनक सिंहासन पुर्त्तगीजों की विजय वीरता से चूरंचूर होकर विलुप्त हो गया। केवल शोक, सन्तप्त, विनष्ट गौरव और हृत सर्व्वस्व मालावार की 'हाय! हाय!' रोने की ध्वनि ने समुद्र की अनन्त तरङ्गों के हाहाकार में मिल कर पुर्त्तगीजों के अत्याचार की कहानी को जाग्रत रक्खा और फेन से परिपूर्ण वेलाभूमि ने उन घायल और कतल किये हुये भारतवासियों के गरम गरम खून से रङ्ग कर पुर्त्तगीजों के इतिहास में लाल अक्षरों से लिख रक्खा;—

"Ask me, and I shall give thee the heathen for thine inheritence, and uttermost parts of the earth for thy possession. Thou shalt break them with a rod of iron, thou shalt dash them in pieces like a potter's vessels"

दसवा अध्याय।

शूरवीर नर प्रतिदिन प्रतिछिन,

करते जाते काम बड़ा।

लगातार वे धुनमें रहते,

चाहे कारज होय कड़ा॥

हरिदास माणिक।

बाहुबलसे व्योपार फैलानेकी कहानी इतिहासमें नई नहीं है; किन्तु पुर्त्तगीज बनियोंने शक्ति-मन्त्र-द्वारा जितनी शीघ्रतासे भारतमें वाणिज्य करनेका अधिकार प्राप्त किया था और जितनी शीघ्रतासे सुप्रतिष्ठित होकर पाश्चात्य जगत्‌को विस्मित किया था, इतिहासमें उसकी तुलना सहजमें नहीं मिलती। आविष्कारके सम्मोहन युगमें पुर्त्तगालके दृढ़ प्रतिज्ञ राजाका आशीर्व्वाद, उन्नत आकांक्षाको लेकर, चञ्चल चरणोंसे चारों ओर फिर रहा था। केवल मुसल्मान व्योपारीही नहीं, भूमध्यके विदेशी व्योपारियोंने भी एक दिन बड़े २

नेत्रोंसे देखा कि, लोहित समुद्रका पथ बन्द करके महाशक्ति-शाली पुर्त्तगीज़ बनिये भीषण अग्नि पर्वतकी तरह खड़े हैं। उस पर्व्वत को लाँघकर प्रतीच्यके सुवर्ण-पथमें अग्रसर होना अब असम्भव है।

उन दिनों भारतका माल मसाला लाकर मूर लोग खम्भात् अरमुज और अदन प्रभृति स्थानोंमें आकर व्योपार करते थे और अरमुजसे भारतका माल बोझ करके विदेशी लोग, पारस्य उपसागरके रास्ते से, बसोरा नगरमें ले जाते थे। बसोरा उस समय महा समृद्धिशाली नगर था। वहां सब माल बसोरासे स्थलकी राह आरमेनिया, त्रिबिजन्ड, तातार, एलेपो, डमसकस् और भूमध्य सागरके तीरवर्ती वेरूढ नामक बन्दरमें लाया जाता था। यूरोपीय बनिये वहां पर जहाज़ लेकर अपेक्षा किया करते थे, माल पहुँचतेही तुरन्त वे लोग भारतवर्षका माल लेकर अपने देशको चले जाते थे। जितनी सामग्री अदनमें लाई जाती थी, वह सब लोहित सागरके पथसे टोरो किम्बा सुएजके निकट होकर कैरो नगरका चरण छूकर, नीलनद पार करके, अलेकज़न्ड्रियामें आती थीं। अलेकजन्ड्रिया उस समय एक बड़ा भारी बन्दर था। वहाँ विदेशी व्योपारी भारतका सोना लेनेके लिये बड़े आनन्दसे अपेक्षा किया करते थे, उसीसे वेरूढकी तरह अलेक्जन्ड्रियासे भी भारतका माल मसाला सुदूर यूरोपमें पहुँचाया जाता और वहाँ ऊँचे दरसे विक्री होता था।

कोई पुर्त्तगीज व्यौपारी उस समय तक भारतवर्षमें स्थाई रूपसे वास नहीं करता था। जो जब कार्य्यका भार लेकर, सैन्य सामन्तके सहित लूट मार करनेके उद्देश्यसे, भारतमें आता था, वह अपना कार्य्य सम्पादन करके दो चार वर्षमें अपने देशको लौट जाता था। स्वदेश भक्त पुर्त्तगीज सरदारोंमेंसे कोई कोई जब बारम्बार राजासे आवेदन करने लगे कि, भारतवर्षमें एक स्थाई प्रवासी पुर्त्तगीज सरदार रहना चाहिये, नहीं तो सब परिश्रम व्यर्थ हो जायगा, तब राजा मैन्युएल पुर्त्तगीज शक्तिको अक्षय बनानेकी व्यवस्था करने लगे।

पुर्त्तगालकी प्रतिष्ठासे वेनिसियन लोग शीघ्रही समझ गये कि उन लोगोंका व्यौपार दिन दिन कम होता जाता है। बहुत दिन पहले उन लोगोंने जिस बातकी आशङ्का की थी अब वह सत्य होने लगी। अस्तु, वे लोग अब चुप न रह सके, कैरोका राज-सिंहासन भी अब कांपने लगा। पुर्त्तगीजोंका आधिपत्य दिन दिन बढ़ता देखकर सुलतान बहुतही डरते थे, कारण भारतके धनसेही, उस समय मिश्रमें गुलछर्रे उड़ रहे थे। पुर्त्तगीज बनियोंको, एकाएकी समुद्रमें से निकल कर, भयङ्कर दैत्यकी तरह, समृद्धिको ग्रास करते हुए देखकर, सुलतानका सिंहासन जो एकदम डगमगाने लगा उसमें आश्चर्य्य ही क्या है? सुलतानने उसीसे इस आपदको दूर करनेके लिये घोषणा की कि भारतवर्षके व्यौपारमें एक मात्र उन्हींका अधिकार है और यह अधिकार आजका

नहीं सदासे है। पुर्त्तगालने बिलकुल अन्याय करके इस चिरायत अधिकारमें हस्तक्षेप किया है। पुर्त्तगाल यदि अलग न होगा तो वे शीघ्रही उसका प्रतिशोध लेंगे। मिश्र, सीरिया और पैलेसताइन वासी क्रस्तानोंके रक्तसे पृथ्वी रँग दी जायगी, सुलतान किसीको क्षमा न करेंगे। केवल यही नहीं, प्रतिहिंसाकी भयङ्कर अग्निमें क्रस्तानराजका उपासना-मन्दिर भी भस्मीभूत हो जायगा। यारुशालमका मुख्य मन्दिर चूर चूर करके, सुलतान मिश्रकी शक्तिको मिश्रके उचित अधिकारसे सुप्रतिष्ठित करेंगे।

इस भयङ्कर प्रतिशोधकी बात सुनकर धर्मके पण्डा 'पोप' बहुत घबराये, पर मैन्यूएलने अविचलित हृदयसे निःशंसय होकर पोपके निकट संवाद भेजा—"अलग होना असम्भव है।" उन्होंने यह भी कहा—"पुर्त्तगालकी शक्ति पोपका अधिकार और राज्य बढानेके लियेही नियोजित हुई है और पुर्त्तगालके वीर लोग स्वदेश और स्वजनोंको त्याग कर ईसाकी महिमाका प्रचार करनेके लियेही प्राणहारी प्रतीच्यके अभियानमें नियुक्त हुए है। प्रतीच्यमें पुर्त्तगालकी प्रतिष्ठाका और कोई कारण नहीं है। अतएव मुसलमानी शक्तिका सत्यानाश करनेके आयोजनसे मैन्युएल किसी तरह निवृत नहीं हो सकते।"

इधर जब सुलतानने देखा कि, उनके भय दिखानेसे कुछ फल न हुआ, तब वे भी युद्धके आयोजनमें लग गये।

विनिसीयोंने युद्ध-जहाज बनानेके लिये उनसे अनुरोध किया। मिश्रमें युद्ध-जहाज बनानेके लायक़ काठ नहीं था, इससे वे लोग डालमेटियाके बनसे काठ मँगाने लगे। सुलतानकी आज्ञासे भारी भारी पुराने वृक्ष कटने लगें। डालमेटियाका घना बन देखतेही देखते साफ़ हो गया। बड़े बड़े कारीगरोंने आकर सुएज बन्दरमें अस्थाई कारखाने स्थापन किये, कारण कटे हुए वृक्ष पानीमें तैराकर सुएज बन्दरमेंही लाये जाते थे। अन्तमें सुदक्ष कारीगरोंने वहाँ भारी भारी युद्ध-जहाज प्रस्तुत करना आरम्भ कर दिया।

यहाँ राजा मैन्युएल भी सुलतानके साथ युद्ध करनेका आयोजन करने लगे। उनका असीम उत्साह और कर्म्म कुशलता, मुसल्मानी वाणिज्यको सर्व्वदाके लिये विलुप्त कर देनेके लिये उन्हें व्यस्त करने लगी। मैन्युएलने देखा कि, अदन अरमुज और मलक्काको वशमें करनेके सिवाय मुसल्मानी वाणिज्यकी तीव्र धाराको रोकनेका और कोई उपाय नहीं है। अतएव शीघ्र ही 'डाम फ्राँसिस्कोडा आलमिदा' नामक एक पुर्त्तगीज, पुर्त्तगाल-राजके प्रतिनिधि बनाकर भारतवर्षमें भेजे गये। अंजद्वीप, कानानोर, कोचीन और कुइलनमें सुदृढ़ दुर्ग बनानेकी आज्ञा पाकर आल्मिदा पचीस जहाज और १५०० पन्द्रह सौ सेना लेकर लिस्बनसे रवाना हुए।

आलमिदा ही भारतके प्रथम क़ानूनी प्रतिनिधि थे। भारतमें पुर्त्तगालकी प्रतिष्ठाके लिये उन्होंने भारतवर्षमें

स्थाई भावसे रहनेका आदेश पाया था। आलमिदाने कुइ-लोआ द्वीपमें एक सुरक्षित क़िला बनाया और मोम्बासाके तीर पर उस देशके अधिवासियोंके जहाजोंको जलाकर मोम्बासा को अपने आधीन कर लिया। महलोंसे सुशोभित सुन्दर नगर क्षण भरमें भस्म-स्तूपमें परिणत होकर आल्मिदाका प्रताप जताने लगा। पुर्त्तगीज़ोंके आक्रमणसे राज-महल चूर चूर हो गया। भारत महासागरमें पहरा देनेके लिये कई एक पुर्त्तगीजोंको रखकर, आलमिदा पुर्त्तगीज़ोंका वाणिज्य केन्द्र सुरक्षित करके मालाबार उपकूलमें मुसल्मानोंका वाणिज्य नष्ट करने और भारत महासागरमें मुसल्मानी शक्तिको सर्व्वदाके लिये डुबा देनेके उद्देश्यसे निर्भय होकर आगे बढ़े।

अँज द्वीपमें पुर्त्तगीजोंका किला बना। अँजमें उन लोगों की धूलि न पड़ते पड़तेही ग्रामकी बस्ती भस्मीभूत हो गयी। तीर परके व्योपारी जहाज़ोंका अग्नि संस्कार हो गया। अँज-का विनाश करके आलमिदा कानानोर पहुँचे। वहाँ भी तुरन्त एक क़िला तैयार हो गया। विजयनगरके राजा नरसिंह राव उस समय दक्षिण भारतके सर्व्वमय कर्त्ता थे। उन्होंने पुर्त्तगालके अधिपति आलमिदा की मुलाकात से कृतार्थ होकर राजा मैन्युएलके पुत्रके साथ अपनी कन्याके विवाहका प्रस्ताव करके पुर्त्तगीजोंको सन्तुष्ट किया।

पुर्त्तगीज़ोंको धीरे धीरे सुप्रतिष्ठित होते देख कालीकट के ज़मोरिन भी सुलतानके साथ मिल गये और छिपी

रीतिसे युद्धका बन्दोबस्त होने लगा। किन्तु ब्रह्माका लिखा कौन मेट सकता है ? एक प्रवासी पुर्त्तगीजने मुसलमानी फ़कीरका वेश धरके, जमोरिनके राज्यमें घुस, युद्धका सब हाल चाल मालूम कर लिया। जमोरिनका भाग्य फूटा ! अन्तमें पुर्त्तगीज वनियोंकी प्रबल शक्तिने जमोरिनके जी जानसे लगकर किये हुए उद्यमको व्यर्थ कर दिया। पुर्त्तगीजोंका प्रताप, तीन हजार मुसल्मानोंके खूनसे समुद्रका जल रंगकर, विजय-गौरवमे गर्ज्जने लगा। मालाबारमें मुसल्मानोंका वाणिज्य दम भरमें विलुप्त हो गया। कूशने कुरान को पराजित करके अन्तमें चार वर्षके बाद खूनसे सिंची हुई पृथ्वीके नीचे आत्म-सस्थापन किया।

मूर वनिये आलमिदाके आनेके पहिले तक आशा और साहससे छातीको बाँधकर मालाबारके तीर पर व्यौपार करते थे। आगेकी बात स्मरण करके, वे लोग कदाचित तब तक यही समझते थे कि पुर्त्तगीज डाकू जैसे समय समय पर लूट मार करनेके लिये इस देशमें आते हैं वैसेही कभी कभी आया करेंगे। इस लिये डाकुओंके भयसे सर्वदाके लिए रत्नोंका घर छोड़कर भाग जाना व्यर्थ है, वरन उनके आने पर कुछ काल सतर्क रहनेसेही बनेगा। किन्तु अब उन लोगोंको समझ पड़ा कि पुर्त्तगीज लोग केवल लूटनाही नहीं चाहते, वे मुसल्मानोंको जड़से उखाड़ देना चाहते है। पुर्त्तगीजोंका वज्र क्षण भरके लिये नहीं है—वह ब्रह्माके अभिशापकी तरह

अबसे सर्वदा उन लोगोंके साथ साथ फिरा करेगा। उस अभि-शापकी अग्निसे मुसल्मान बनियोंका अब निस्तार नहीं है। अब उन लोगोंने अच्छी तरह समझ लिया कि मालाबार उपकूल उन लोगोंके लिये विपज्जनक हो गया। मालाबारमें अब अकण्टक मुसल्मानी वाणिज्य की आशा नहीं है; वरन मालाबारकी छाया तक छूनेसे पुर्त्तगीज़ोंके हाथसे लुण्ठित, विध्वस्त और विदग्ध होना पड़ेगा। अतएव वे लोग भारत उपकूलसे बहुत दूर होकर सुमात्रा और मलक्कामें आने जाने लगे। राज-प्रतिनिधि आलमिदाके समुद्री पहरेदार यह सम्बाद पातेही जहाज लेकर मूरोंका नाश करनेके लिये आगे बढ़े।

कमला जब कृपादृष्टिसे देखती है तब महा विपद्के मूल और महा सर्वनाशमें भी सौभाग्य छिपा रहता है। पुर्त्त-गीज़ लोग जब मूरोंके सुमात्रा और मलक्काके वाणिज्य-पथको भी सर्वदाके लिए बन्द करनेको तैयार हुए, तब ईश्वरसे सहा न गया। एकाएकी बड़े जोरसे आँधी उठी और उन लोगोंको रास्ता भुलाकर कुपथमें ले चली। तूफान और तरङ्गोंसे बहते बहते पुर्त्तगीज़ोंके जहाज़ एक दिन प्रातःकालके समय एक अनाविष्कृत नये तीर पर आ लगे। पुर्त्तगीज़ोंने चकित होकर देखा कि, यहाँ पर भी मूर बनियोंकी कमी नहीं है।

उतनी दूर सिंहल तक पुर्त्तगीज डाकुओंकी पहुँच देख कर भीत मूर लोग कोई तो भागने लगे और किसी किसीने

नाना प्रकारके बहुमूल्य उपहार देकर उन्हें प्रसन्न करके प्राण-रक्षा की। सिंहलके राजाने शीघ्रही पुर्त्तगीजोंके साथ मित्रता कर ली। इस नये अदृष्टपूर्व्व आकस्मिक आविष्कारसे प्रसन्न होकर आलमिदाके पुत्र डनलरेस्को कोलम्बो नगरमें क्रूस स्थापन करके कोचीनकी ओर बढ़े। रास्तेमें कुइलन-राजका विरजस् नगर जलाकर, उन्होंने पुर्त्तगीजोंके खून बहाने का बदला लिया।

जमोरिन दिन दिन बलहीन होते जाते थे। उनकी जो अप्रमेय शक्ति एक दिन दक्षिण भारतमें वाणिज्य शासन करती थी, उसको अब बराबर शिथिल और वीर्य्यहीन होते देखकर उन्होंने डिउ नगरके राजा मलिक अजको पुर्त्तगीजोंका नाश करनेके लिये निमन्त्रित किया, किन्तु पुर्त्तगीजोंके साथ शक्तिकी परीक्षामें विजय लाभ करना दुराशा समझ, मलिक अज जमोरिनके प्रस्तावका प्रत्युत्तर करनेको बाध्य हुए। इधर आलमिदाकी कर्ण-गुहामें वह शुभ आमन्त्रणाकी बात प्रति-ध्वनित हो गई। डनलरेस्कोने तुरन्त युद्धके लिये यात्रा की और गनकालोवाज नामक एक पुर्त्तगीज सेनापति राज-प्रति-निधिके पुत्रकी सहायताके लिये कालानोरसे रवान: हुए।

आलमिदा की कार्य्य कुशलता से उस समय कोचीन और कालानोर में रहनेवाले पुर्त्तगीज सरदारों में से किसी एक मनुष्यके स्वाक्षरित अनुमति-पत्रके बिना इस देश का कोई व्यौपारी आ जा नहीं सकता था।

कानानोरसे चलकर गनकालोने देखा कि पासही समुद्रमें एक मूरोंका व्यवसायी जहाज़ माल लेकर चला आ रहा है। उन्होंने उसके जानेका रास्ता रोक दिया। भीत मल्लाह लोग झटपट दिखाने लगे कि वे लोग बिना अनुमति-पत्रके नहीं जा रहे हैं, लोरेङ्कोडाब्रिटा नामक पुर्त्तगीज़ सरदारका स्वाक्षरित अनुमति-पत्र उनके साथ है। गनकालोने वह पत्र देख कर विचार किया कि यह निश्चय ही जाल है, कभी सत्य नहीं है। बस फिर क्या था, क्षण भरमें मूर बनिये कैद कर लिये गये। पुर्त्तगीज़ोंने उन निर्दोषी कैदियोंको तुरन्त जहाज़के पालमें लपेट कर अच्छी तरह सिलाई की कि जिसमें कोई निकल न जाय और उसके बाद उन लोगोंको लहराते हुए समुद्रके अथाह गर्भमें डालकर रास्ता पकड़ा !! इस अत्याचार में पुर्त्तगीज़ोंके देवताओंने भी, जान पड़ता है, गनकालोकी ओर देखकर आँखें बन्द कर ली थीं !!

इस देशके अन्धे और अविश्वासी अधिवासियोंका रक्तपात करने और उनका विनाश करनेमें पुर्त्तगीज़ोंको कुछ दोष नहीं देख पड़ता था।

कई वर्ष पहिले सरदार कैबरेल जब बारह सौ १२०० सेना लेकर भारतवर्षको चले थे, तब मैन्युएलने उनके साथ धर्म-याजक भी भेजा था। पुर्त्तगीज़ोंकी भारत पर चढ़ाई उस समय धर्म-युद्धकी तरह समझी जाती थी। पुर्त्तगालके राजाने कैबरेलसे कह दिया था कि मुसलमान और मूर्त्ति-

पूजकों—हिन्दुओं—पर सत्य २ तलवार हाथमें लेकर आक्रमण करनेके पहिले, उनके पुरोहितोंसे कहना कि वे लोग आध्यात्मिक तलवारसे अविश्वासियोंको धर्म-पथपर लानेकी चेष्ट करें, पर जो अधर्मी लोग ईसाके सेवक न होना चाहें और व्योपारका पथ रोकें तो विना सकुचाये अग्नि और क्षयागकी सहायता लेना और अधर्म्मियोंके साथ काल-युद्धमें भिड़कर उन्हें जानसे मारना।

अब तक सुसभ्य और सुमार्ज्जित यूरोप में "धर्मकी एकतामें सबका अधिकार समान है" यह मन्त्र जीवित देख पड़ता है। उसीसे जो लोग क्रूशके अधिकारी थे, क्रूशके बाहर रहने वाले उनकी छाया तक नहीं छूने पाते थे, उसीसे क्रूस को ना पसन्द करने वाले अन्धोंके साथ धर्म-युद्ध करके पुर्त्त-गीज़ लोग निठुरताकी शेष सीमा तक पहुंच गये थे।

संख्यामें पुर्त्तगीज़ लोग बहुत कम थे, इसीसे अपने उद्देश्य साधनकी सुविधाके लिये वे लोग अपने विरोधियोंको हदसे ज़ियादा दुःख देते थे।

वास्कोडीगामाने भारतवर्षमें दूसरी वार आकर भारतवासियों पर अत्याचार, पुर्त्तगीज़ोंके शासन और राज्य विस्तारकी नीतिका अवश्य पालन करना, अपना मुख्य कर्तव्य समझ लिया था। उसीसे उस समयके पुर्त्तगीज़ोंने डाकुओं और पिशाचोंकी तरह घोर अत्याचार करके इतिहासमें राक्षसोंकी पदवी पायी है, उसीसे वे लोग युद्धके अन्तमें कैद किये हुए

शत्रुओंको बड़ी निठुरतासे हत्या करते थे और शत्रुओंको दिखा कर, उन्हें तोपके मुँह पर रखके, उनके चिथड़े २ उड़ा कर, उन लोगोंको हदसे ज़ियादा कष्ट देनेमें ज़रा भी नहीं हिचकते थे, उन लोगोंके पत्थर समान कठोर हृदयमें ज़रा भी चोट नहीं लगती थी !!

पुर्त्तगीज सिपाही लोग लूट पाटमें लगकर थोडेही काल में कार्य्य सम्पन्न कर लेनेके उद्देश्यसे, भीत, काँपती हुई चिल्ला चिल्ला कर रोती हुई, शरीर परके कपड़े खुल जानेसे नङ्गा हो गई, और बालोंको खोले हुए प्राणके भयसे भागती हुई अबलाओंके दोनो हाथ, कान और नाक आदि बड़ी निर्दयतासे काट कर सोनेके कड़े, सोनेके कर्णफूल और सोनेकी नाककी नथुनी आदि बिना सकुचाये नोच लेते थे। एक मनुष्यसे माँगकर लेनेमें या एक मनुष्यकी देह परसे उतार लेनेमें जितनी देर लगती है, तलवारकी सहायतासे उतनीही देरमें पाँच मनुष्यका गहना जमा हो जाता है। इसीसे पुर्त्तगीज़ लोग तलवारसे ही काम लेते थे।

जिस भारतके धन रत्नके लोभसे, सात समुद्र और तेरह नदी पार करके, पुर्त्तगीजोंने इस देशमें आकर पहिले राजाके द्वार पर और जहाँ तहाँ आदर सम्मान पाया था, उसी देशके अधिवासियोंका हाल बतानेके समय, उस समयके पुर्त्तगीजसर-दारोंने पुर्त्तगालके राजाको लिखा था कि, "इस देशके मनुष्य कुत्ते हैं !! इनकेलिये तेज तलवारका बन्दोबस्त होना चाहिये !!"

इतिहास बीती हुई बातोंका जीवित साक्षी है। वही इतिहास काँपते हुए कण्ठसे और थरथराते हुए हृदयसे पुर्त्तगीज़ोंके पाशविक अत्याचारकी कहानी कह रहा है। आज तक डिउ उपनिवेशका निकटवर्ती छोटा सा द्वीप मिटि, "शव द्वीप" के नामसे विख्यात होकर पुर्त्तगीजोंके अत्याचा-रकी कहानीका प्रमाण देता है। मिटि क्या चिर दिन शव का ही द्वीप था? नहीं, ऐसा नहीं, सम्वत् १५८१ में जब पुर्त्तगीजोंने मिटि द्वीप पर अधिकार किया था, तब भी वहाँ बालक और जवान स्त्रियोंके खिलखिलाकर हँसनेकी आवाज सुख चैनके चिन्हकी तरह वर्तमान थी। विजयी डाकुओंने वहाँके समस्त अधिवासियोंको मारकर, उनके तप्त-शोणितसे तर पृथ्वी पर खड़े होकर, बड़ी खुशी और बड़े गौरवसे मिटि द्वीपका नामकरण किया था "शव द्वीप।!"

डिउ उपनिवेशकी दुर्दशाकी बात स्मरण करनेसे आज भी हृदय काँपने लगता है। पुर्त्तगीज़ोंकी खूनसे रँगी हुई तलवारको देखकर, अनेक छोटे छोटे बालक प्राणके भयसे रोते रोते उन लोगोंके पैरों पड़ते थे, किन्तु निर्दय पुर्त्तगीज़ पिशाचों के हृदयमें जरा भी दया नहीं उत्पन्न होती थी, वे लोग बालकों के खूनसे अपने चरणोंको रङ्ग कर बड़े प्रसन्न होते थे और कभी कभी तो बड़ी तेज धार की तलवार सबकी सब बालकोंकी माताओंके छातीमें घुसेड़ देते थे। डिउ उपनिवेश पर आक्रमण करनेके समयके सरकारी कागज़ पत्रोंमें साफ़ साफ़ लिखा है:—

"हम लोगोंने किसीको नहीं छोड़ा; यहाँ तक कि स्त्री और बालकोंकी भी हत्या की है।"

इतनी खूना-खूनी पर जिस राज्यकी प्रतिष्ठा होती है उसका सिंहासन कभी न कभी अवश्य टूटता है। तलवारकी चोटसे गला कटवा कर, जीवनकी अन्तिम घड़ीमें अभागे असहाय लोग जब भगवानकी ओर अन्तिमबार देखकर आँखें बन्द कर लेते हैं, उस समय उनका राज्य-सिंहासन भी डगमगाने लगता है—उनका शाप उस समय और नहीं सोता। बिच्छू काटनेसे जिस तरह मनुष्य चौकन्ना होकर, उसको पकड़ कर मार डालनेके लिये बड़ी बड़ी आँखोंसे पीछा करता है; उसी तरह शाप भी हत्यारोंके पीछे पीछे छिपकर आँख खोले फिरता रहता है—उनको जलाये बिना उसकी लपक कभी नहीं लौटती। भारतमें पुर्त्तगीजोंका भी राज्य बहुत दिन तक नहीं टिका। पुर्त्तगीजोंने केवल प्रतिहिंसा करनेके लिये ही अत्याचार नहीं किया था, उन लोगोंका अत्याचार प्रतिहिंसा मूलक नहीं था, वह अत्याचार अत्याचारकेही लिये था। हत्या करनेके उद्देश्यसेही हत्या की गई थी, खूनके लोभसेही खून बहाया गया था। ऐतिहासिक हण्टर साहबने इसीसे कहा है —

"The Portuguese cruelties were deliberate, rather than vindictive."

—:o:—

ग्यारहवां अध्याय।

पुर्त्तगीज़ोंका वाणिज्य।

Throughout the Middle Ages commodities of Asia were known and valued and as civilization progressed and Europe emerged from Barbarism, the demand for pepper and ginger, for spices and silks and brocades increased. H M Stephens

मिश्रके सुलतानने सङ्कल्प कर लिया था, कि जिस प्रकारसे हो भारत महासागरसे फिरङ्गियोको निकाल बाहर करके निष्कंटक होंगे। इसीसे सुएज, बन्दरमें बड़ी धूम धाम से बारह भारी भारी युद्ध जहाज प्रस्तुत हो रहे थे। बड़े चतुर और लड़ाइमें खूब पक्के सरदार लोग तुरन्त उन जहाज़ोंको लेकर फिरङ्गियोका नाश करने चले। फिरङ्गियोंने पहिले प्रमाद समझा, किन्तु जब उन लोगोने देखा कि, विनीसीय लोग हिन्दुस्तानके राजाओंको तरह नहीं है, विनीसीय सेना भारतकी सेना नही है और सुलतानकी रणतरी मुसल्मानोकी रणतरी नहीं है, तब वे खूब समझ गये कि अब "पड़े कठिन

रावणके पाले"। यह लोग बड़े लड़ाके हैं; इन लोगोंके युद्ध जहाज खूब मजबूत और हरबे हथियारोंसे सजे और नाना प्रकारकी युद्धकी सामग्रियोंसे भरे हैं। लेकिन भारतके व्यौपार ने उस समय उन लोगोंके हृदयमें नई शक्ति पैदा कर दी थी, आलमिदा उस समय पुर्त्तगाल राज्यके भारतमें रहने वाले प्रतिनिधि थे। उनके साहसी पुत्र लोरेञ्जो आलमिदाने उस समय लक्ष्मीकी कृपासे सिंहल आविस्कार करके वहाँ पुर्त्तगीजोंका व्यौपार सुप्रतिष्ठित किया था। पुर्त्तगीज़ लोग भारतके धन रत्नका लोभ न छोड़ सके। सुलतानकी भयङ्कर समर-सज्जाको देखकर भी वे लोग पीछे न हटे।

इधर सुलतान का आयोजन सम्पूर्ण होते ही, उन्होंने १५००० पन्द्रह हज़ार सैनाके साथ मीरहुसेनको पुर्त्तगीज़ोंसे युद्ध करनेके लिये भेजा * और उनसे कह दिया कि मुसल्मानोंके साथ मिलकर खूब ज़ोर शोरसे पुर्त्तगीजों पर आक्रमण करना। मीरहुसेन, जहाँ तक हो सका, बहुत जल्दी उत्तर बम्बई प्रदेशके समुद्र-तीर पर बसने वाले मुसल्मानोंके साथ मिले। यहाँ पुर्त्तगीज आलमिदाने भी समझ लिया था

---

* This was the first regular war which the Portuguese had yet met. The fleets of the Zamorin, which Pacheco and Don Lourence De Almeida had defeated, consisted of only merchant ships roughly adapted for war by the Mopla traders of Calicut [R N P.]

कि जो समस्त मुसल्मानी शक्ति सुलतानके साथ मिल जायगी तो पुर्तगीजोंका नाम पल भरमें मिट जायगा। अतएव तुरन्तही मीरहुसेनकी चाल बन्द करनेके लिये उन्होंने अपने पुत्रको भेजा और चलनेके समय उन्हें खूब समझा कर कह दिया कि, जिस प्रकारसे हो ऐसा करना कि जिसमें मीरहुसेनके साथ मुसल्मान लोग मिलने न पावें।" लोरेन्ज़ो आल्मिदा थे तो नयी ही उम्रके जवान, किन्तु वे खूब समझ गये कि मीर हुसेन जो मुसल्मानोंके साथ मिल जायगा तो सुलतानकी क्रोधाग्नि क्षण भरमें पुर्तगीजोंको भस्म कर देगी और पुर्तगीजों की समस्त आशा समुद्रके अगाध जलमें निमग्न हो जायगी। लोरेन्ज़ो वीर थे। पुर्तगीजोंके गौरव की प्रतिष्ठा उनके हृदय में जाग रही थी। इसीसे इस भयङ्कर कार्य्य का भार लेकर वे सम्मुख-समरमें अग्रसर हुए। पुर्तगीजोंका बल उस समय चारों ओर बँटा हुआ था। लोरेन्ज़ोको जब कुछ उपाय न सूझ पड़ा, तब उन्होंने स्थिर किया कि किसी प्रकारसे मीरहुसेनका रास्ता रोकें, तब तक यदि हमारे पिता सेना जुटा सकेंगे तो काम बन जायगा। उस समय इसके सिवाय और दूसरा उपाय भी नहीं था।

सुल्तानकी सेनाके साथ लोरेन्ज़ोका भयङ्कर युद्ध आरम्भ हुआ *। लोरेन्ज़ोने अपनी सेनाके सरदारोंको जमा करके एक सभा की।

---

* Don Lowrenco Almeida was unable to prevent the

इस काल-समरसे दूर रहनेके लिये उनके सरदार उनसे बारम्बार अनुरोध करने लगे, किन्तु लोरेञ्जोने उनकी बातों पर कान न दिया। सवेरे फिर युद्ध आरम्भ हुआ। मुसल्मानों के अग्नि बरसानेसे पुर्तगीज़ लोग एक दम विपर्य्यस्त होने लगे। लोरेञ्जो उस समय स्वदेशका नाम रखनेके लिये अपनी सेना को उत्साहित कर रहे थे। अकस्मात शत्रुओंकी ओरसे एक गोला आकर उनके पैर पर गिरा और वे लँगड़े हो गये *।

---

junction of the Egyptian and the Diu fleet, and on their approach to his station in the port of Chaul he boldly sailed out and attacked them His members were totally inadequate, but he had received express orders from his father to prevent the allies from coming south to Calicut to join Zamorin

* For two days the Portuguese maintained a running fight, but Don Lowrenco De Almeida soon found that he had to deal with more experienced and warlike foes than the merchant-captains he had so often defeated. His ship was surrounded on every side, his leg was broken by a cannon ball at the commencement of action, neverthless he had himself placed upon a chair at the foot of the main mast and gave his orders as cooly as ever Shortly afterwards a second cannon ball struck him in the breast and the young hero who was not yet twenty one expired [H M Stephens]

लेकिन तब भी उन्होंने हथियार नहीं छोड़ा। जिसमें उनकी सेना डर न जाय, ऐसा विचार कर वे अपने युद्ध-जहाजके मस्तूलके नीचे एक कुरसी पर बड़े कष्टसे बैठकर सेना चलाने लगे। फिर दुश्मनोंकी तोपें बडे जोरसे गर्जने लगीं और फिर गोले छूटे ; इस बार एक जलता हुआ लोहेका टुकड़ा आकर लोरेञ्जोका हृदय छेदकर चला गया ! मूर लोग मारे आनन्दके जयध्वनि करने लगे।

इसके अनन्तर मूरोंने देखतेही देखते लोरेञ्जोके जहाजमें घुसकर उसे डुबो दिया। बचे खुचे उन्नीस पुर्त्तगीज मल्लाह कैद करके कैम्बे नगरको भेज दिये गये। मीरहुसेन भी वीर थे, वे खूब धूम धामसे पुर्त्तगीज लोरेञ्जोकी अन्तिम क्रिया समाप्त करके, उनके वीरताके गाथा (record) की आलोचना करते करते आगे बढे। पराजित और विनष्ट-गौरव फिरङ्गी लोग, पुर्त्तगालके प्रतिनिधि आलमिदाके पास उनके वीर पुत्रके संग्राममें मरनेका सम्वाद लेकर, बडे दुःखी मनसे कोचीनको लौटे। सुल्तानके भीषण प्रतिशोधकी प्रतिज्ञा फिर मानो उन लोगोंके कानोंमें वज्र निनादकी तरह ध्वनित हो उठी। वीर पुत्रके लिये आँसू बहाते बहाते आल-मिदा थरथराने लगे और उन्होंने पुत्रघाती शत्रुका नाश कर-नेके लिये फिर सङ्कल्प किया।

विक्रम सम्वत् १५६२ में जब लिस्आो-दा-कानहाने लिस्बन नगर छोड़ा, तब ओलफोन्सोडी आलबुकर्क भी क. च

हाज़ और चार सौ सिपाहियोंके सरदार बनाकर भारत भेजे गये थे। चलनेके समय पुर्त्तगालके राजा मैन्युएलने उनसे गुप्तरूप से कह दिया था कि तुमही भारतवर्षके पुर्त्त-गीज़ राजप्रतिनिधि होगे—आलमिदा केवल तीनही वर्ष गवर्नर रहेंगे *।

आलबुकार्कने भारतके स्वर्ण-सिंहासनका स्वप्न देखते देखते हृदयमें बडी अभिलाषा रख कर भारतवर्षकी ओर यात्रा की। रास्तेमें पारस्य उपसागर और लोहित सागरमें फिरते २ उन्होंने अरमुज (Ormuz) में एक किला बनाया। उनके साथी पुर्त्तगीज-सेनाके अन्यान्य सरदारोंने उनके कार्य्यका खूब प्रतिवाद आरम्भ किया। उन लोगोंने कहा कि अरमुज़ में किला बनानेके लिये पुर्त्तगाल-राजकी आज्ञा नहीं है। पर आलबुकार्कने जब उन लोगोंकी बात पर कान न दिया, तब उन लोगोंने झगडा करनेका उपक्रम किया। उनमेंसे तीन मनुष्योंने, तुरन्त आलबुकार्कसे छिपकर और आलमिदाके निकट पहुंचकर, अपने प्रधान अध्यक्षके नाम नालिश की।

---

* Affonso de Albuquerque was to go to India and take out the supreme command from the Viceroy These secret orders were not communicated to the Viceroy immediately, and Albuquerque was directed not to present his commission untill Almieda had completed his years of Government • • (H M stephens,)

आलबुकर्कने समझा था कि, पुर्त्तगीज-शक्ति युद्ध करके जो कुछ जीतेगी वह सब सर्व्वदा पुर्त्तगालका ही रहेगा। इसीसे भारतवर्षमें आनेके समय उन्होंने अफ्रिकाकी पूर्व्व सीमामें पुर्त्तगीज शक्तिको सुरक्षित करके लोहित सागरके मुहाने पर के सकोटरा नामक स्थान पर अधिकार कर लिया।

सकोटराका बन्दर उस समय मुसल्मानोंके आधीन था। मुसलमानी शक्तिही उस समय सकोटरामें प्रधान समझी जाती थी और मुसल्मान नागरिकही वहाँ भरे हुए थे। मालाबारके सेंन्ट टामस (Saint Thomas) ख्रीष्टानोंकी तरह निम्न श्रेणीके थोडे बहुत एशियायी ख्रीष्टान (Asiatic Christians) भी सकोटरामें थे। आलबुकर्कने मुसल्मानों की सब भू सम्पति छीन ली। ख्रीष्टानोंको कैथलिक शाखामें दीक्षित किया और निर्व्विवाद दीक्षा ले लेनेके पुरस्कारकी तरह मुसल्मानोंका ताडवृक्षोंका बन उन्हें उपहार देकर आप व्यस्त हुए और ख्रीष्टानोको भी सन्तुष्ट किया। उसके बाद सकोटरामें एक सुदृढ किला और एक फ्रांसिस्कान उपासना-मन्दिर (Church) बनवाकर, उन्होने अरबकी ओर यात्रा की। उनकी भाईके पुत्र सकोटराके रक्षककी तरह रहकर वहाँ पुर्त्तगीज़ोंका व्यौपार फैलाने लगे। आगे कहा गया है कि, आलबुकर्कके सेनापतियोंमें कई कारणोंसे विद्रोहका भाव देख पड़ता था। वह सब असुविधा रहते भी आलबु-

कुर्कने कट्टा (Katta) और मस्कट (Muskat) को गोलोंकी वर्षासे चूर चूर कर दिया।

पारस्य उपसागरके प्रवेश-मार्गमे जितने छोटे छोटे बन्दर थे, आलबुकर्कने उन सभोंको अपने अधिकारमें करना चाहा, क्योंकि ऐसा होनेसे एक ओर सकोटराका दुर्ग और दूसरी ओर अरमुज का दुर्ग दोनों जागते पहरेदारोंकी तरह पुर्त्तगीजोंके वाणिज्य-पथको बहुत दूर तक रक्षा करते। कुछ दिनों बाद वैसाही हुआ। अरमुज़के राजाने अन्तमें आलबुकर्कके दिये हुए सन्धि-पत्रकी शर्तोंसे सम्मत होकर एक सन्धि-पत्र लिख दिया। उसमें उन्होंने लिखा कि 'प्रधान सेनापतिने अपनी शक्तिके प्रभावसे हमको अरमुज़के सिंहासन परसे उतार दिया था, हमने अब उन्हींसे सब अधिकार फिर प्राप्त किया है। उनके आधीन जितनी सेना है उसका वेतन हम प्रतिवर्ष पुर्त्तगाल-राजका राज-कर की तरह पर दिया करेंगे।' सन्धिपत्र पाकर आलबुकर्ककी अभिलाषा पूरी हुई। पुर्त्तगीजोंके इतिहासमें एक नया चित्र लिखा गया।

यह पहिलेही कहा गया है कि आलबुकर्कके तीन विद्रोही सेनापतियोंने आलमिदाके पास मुकदमा खड़ा किया था। उन लोगोंकी बात पर निर्भर होकर आलमिदाने अरमुज़के राजा सेमसुद्दीन और वहाँके शासनकर्ता खोजाअतरके निकट लिख भेजा कि 'राजाके नामसे आलबुकर्कने जो कुछ अत्या-

चार किया है उसके लिये उन्हें पूरी सजा भोगनी पड़ेगी।' खोजाअतरके पास आलमिदा का पत्र देखते ही आलबुकर्क समझ गये कि आलमिदाके साथ मुलाकात होनेसे उनकी कैसी पूजा होगी। किन्तु वे घबराये नहीं, राजा मैन्युएल ने गुप्तरूप से भारतका शासन-भार उन्हींके हाथोंमें सौंप दिया था इसीसे आलबुकर्कके हृदयमें साहस था। जो हो आलबुकर्कने अपनी इच्छाके अनुसार अरमुजमें किला बनाया, वहाँके राजाको अपनी सुविधाके सन्धि-सूत्रमें बाँध लिया और उस देशमें पुर्त्तगालकी शक्ति सुप्रतिष्ठित करके वे भारतवर्षमें पहुँचे।

आलमिदा तब तक भी पुत्रका शोक नहीं भूले थे। उनके निर्भय वीर पुत्रकी वीरोपमम मृत्यु हर घड़ी आलमिदाको पुत्रघाती शत्रुको उचित दण्ड देनेके लिये नियुक्त करना चाहती थी। आलमिदा जिस समय डिउ नगर पर आक्रमण करके मुसल्मानोंको सर्वदाके लिये भारतवर्षसे निकाल बाहर करनेका आयोजन कर रहे थे, आलबुकर्क भी उसी समय भारतमें आकर उपस्थित हुए। उन्होंने आतेही आलमिदाके साथ मुलाकात की और राजा मैन्युएलकी आज्ञा सुनाकर हिन्दुस्थानका शासन-भार माँगा, यहाँ तक कि अपना 'वेलेम' जहाज दिखाकर कहा कि 'आलमिदाके लिये' वेलेम में चढ़कर पुर्त्तगालको लौट जाना ही अच्छा होगा। राजा मैन्युएल उस समय सात समुद्र और तेरह नदीके पार थे।

आलबुकर्ककी जवानी बात पर क्या आलमिदा भारतवर्षकी आशा छोड सकते थे * ? उन्होंने पुर्त्तगाल-राजके निकट अर्जी भेजी और आलबुकर्ककी बदमाशी और राजाकी आज्ञा को न माननेका अभियोग चलाया। क्या जाने, यदि इतना करके भी हिन्दुस्थानसे प्रस्थान करना पडे, यदि आलबुकर्कही सचमुच भारतवर्षके शासनकर्त्ता हो जायँ, आलमिदा यही सोचकर अनेक उपायोंसे खूब धन रत्न लूटने लगे। इतने समय तक भारतवर्षमें रहकर कौन मूर्ख खाली हाथों से अपनी झोंपडीमें बिलकुल भिखारीके वेशमें लौट सकता है? सोखनेके लिये अथाह सुधा-समुद्र सामने रहते कौन मूढ प्याससे छटपटाते हुए सूखे कण्ठसे फिर मरुभूमि का आश्रय लेता है? आलमिदा मूर्ख नहीं थे, इसीसे उन्होंने भी वैसा नहीं किया।

मीरहुसेन उस समय डिउ नगरमें अपेक्षा कर रहे थे। प्रमत्त आलमिदाने बडे वेगसे मुसल्मानों पर आक्रमण किया। उनके साथ उन्नीस युद्ध-जहाज और १६०० सौ योद्धा थे। फिरङ्गियोंने अंजदोपसे दभोल बन्दरमें पहुँच कर बडी धूमधाम से युद्ध आरम्भ कर दिया। युद्धमें पराजित होकर दभोल

---

* Almeida replied that his term did not expire till January 1509, and that he desired to defeat the Egyptian fleet of Emir Husain and to wreck vengeance for the death of his son, Dom Lourenco — H. M. Stepnens,

वासियोंमेंसे कितने ही तो पहाड़ और वनमें भाग गये, बाकी सोलह सौ दभोल वासियोंके तप्त शोणितसे रञ्जित होकर आल्मिदाने नगरको लूट लेनेकी आज्ञा दी। किन्तु फिरङ्गियोंके दुर्भाग्यसे, अकस्मात् आग लग गयी और दभोल जल कर भस्म हो गया। इतिहास बीती हुई बातोंका जीवित साक्षी है। वही इतिहास साफ साफ़ कह रहा है कि, धन रत्नके लोभसे फिरङ्गी लोग आल्मिदाके साथ जानेमें असम्मत हुए थे। इसी कारणसे उन्होंने अन्तमें दभोलके नाश कर देनेकी आज्ञा दी थी।

इधर उस समय मलिक अय्याज और मीरहुसेन दो सौ युद्ध-जहाज लेकर आल्मिदाकी अपेक्षा कर रहे थे। प्रमत्त आल्मिदाने बड़े जोरसे मुसल्मानो पर चढाई की। फिरङ्गियोंका वह अप्रतिहत * वेग मीरहुसेन न सम्हाल सके। वे हारकर हारनेका समाचार ले जाने वाले दूतकी तरह कम्बेके राजाके निकट भाग गये। उनके तीन हजार* सैनिकों को मृत्यु-शय्या पर सुलाकर फिरङ्गी लोग जीतका डङ्का बजा

* On February 2, 1509 Don Francisco-De-Almeida came up with the united fleet of the Mohommedans under Emir Husain and Malick Ayaz off-Din, and after a battle which lasted the whole day a great victory was won, in which the Mohommedans are said to have lost 3000 men and the Portuguese only twenty-two =H M Stephens

ने लगी। अलमिदाने शत्रुओंके जहाजोंको लूट कर जला दिया। केवल चार बड़े और दो छोटे जहाज फिरङ्गियोंकी सेवाके लिये रख लिये गये। सुल्तान और मीरहुसेनकी विजय पताकाएँ विजयी सेनापतिके सगौरव अभिनन्दनकी तरह पुर्त्त-गाल-राजके निकट भेज दीगईं।

डिउ बन्दरका जहाजी वा जल-युद्ध इतिहासमें छोटा सा है, शोणित-पानके हिसाबसे सामान्यही कहा भी जा सकता है, किन्तु फिरङ्गियोंके इतिहासमें वह एक चिरस्मरणीय घटना है। फिरङ्गियोंके गौरवके लिये इतिहासमें अतुलनीय है। एशिया खण्डका जो गौरव-रवि उस दिन नील समुद्रमें हताश होकर डूब गया था। वह फिर न उठा। मुसल्मान लोग उस समय शायद यह नहीं समझ सके थे कि, फिरङ्गियोंसे हार कर उन लोगोंने हिन्दुस्थान भरके वाणिज्यका नाश किया है। इतने दिनोंसे वाणिज्य-लक्ष्मी एशिया खण्डमें पूजा पा रही थी, डिउके युद्धके बाद वह ख्रीष्ट राजाओंके हाथ बँध गयी। पुर्त्तगीजोंका अमानुषिक अत्याचार सहन करके भी एशियाकी नव शक्तिने इतने दिनोंतक मुसल्मानोंकी रक्षा की थी, परन्तु विक्रम सम्वत् १५६६ के वैशाख मासके बाद उसने अपना कर कमल एकदम खींच लिया और बिलकुल मान हीन होकर म्लान-मुखसे ख्रीष्ट-राजके सामने हाथ जोड़कर खड़ी हो गयी। क्रूशने कुरानको पराजित कर दिया। वह हार केवल मुसल्मानोंही की नहीं हुई थी,

हिन्दू और मुसल्मान आदि सभी भारतवासियोंको उस पराजयका फल भोगना पड़ा था। भारत महासागर बहुकालके लिये पुर्त्तगीजोंका लीला चेत्र हो गया था, इस देशकी जातियोंका परस्पर विवाद और स्वार्थपरताही इसका कारण था। इसीसे कहा गया है कि, डिउ बन्दरकी समुद्री लड़ाई हल्की वा सामान्य होने पर भी पुर्त्तगीजोंके गौरव, सुप्रतिष्ठा और नव शक्ति जो भारतवर्षमें बहुत समय तक अजेय थी उसकी अतुल कहानी है। केवल यही नहीं, वह लड़ाई सुल्तानके पराजय और भारतके भयङ्कर फल भोगको भी कहानी है। इसीसे पुर्त्तगीजोंके इतिहासमें वह चिरस्मरणीय है और उसीसे पुर्त्तगीज आलमिडा भी पुर्त्तगीजोंके राज्यमें वर्णनीय है।

सुलतानका भाग्य सचमुच फूट गया था, डिउके पराजय के बादही उनका राज्य और सिंहासन सब गया। सलीम * ने मिस्र, सीरिया और पेलेस्ताइनको अपने अधिकारमें कर लिया। पुर्त्तगीज लोग जिस तरह मौरइनेन को जीत कर ही

---

* Selim I, who was then ruling at Constantinople, was at issue with the Mamluke Sultan of Egypt, whom a few years latter he conquered, but the opposition between them was not understood in Portugal, and it was believed that the Turks, would be inclined to assist the Egyptians —H M. Stephens

निश्चिन्त नहीं हुए थे—अब सलीम भी सुलतान की तरह पुर्त्त गीजोंकी प्रतिष्ठाका भीतर भीतर अनुभव करने लगे। हाय! यदि दोनो सुलतान आगेसेही मिल जाते तो क्या न बनता! उन लोगोंमें धर्म्मका पार्थक्य नहीं था, जाति-गत पार्थक्य भी नहीं था, यदि वे लोग विद्वेषको भूलकर, आपसमें मेल करके, भारतका उद्धार करना चाहते तो क्या न होता? परन्तु ईश्वरकी इच्छा वैसी नहीं थी। कुछ काल बाद जब तुर्कों और विनीसियोंने, अपना अपना द्वन्द कलह और परस्परका विद्वेष भूलकर, पुर्त्तगीजोंके नाश करनेके लिये मन प्राणको एक करके कमर बाँध ली, तब सुल्तान की समस्त चेष्टाएँ विफल हो गईं। पहिले सलीमने विनीसियों को सब स्थानों पर व्योपार करनेके सम्पूर्ण अधिकार दे दिये थे। पूरबका माल मसाला अलेकजण्ड्रियासे ले आनेमें राजा का कानून कोई रोक टोक नहीं करता था। परन्तु लिस्बनके माल पर राजाके महसूल वा राज कर का खूब भारी बोझ डाल दिया गया था।

उससे पुर्त्तगीजोंका वाणिज्य मरा नहीं, क्योंकि वे लोग जलके रास्तेसे बहुत सहज और थोड़ेही खर्चमें अनेक बहु-मूल्य चीजें ले आकर यूरोपमें बेचते थे। उसीसे यूरोपके व्योपारमें विनीसियोंका स्थान दिन दिन कम होने लगा था। कैम्ब्रेकी अभिशप्त सन्धिके कारण विनीसीय लोग दिन दिन अन्नहीन और वस्त्रहीन होने लगे। अन्तमें ऐसा समय आ

पहुँचा था कि, उन लोगोंको माल मसाला बेचनेके लिये, बाध्य होकर, पुर्त्तगाल-राजकी आज्ञा लेनी पड़ती थी। शत्रुओंको हराकर, आलमिदा विजय गौरवको मस्तकपर रखकर कोचीन को लौटे। उस समय उनको इस बातकी बड़ी भारी चिन्ता थी कि कहीं आलबुकर्क भारतवर्ष का शासन भार न ले ले। अत: वे अपने साथी सरदारों सहित उसका उपाय करने लगे।

यहाँ कोचीनके राजा एक सुयोगकी अपेक्षा कर रहे थे। उन्होंने देखा कि वर्त्तमान और भावी सरदारोंमें खूब गड़बड़ मच रही है। इस समय दोनों अपना अपना जोर जमाने में लगे हैं, व्योपारकी ओर किसीकी दृष्टि नहीं है। अतएव उन्होंने समय समझ कर मालकी रफ़्नी (Export) बन्द कर दी। कोचीन-राजने पुर्त्तगीजोंको पहिचाना नहीं था, पहिचानते तो शायद ऐसा विचार न करते। पुर्त्तगीज कभी व्योपारको नहीं भूलते, उसीसे आलमिदा भी नहीं भूले। उन्होंने खबर पातेही आलबुकर्कसे कुछ दिन चुप रहनेको कहा। इसी बीचमें कोचीन-राज मौका देखकर आलबुकर्क की तरफ़ हो गये और पुर्त्तगालमें अपना दूत भेजनेको तैयार हुए।

आलमिदाने यह खबर भी पायी, किन्तु तौभी उन्होंने अपना शासन कर्तृत्व (हुकूमत) परित्याग नहीं किया। वे एकदम अन्तिम परिणामकी अपेक्षा कर रहे थे। हुकूमतके लोभने

आलमिदाको यहाँ तक अन्धा कर दिया कि, वे सच और झूठ बिना विचारेही आलवुकर्कके मित्रोंसे उसको खटपट करा देनेका उपाय करने लगे। जिससे आलवुकर्कका आदर मान मिट्टीमें मिल जाय और जिससे कोचीन राजके निकट खड़े तक न होने पावे, आलमिदा अब उसीका बन्दोबस्त करने लगे।

कवि ने सच कहा है 'लोभ पाप को मूल' लोभ से सर्वदा पाप जन्मता है। आलमिदा और आलवुकर्क के विवाद को कहानी उस पाप को तसवीर है। उस तसवीर में आलमिदा विशेष कलङ्क से काले देख पड़ते हैं। आलमिदा को लोभ था इससे पाप ने उन्हीं को पकड़ा। उन्होंने पुर्त्तगाल-राज के निकट झूठ मूठ रिपोर्ट को थी कि, "आलवुकर्क विद्रोही है और वे चुपचाप जमोरिन के साथ मेल करके भारतवर्ष से पुर्त्तगीजों को निकाल देने का उपाय कर रहे है इत्यादि"। पाप का पथ सर्वदा फिसलाने वाला (चिकना वा काईदार) होता है, आलमिदा उसी फिसलाने वाले रास्ते से दिन दिन फिसलते फिसलते नीचे आने लगी।

विद्रोही ठहराकर आलमिदा ने कानानोर के किले में आलवुकर्क को कैद कर रक्खा। उनका घर द्वार भी तहस

---

* Albuquerque again demanded that Almeida should resign the Government to him But the Viceroy, influenced

नहस कर दिया, और यह कह कर कि "जो कोई आलबु-कर्क का पक्ष लेगा उसी को हम जेलखाने में ठूँस देंगे," सब को भय दिखाने लगे।

आल्मिदा के साथ रहनेवाले नौकरों को छोड़ कर और सब के लिये हथियार बाँधने की मनाई हो गई। आल-मिदा के मनमें शक था, कि कहीं ये लोग आलबुकर्क के पक्ष में होकर कुछ विपद न उठावें। जाति वालों की भी खबर लेने में आना कानी न की गयी। जिन पुर्त्तगीज व्यापा-रियों को उन्होंने आलबुकर्क का साथी समझा, उनको भी जेल में डाल कर बेड़ी हथकड़ी पहनाने में देर नहीं की। किन्तु 'अपना चेता दूर है प्रभु चेता तत्काल' आलमिदा का पत्र आदि जला कर आलबुकर्क को पदच्युत करने और उनका अपमान करके उन्हें राजा की दृष्टि में शत्रु ठहराने

---

by Joao-da-Nava and the other captains, who had good cause to fear Albuquerque's anger, persistently refused They drew up a requisition to the Viceroy, which they got signed by many other officers, stating that Alfonso-de-Albuquerque was a man of great maptitude, and covetous, and of no sense, and one who new not how to govern anything, much less so great a charge as the Empire of India, The Viceroy received this petition favourably In August 1509, he ordered Albuquerque to be imprisoned at Cannanore —Albuquerque's commentaries Vol II P 38

के सब उपाय, पापी मनुष्य की सन्तान की तरह, जन्मते ही विनष्ट हो गये।

आलमिदा की हिन्दुस्थान पर हुकूमत करने की इच्छा इतनी प्रबल हो उठी थी, कि जब इतना करने पर भी कुछ सन्तोषदायक फल न देख पड़ा; तब वे धोखे धड़ी से आलबुकर्क को विष देकर मारने की चेष्टा करने लगे, परन्तु यह सब विषम उपाय करके भी उन्होंने भारतवर्ष का कर्त्तृत्व भार भविष्यत् के लिये न पाया। आलबुकर्क का भतीजा मार्शल-वान-फरनन्दो कौटिन्हो पुर्त्तगलराज का आज्ञापत्र लेकर एक दिन अकस्मात् बन्दर—कानानोर १*—में आ पहुँचा और उसने तुरन्त आलबुकर्क को जेलखाने से बाहर कर दिया। आलमिदा बुद्धिमान थे वे चट समझ गये, कि हमारा कुछ भरोसा नहीं है, और बिना कुछ कहे सुने ही आलबुकर्क के हाथ में भारतवर्ष का शासन-भार सौंप कर बिल्कुल टूटे हुए हृदय से कोचीन को छोड़ कर चले

---

१ कानानोर का हाल स युक्तांश या पुस्तक के शेष भाग में देखिये।

* In October 1509 fresh fleet arrived at Cannanore under the command of Dom Fernao de-Nontinho Marshal of Portugal. This powerful nobleman was a relative of Albuqnerque, and atonce released him from custody. With Albuquerque the Marshal sailed to Cochin, and he insisted that, in compliance with the Royal Mandate, Albuquerque should be immediately recognized as the Governor of India H. M Stephens

गये। परमेश्वर दुष्टों को अवश्य दण्ड देते हैं। आलमिदा को भी पाप का फल भोगना पड़ा। लिस्बन को लौटने के समय सालधाना उपसागर के तीर पर वहाँ के कतिपय अनाथ अधिवासियों के साथ आलमिदा के सहचरों का विवाद उपस्थित हुआ। आलमिदा के एक नौकर ने दो निरपराध और नितान्त अनाथ अधिवासियों को बहुत हैरान किया। उस पर उन लोगोंने उस घमण्डी नौकर को खूब पक्की गच की तरह पीट पाट कर, उसके ऊँचे चढ़े हुए मिजाज को चौरस कर दिया। इस अपमान का बदला लेने के लिये आलमिदा नौकरों के कहने से दलबल सहित तीर पर उतरे। किन्तु उतरते ही बहुत दूर से फेंका हुआ एक तेज बर्छा आकर उनका गला छेद कर पार कर गया। आलमिदा के पाप का प्रायश्चित्त हुआ। अपने तप्त शोणित से जन-हीन वेलाभूमि को रँग कर आलमिदा ने पाप का भार उतार दिया। अगाध समुद्र ने फेन समेत लहरों को उठाकर भयङ्कर गर्ज्जना से चारों दिशाओं को कँपाते हुए आलमिदा का अन्तिम आर्त्त कण्ठ स्तब्ध कर दिया। धर्म्म की जय हुई और पाप का क्षय हुआ। *

---

* Almeida left Cochin on 10, 1509 On his way home he was obliged to put in at Saldhana Bay, where his sailors had a dispute with some Kaffirs whose sheep they had stolen Don Francisco-de-Almieda went to their help, but he was struck *down and killed* by an assassin Thus died the first Viceroy of Portuguese India

बारहवां अध्याय ।

History, ancient or modern, records no achievement of armed commerce so rapid, so brilliant, and so fraught with lasting results —Sir W W Hunter

पुर्त्तगीजों की वाणिज्यनीति के साथ इतिहास ने हमें खूब परिचित कर दिया है। हाथ में भीख माँगने को तूम्बा लेकर भिखारियों की तरह रत्नाकर के किनारे खड़े होकर, अन्त में तलवार और तोपों से रक्त की नदियाँ बहाकर अपना पूर्ण रूप दिखाते हुए भारतवर्ष में व्योपार फैला कर उन लोगोंने सर्वदा के लिये नाम पैदा किया था। हमलोग आगे देख चुके हैं कि वास्कोडीगामा ने काँपते हुए हृदय से भारतवर्ष के तीर पर आकर अपना जहाज लगाया था। आश्चर्य भरी आँखों से जमोरिन का धन रत्न देखा था और राजा के द्वारा अश्रुत पूर्व्व सन्मान प्राप्त किया था। किन्तु लौटने के समय उन्होंने अपना असली रूप प्रकट करने में त्रुटि नहीं की थी।

पुर्त्तगाल राज डोम मैन्युएल ने 'जेहाद' कह कर जिस युद्ध यात्रा का नाम रक्खा था, वह क्रूस की

---

on March 1, 1510 And it is a strange irony of fate that the famous conqueror of the Mohamadan fleet, who by his victory assured the power of the Portuguese in the East, should die by the hands of ignorant African savages —R N, P

ओट में रहकर "कृपाण की सहायता से व्यापार फैलाने की हिकमत" के नाम से इतिहास में सुपरिचित हो रही है। फिरङ्गी जाति महा चतुर है, वास्कोडोगामा उसी के शिरोमणि थे। उन्होंने सहज ही में समझ लिया था कि, भारतवर्ष में रहने वाली जातियों का परस्पर विवाद ही एक दिन उन लोगों के विनाश का पथ साफ़ करेगा। राजा इमैन्युएल भी यह बात समझ गये थे। उसी से माल मसाले से भरे हुए व्योपारी-जहाजों में तोप, बारूद और गोला आदि युद्ध के सामान रख कर भारतवर्ष में भेजे गये थे। फिरङ्गियों का इतिहास देखने से जाना जाता है कि, उन लोगों के वाणिज्य ने विजय वैजयन्ती का अनुसरण नहीं किया था, विजय वैजयन्ती ही वाणिज्य के पीछे पीछे नितान्त चोरों की तरह, एक दम मुर्दे की तरह, और बिल्कुल बलहीन की तरह भारतवर्ष में आई थी। उसके बाद हिन्दुस्तान की दुर्बलता, स्वार्थ, निन्दा, और घर घर के कलह का आश्रय पाकर, दिन दिन परिपुष्ट होके, अन्त में गौरवके साथ अपना अधिकार जमाकर सुप्रतिष्ठित हुई थी। उस समय भारतवर्ष के लाञ्छित, प्रतारित और रणाहत राजाओं की शक्ति एक दम जड से भस्म हो गई थी।

विक्रम सम्वत् १५५५ *-में वास्कोडोगामाने जब भारतवर्ष को परित्याग किया था तब की व्यापार-नीति चार भागों में

---

* १४९८ ई० स०।

विभक्त की जासकती है। पहिले यह स्थिर किया गया था कि, प्रत्येक व्यापारी जहाज एक एक जङ्गम कोठी की तरह रह कर भारतवर्ष का माल मसाला खरीद कर लिस्बन के बाज़ार में पहुँचाया करेगा, और यह सब तैरती हुई कोठियाँ धन के लोभी फिरङ्गी बनियों के रहने की जगह बनकर भारतवर्ष के समुद्र में व्यापार करती फिरेंगी। किन्तु थोड़े ही दिन बाद इस सरल और सहज नीति को परित्याग करके पुर्त्तगाल ने स्थिर किया कि, तैरनेवाली कोठियों से कुछ लाभ न होगा। समुद्र के किनारे पर खूब मजबूत पत्थर की कोठियाँ बनाकर फिरङ्गियों को रखना होगा। कैबरेल ने इसी नीति का अनुसरण किया, किन्तु इससे भी सुविधा न हुई, तब फिरङ्गियों ने समझ लिया कि बिना सेना इकट्ठी किये काम न चलेगा। दूसरी चढाई के समय वास्कोडीगामा सेना एकत्रित करने लगे।

फिरङ्गियों का व्यौपार समुद्र किनारे फैलने लगा। लेकिन तब भी भारतवासियों के काम काज में उन्हें सन्देह रहता और उन लोगोंके बलके ऊपर एकदम विश्वास करने का साहस नहीं होता था। वास्कोडीगामा मनमें सोचते थे कि जो इतना भारी साम्राज्य एक बार हिलेगा, एकबार भी जाग उठेगा अथवा भ्रमको समझकर अपने कर्तव्य पालन करने को कमर बाँधेगा तो बड़ाही अनर्थ हो जायगा। मुट्ठी भर फिरङ्गी वीर लोग तो ऐसा

होने से क्षणभर में अथाह समुद्र में डूब जायगी। इसीसे उन्होंने लड़ाई का सब सामान जमीन के नीचे गाढ़ रक्खा था। सब के सामने रखने की हिम्मत नहीं कर सके। सोते हुए सिंह को कौन जान बूझकर उठाता है?

किन्तु फिरङ्गी सरदार आलबूकर्कने जब आकर देखा कि, सब भ्रान्ति और सब संशय केवल अपने मन की भूल है, यह सिंह कभी न हिलेगा और कभी न जागेगा, यह मुर्दे की तरह सोया हुआ है, तब उन्होंने जमीन में गढ़े हुए अस्त्र शस्त्र एक एक करके बाहर निकाले। जिन सब सुरक्षित स्थानों को वास्कोडोगामा ने अभीतक व्योपार का गोदाम वा कोठी कह कर प्रसिद्ध किया था, अलबुकर्क अब इच्छामत निर्भय होकर कहने लगे कि, यह सब कोठी नहीं, फिरङ्गियों के किले हैं। उन्हीं सब किलों में तब फिरङ्गी सरदारों के आधीन पूर्व्व और पश्चिम के समर-व्यवसायी युद्ध करना सीखने लगे। आलबुकर्क के शिष्य साल्धाना उस समय निशङ्क होकर लाल समुद्र का मुँह रोक कर बैठे। अरबी बनियों ने सोकर उठे हुए मनुष्य की तरह आँख खोलकर देखा कि सब चौपट हो गया है। उन लोगोंके पुराने झोपड़ों में आग घुस गई है।

उसके बाद पाकिश्रो और सोआरेज आये। इतने दिनों की शिक्षा यह लोग भूले नहीं थे, तुरत अरबी बनियों पर चढ़ाई की। विधाताके वज्र की तरह उस चढ़ाईने दक्षिण

भारत के मुसल्मानी व्योपार-केन्द्र का नाश कर दिया। उस समय केवल एक पारस्य उपसागर का भरोसा रह गया। लेकिन कितने दिन ! अन्तमें वह भी गया। देखते ही देखते फिरङ्गी लोग मालावार-तीर के हर्त्ता कर्त्ता विधाता हो गये। १५५६ से १५६१* यही पाच वर्षों में फिरङ्गियों का व्योपार जिस तरह फैल गया और प्रसिद्ध होगया, आज कलके आधुनिक वा पुराने समय के किसी इतिहास मे उसकी तुलना नही मिलती।

आगे हम देख चुके हैं कि, भारतवर्ष में एक स्थायी फिरङ्गी शासन कर्त्ताके न रहने से बहुत प्रकार की गडबड़ होती थी। इसीसे आल्मिदा बडी भारी फ़ौज लेकर हिन्दु-स्तान में सब से पहले ईसाई शासन कर्त्ता बनकर आये थे। उन्होंने आते ही पहले अफ्रिका के पूर्व्व के किनारे को सुरक्षित किया था। फिरङ्गियोके जहाज उस समय वहाँसे चल कर भारत के समुद्र में निष्कण्टक जोर जमाने लगे। मोम्बासाको हाथमें करके कुइनोआमें एक किला बनाकर आलमिदाने मालाबार को जीतने में मन लगाया था। उस समय अरबी बनिये मालाबार में जोर जमाने के लिये बडे ही उत्सुक थे। आलमिदा का इरादा खाली मालाबार को ही नाश करने का नहीं था। वे ऐसा उपाय सोच रहे थे कि जिससे मुसल्मानो का जहाजी बल

* १४९८ से १५०५ इसी वा ख्रीष्टाब्द।

सब दिनके लिये भारत महासागर में डूब जाय। पुर्त्तगालके राजाने उस समय विचार किया कि, अब मालाबार किनारेसे अरबी बनियों को निकाल बाहर करने के लिये मिहनत करना बेफायदा है। अब भारत महासागर को पुर्त्तगाल के अधीन करना चाहिये। उसीसे इस्लाम और क्रूश में जो भयङ्कर युद्ध की आग जली थी, पुर्त्तगाल के राजा उसके लिये भी तैयार हो रहे थे। उस विपुल रणभूमि के मध्य में पैलेस्टाइन और वाइजेनसियम् साम्राज्य में मुसल्-मानों की फौज बहुत दिनों तक रक्षित थी। सैकड़ों वर्ष की लड़ाईमें भी वह हीन गर्व्व नहीं हुई थी। किन्तु रणभूमि के पश्चिम प्रान्तमें स्पेन और पुर्त्तगाल में इस्लाम साम्राज्य धीरे धीरे प्रवेश करने लगा था। वही समर भूमि अब पश्चिम से पूर्व्वमें आ पहुँची। यह बात राजा इमैन्युएल की तरह मुसल्मान लोग भी समझ गये थे।

फिरङ्गी आल्मिदाका शोचनीय परिणाम हम आगे ही देख चुके हैं, किन्तु हिन्दुस्तानमें रहनेके समय वे एक दिन भी कर्त्तव्य विमुख नहीं हुए थे। उनके अगणित सैन्यदलने बहुतेरे उपायोंसे मालाबारका नाश किया था और मुसल्मानोंके व्यौपारको भी पातालमें पहुँचा दिया था। आल्मिदाने स्थिर किया था कि, वे भारतवर्ष में बिना जरूरत कई एक क़िले बनाकर बेफायदा खरच के भारमें न पड़ेंगे। उसीसे उन्होंने अपने राजाको लिखा था :—

"इस देशमें किलाकी सख्या जितनी बढ़ायी जायगी पुर्त्त-गालकी शक्ति उतनी ही तेज-हीन होती जायगी। हम लोगोंका सब दल समुद्रके जलमें ही फिरे तो अच्छा होगा। हम लोग जो समुद्र में जार न जमा सकेंगे तो फिर सब वृथा है। हमारा जहाजी बल जबतक प्रबल रहेगा, भारतवर्ष तब तक हमी लोगोंका है, और किसीका नहीं हो सकता। जहाजी बल न रहने से हिन्दुस्तानमें किला बनानेसे कुछ फल नहीं है।"

किन्तु पुर्त्तगालके राजाने उस समय आशाका आलोक देखा था। समुद्रके रास्ते से प्रतिष्ठा लाभ करनेकी बातसे उनका मन तृप्त नहीं होता था। वे उस समय जल-पथ और स्थल पथ दोनोंके मालिक होकर भारतवर्षकी प्रभुता चाहते थे। इसी से हम देखते है कि, पहले भारत-वर्षकी चढ़ाई में फिरङ्गी लोग मालाबार में प्रतिष्ठित हुए थे, उन लोगोंको कोई पराजित नहीं कर सका। उसके बाद चार वर्ष में आलमिदाके कौशल और कार्य्य-कुशलताने फिर-ङ्गी लोगोंको भारत समुद्र का एक छत्र मालिक बना दिया था। आलमिदा के बाद जब आलबूकर्क भारतके फिरङ्गी सरदार हुए, तब फिरङ्गियोंकी विजय वैजयन्ती भारत-साम्राज्य लाभ करनेके लिये अग्रसर हो रही थी। राजा इमैन्युएलने विक्रम सम्वत् १४८२ से १५७८ तक राजत्व किया था। इस

१४२५ से १५२१ ईसवी सन।

सुदीर्घ शासन समय में उन्होंने पहले वास्को-डीगामाको हिन्दुस्तानमें भेजा था। फिर उन्होंने हिन्दुस्तानमें फिरङ्गियों-का राज्य जमाकर फिरङ्गी राजधानी को अटारियों, कोठियों और महलोंसे समुज्ज्वल कर दिया था। पुर्त्तगाल के इतिहासमें उसीसे इमैन्युएल सदा पूजित है। उनकी कीर्त्ति कहानी बड़े बड़े अक्षरों में लिखी हुई है।

आल्मिदाने अब दुःखित मनसे अपने देशकी यात्रा की। तब उनके यार दोस्तोंने भी उनके साथ भारतको छोड़कर प्रस्थान किया था। वे लोग जानते थे कि, जिस आलबुकार्क के विरुद्ध होकर वे सब आल्मिदाका भला करनेमें तत्पर हुए थे, वह आलबुकार्क अब भारतवर्षमें फिरङ्गियोंके कर्त्ता हुए हैं। इसीसे अपना कल्याण न समझकर वे लोग वह स्थानको छोड़कर भाग गये थे।

आलबुकार्क की दृष्टि बड़ी दूरदर्शी थी। उन्होंने घरके विवाद की ओर ध्यान न दिया और देखा कि फिरङ्गी लोग इतने दिनोंतक केवल कई एक सामन्त राजाओं के साथ युद्ध और कलह में लगे थे, किन्तु अब वह दिन नहीं है। अब या तो इस्लाम, नहीं तो ख्रीष्ट ही समय समु-द्र-पथका अधिपति होगा। अब विपुल मुसल्मानी शक्तिके साथ मुट्ठीभर ख्रीष्टानोंका युद्ध, जैसे शक्ति-हीन कई एक सामन्त राजाओंके साथ हुआ था वैसा नहीं है। "वह रूम आया—वह रूमी सेना देख पड़ती है।" इसी भयसे

आल्बुकार्क सदा चिन्तित और कम्पित होने लगे। किस तरह पुर्त्तगाल की अप्रतिष्ठा और विपक्षका पराजय होगा। अलबुकार्क उस समय इसीकी चिन्तामें व्याकुल होगये थे।

अलबुकर्कने जो सब कीर्त्ति भारतमें छोड जानेका विचार किया था उसकी बात अब याद पडने से, हमें जान पडता है कि, मनुष्यके लिये वह बिल्कुल असम्भव है। वह केवल आरब्यो-उपन्यास की कल्पनामय अलौकिक कहानीके ही उपयुक्त है। उन्होंने नीलनदीकी चाल रोक कर उसको लाल समुद्र में लाकर फेंकने का विचार किया था। जिसमें उस की शाखा प्रशाखा मिसरके भीतर जाकर उस देशकी उर्व्वरा शक्तिको बढा न सके यही उनका उद्देश्य था। उनकी दूसरी कल्पना और भी भयङ्कर थी वे मुसल्मानों पर इतने श्रद्धा-हीन थे कि, मक्का नगरीको तहस नहस करके हज़रत मोहम्मद की गडी हुई लाश को खोदके निकाल लानेका और अन्तमें पृथ्वीके सामने उसी शवदेह की अग्निक्रिया करके मुसलमानोंको स्तम्भित करनेका विचार किया था।*

---

* To carry away from Mecca the bones of the abominable Mahomand (Mahommad), that, there being reduced publicly to ashes, the votaries of so foul a sect might be confounded —

D Alboquerque's Commentaries 1, P XLI —Sir, W W Hunter.

आलबुकर्क के कल्पनामय उपन्यास से हमें कुछ काम नहीं है। उनकी कर्म कुशलता और राज्य फैलानेका कौशल ही इतिहास का आलोच्य विषय है। हमें देख पड़ता है कि, उन्होंने पहले पारस्य उपसागर और लाल समुद्रका प्रवेश-मुख बन्द करके नील और यूफ्रेटिस नदीके तीर परके मुसल्मानी वाणिज्यके नाश करनेका विचार किया था। इस काममें उनकी कामना थोड़ी बहुत सफल भी हुई थी। हर-मुजका सुदृढ़ क़िला, अदन अवरोध और दक्षिणसे मिश्र पर चढ़ाई करने के लिये एबीसीनिया की ख्रीष्टान शक्तिको उत्ते-जित करना ही उसका प्रमाण है।

आलबुकर्क का दूसरा काम मालाबारके मुसल्मानी वाणिज्यका नाश करना था। गोआ पर अधिकार करके आलबुकर्कने उसको भी पूरा किया था। किन्तु यह गोआ का उपनिवेश फिरङ्गी बनियोंका काल हुआ था। भारत वर्षके दक्षिण पश्चिमके किनारे पर इतने दिनसे जो फिरङ्गी जहाजी शक्ति प्रबल और पराक्रान्त कहकर प्रसिद्ध थी, गोआ में ही उसका पतन हुआ था। आलबुकर्क मालाबारका सिर्फ मुसल्मानी-वाणिज्य ही विनष्ट करके चुप नहीं हुए थे बल्कि उन्होंने इसकी भी चेष्टाकी थी कि, जिसमें पूर्वके किसी स्थान पर इस देशका वाणिज्य जीवित न रह सके। और इसीके लिये मलक्का अधिकार करके वहाँपर क़िला बनाया था। फिरङ्गियोंका शासन सौ वर्ष तक मलक्का में निष्कण्टक था।

तेरहवाँ अध्याय।

The stratagic design for converting the Indian ocean from a Moslem to a Christian trade route was complete It only remained for his successors to fill in details

Sir, W. W, Huuter.

आलबूकर्क जब भारतवर्ष में पुर्त्तगाल के सबसे बड़े जहाज़ी सरदार और शासन कर्त्ताकी तरह विराजमान थे, उसी समय समूरी राज की शक्ति का नाश करनेके लिये वे यथाविहित आयोजन करने लगे थे। आलबूकर्क ने कहा था कि, 'कालीकटका नाश कर सकने पर हम बड़े खुश होंगे।' कोचीनके राजाने भी इस तरफ़ कालीकटका सब हाल चाल जाननेके लिये दो ब्राह्मण गुप्तचर नियुक्त किये। वे लोग सर्व्वदा खबर इकट्ठी करने लगे।* केवल इतना ही करके जो कोचीन राजा चुप हो जाते तोभी होता, किन्तु भारतवर्ष का इतिहास सब दिन से कलङ्क-मलिन है। आपस का कलह और "घरके भेदी विभीषण" ने ही हमेशा भारतवर्षके गिरनेका रास्ता साफ़ किया है। उसीसे स्वार्थान्ध भविष्य दृष्टि विहीन कोचीन राजने कई एक सामन्त राजाओंको पत्र लिखा कि जिसमें वे लोग जमोरिन के साथ लड़ाई आरम्भ करके उनकी कालीकटकी सेनाको दूसरी ओर खींच ले जायँ। आलबूकर्कने भी कोचीनको सहायता देनेमें बाकी

* Portuguese in India Dauvers

नहीं रक्खा। इस तरफ़ गुप्तचर ने आकर खबर दी कि, राजा कालीकटमें नहीं है, उनकी सब सेना दूसरी जगह युद्ध करनेमें लगी है अतएव राजधानी पर चढ़ाई करनेका यही अच्छा मौक़ा है।

गुप्तचर के मुँहसे यह ख़बर सुनकर फिरङ्गियोंकी समर-सभा बैठी। सभामें यह ठहराया गया कि, यही सुयोग है। राजधानी पर चढाई करना ही चाहिये। जिसमें किसीको सन्देह न हो उसके लिये असली बातको छिपाकर आल्बू-कर्कने घोषणा की कि, 'हम गोआ पर चढ़ाई करनेका बन्दो-बस्त कर रहे हैं।'

इधर कोचीन से फिरङ्गियोंके जहाज कालीकट नाश करने चले। दो हज़ार फिरङ्गियोंकी सेना जय जयका शब्द करती हुई आगे बढकर एक दिन कालीकट जा पहुँची, उस समय नगर अरक्षित था। समूरीराज राज्यमें नहीं थे और नागरिक लोग भी निश्चेष्ट और निस्सन्देह होकर दिन बिता रहे थे। फिरङ्गियोंकी सेना बिना किसी तरह की रोक टोकके आगे बढने लगी। मुसल्मानोंकी मसजिद आग लगने से धू धू करके जलने लगी। अन्तमें राजमहल तक भस्म होने लगा। उस समय भी भारतवर्षमें वीर थे, वे लोग बडी हिम्मतके साथ हथियार उठाते थे। वे वीर नेन्यारी थे तो मुट्ठीभर ही, किन्तु बडी बहादुरी के साथ लडने लगे। उस लड़ाई में स्वयम् मार्शल और

उनके साथी और और भी अनेक प्रधान प्रधान फिरङ्गी योद्धा लोग चिर निद्रा में अभिभूत हो गये थे। आल्बूकर्क पर भी दो चार हाथ पड़े थे। नैन्यारी सेना की वीरता के सामने उस दिन फिरङ्गियोंकी सेना एक दम बेइज्जत होकर भाग निकली, जो अनटोनियो और रावेल नामक दो पुर्त्तगाली कप्तान सेना समेत आकर न पहुँच जाते तो, शायद फिरङ्गियोंकी पराजय और भी भीषण होती। शायद हारने की खबर लेकर भागनेवाला भी कोई न रहता। भारतवर्ष में जयचन्द संख्यातीत थे। उसीसे विजय नगरके राजा नरसिंहराव फिरङ्गियोंको सहायता देनेमें प्रतिश्रुत हुये। प्रतिदानकी तरह आलबुकर्क ने कहा "अबसे हरमुजसे लाये हुए घोड़ोका व्यौपार आपके ही देशमें होगा। दक्षिण में रहनेवाले उस सौभाग्यसे वञ्चित रहेंगे"। रूमी सेनाके नामसे उन दिनो फिरङ्गी लोग बड़े ही डरने लगे थे।

उसीसे दूसरीबार युद्धाभियान की व्यवस्था करते ही करते आल्बूकर्कने जब सुना कि, रूमके तुर्क लोग गोआमें बड़े प्रबल होगये हैं और उन लोगोंकी सहायता के लिये सुलतान की भी सेना आ रही है, तब वे बड़े घबड़ाये। थोड़े ही समय में फिरङ्गियो की सेनाने पंजिम दुर्ग जीतकर उसमें आग लगाकर जला दिया और क़िले के अस्त्र शस्त्र लूट-कर जहाजमें चले आये। जलदस्यु तिमोजा फिरङ्गियोंको सब तरह से सहायता करने लगे। आख़िरकार नागरिकों

ने शीघ्र ही पुर्त्तगाल राजाका आनुगत्य स्वीकार करके अत्याचार से रक्षा पाई।

विजय पाकर खुश आल्बूकार्क अन्तमें सेना समेत गोआ के द्वारपर जा पहुँचे। वहाँ युद्ध भी न करना पड़ा। गोआ के सेनापति ने डरपोककी तरह फिरङ्गियोंकी शरण लेली। गोआके दुर्गमें रण युद्धका सामान भरा हुआ था सज्जाका अभाव नहीं था। तोप, गोली, गोला और बारूदकी भी कमी नहीं थी। केवल कमी थी हिम्मती और लड़ाके सेनापतिकी। उसी अभावके कारण गोआ फिरङ्गियों के हाथमें आगया। चालीस व्यापारी-जहाज पूर्ण माल मसालासे भरे और बहुत से घोड़े आदि फिरङ्गियोंने लूट लिये। रूमी और तुर्कियोंके स्त्री, पुत्र और कन्या आदि भी फिरङ्गियों के हाथ में कैद हो गयीं। गोआके सेनापतिने शरणागत लोगोंको परित्याग करके किले की सब चीज़ें ले लीं और भागकर प्राण रक्षा करके यशस्वी हुए। आस पासके छोटे छोटे दुर्ग जिनमें तुर्क और रूमी लोग वास करते थे उनको भी शीघ्रही निकाल बाहर किया। मालाबार और गुजरात के शक्तिहीन होनेके कारण गोआको वशमें कर लेनेसे दक्षिण और उत्तर बम्बई तीर का भी वाणिज्य आल्बूकार्क के हाथमें आगया था। कच्छ उपसागर से लेकर दक्षिण कुमारिका अन्तरीप पर्य्यन्त फिरङ्गियोंका वाणिज्य क्षेत्र हो गया। अन्त में यह हाल हुआ- कि, जो मुसल्मानी वाणिज्य-जहाज एक

दिन निर्व्विवाद मालबार के तीर पर व्योपार करते फिरते थे, अब फिरङ्गो के आदेश पत्र बिना उन सबका चलना एक दम बन्द होगया था।

आल्बूकर्कने गोआ पर अधिकार तो कर लिया, किन्तु निश्चिन्त न हो सके। उन्होंने सुना कि, आदिलशाह फिरङ्गियों पर चढाई करने के लिये खूब आयोजन कर रहे हैं और शंखेश्वर के राजा बाम्रोजी, सूवाके सेनापति रोशन खाँ और करपत्तनराज के मालिक राव्वल, आदिलशाह को सहायता करनेके लिये तैयार हो रहे हैं। यह खबर सुनकर फिरङ्गी लोग बड़ी चिन्ता करने लगे।

आदिलशाहने विजयपुरके राजासे मदद माँगी। किन्तु नरसिंहराव एकान्त मुसल्मानोंके वैरी थे। अपने स्वार्थ में भूलकर उन्होंने फिरङ्गियों की तरफ़ होकर हथियार उठाना चाहा।* उन्होंने यह नहीं समझा कि, गोआ नगरसे फिरङ्गी बनियोंको निकाल बाहर कर देनेमें भारतवर्षका मंगल होगा। हिन्दू और मुसल्मानोंका आपसका वैरही भारतवर्षके अवनतिका मूल कारण है। इतिहास हमें हमेशा से यही शिक्षा देता आता है।

---

* The king Narsing had, however, replied that forty years ago the Moors of the Deccan had taken the Kingdom of Goa from him, and he was not now sorry to see it in the possession of the King of Portugal, and that his intention was to assist the Portuguese in defending the place—Danvet. Vol, I.

युद्धका बन्दोवस्त होने लगा। आल्बूकार्क गोआ नगरमें जाने के सब रास्तों और घाटोंको सुरक्षित करने लगे। उन्होंने इसका भी बन्दोवस्त किया कि, जिसमें गोआका कोई मूर बनिया आदिलशाह के पास पत्र वगैर, न भेज सके। ज़रूरत पड़ने पर शरण लेने और भाग निकलने के लिये जहाज भी तय्यार रक्खा गया। आदिलशाहने सेना सामन्त लेकर बालसरिमृमें डेरा डाल दिया और आल्बूकार्क के पास दो दूत भेजे। उन दूतोंने आकर खबर दी कि, गोआ नगरके बदले में आदिलशाह समुद्र किनारेका एक दूसरा स्थान छोड़ देनेको राजी है, , किन्तु आल्बूकार्कने वह बात न मानी। दोनों दूत पालकी पर बैठकर लौट गये।

आखिरमें मई महीनेकी अँधेरी रात में मुसलमानोंने दो दलोंमें बँटकर गोआको घेर लेनेकी कोशिश की। पहले दलके तीन मनुष्योंको छोड़कर और सभी फिरङ्गियोंके हथियारोंसे मारे गये। लेकिन दूसरे दलने बड़ी बहादुरी से बढ़कर दुआर्ते-दा-सूसाको सेना समेत मारकर छार कर दिया। विजयी मुसलमानी सेना रास्ता पाकर वन्याके प्रवाहकी तरह गोआ नगरमें घुस गई। आल्बूकार्क उस समय नाव पर चढ़कर भागकर जहाजमें जा छिपे। फिरङ्गियोंका राक्षसी स्वभाव कभी गुप्त रहनेवाला नहीं था। इसीसे भाग नेके समय भी आल्बूकार्क ने हुक्म दिया कि, किलेके एक सौ पचास प्रधान मूर बनियोंका सिर काट कर ज़मीनपर

डाल दो, अस्तबलकी घोड़ोंकी जाँघका माँस काट कर उन्हें बेकाम कर दो और हथियारों के गोदाम में आग लगा दो।*

अनेक प्रकारसे विध्वंस होकर आलबूकार्कने अन्तमें कोचीन आकर एक समर-सभा आह्वान की। उन्होंने फिरङ्गी सरदारोंसे कहा कि, गोआपर अधिकार करने की बड़ी जरूरत है। गोआसे निकाल बाहर करनेसे भारतवर्षसे फिरङ्गी बनियोंका नाम विलुप्त हो जायगा। आखिर में युद्ध करना ही स्थिर हुआ। आलबूकार्कने पुर्त्तगाल राजको लिखा, "गोआ जो हाथके नीचे रहेगा तो हम लोग दक्षिण भारतको आसानी से जीत सकेंगे। युद्ध-जहाज़ ही का हम लोगोंको भरोसा है और गोआके अधिवासी लाग जहाज़ बनानेमें बड़े होशियार है। यूरपके कारीगर लोग इस देशमें आकर थोड़े ही दिनोंमें अकर्मण्य हो जाते है। वे शेषमें मनुष्यत्व से भी बाहर हो जाते हैं। किन्तु गोआके मिस्त्री लोग बराबर एक ही तरह काम करते हैं। गोआके मुसल्मानोंके अधिकारमें रहनेसे वे लोग अनायास ही असंख्य युद्ध-जहाज तय्यार करके हम लोगोंको एकदम विध्वस कर देंगे। किन्तु हमलोग जो गोआके मालिक हो जायँगे तो दक्षिणका हिस्सा सहज

---

*" so he ordered Garper De Paiva to proceed to the fortress and direct his men to cut off the heads of Melique Cufecondal and of 150 Moors of the city, so hamstring all the horses that were in the stables, and to set fire to the arsenals—Danvess, Vol, I

ही में जीता जा सकता है। कारण आपसके भीतरी विवादसे वह प्रदेश इस समय बिल्कुल शक्तिहीन है।* आलबूकार्कने विदेशी होकर जो समझा था, हमारे देशी राजा लोग स्वार्थ के अन्धकार के नीचे रहकर वह समझ न सके। उसी से लोग बोलते हैं, कि "जिसके घरमें पहले आग लगती है उसको उसको कुछ खबरही नहीं होती" भारतवर्ष के किनारे पर उस समय धीरे धीरे जो आग जलने लगी थी उसे इस देशके राजा लोग जान भी नहीं सके थे। वे लोग उस समय आपसका कलह लेकर व्यस्त होरहे और फिरङ्गियों की खुशामद भरी बातों में भूलकर देशकी भलाई पर उन लोगों ने बिल्कुल ध्यान न दिया।

चौदहवां अध्याय।

मूर बनियों को ध्वंश करने के लिये ही आल्बूकर्क इस देश में आये थे। उसीसे उन्होंने एकबार कहा था,

---

* Albuquerque s lettr to the King of Portugal, 17 October 1510.

I trust in the passion of Jesus Christ in whom I put all my confidence to break the spirit of the Moors"

Commentaries.

"हम मुसल्मानों को सब दिनके लिये जड़से उखाड़ कर, और मोहम्मद को जलती हुई आगको हमेशा के लिये ठण्ढी करके परमेश्वरकी वासनाको पूरी करेंगे।" फिरङ्गियों का समराभियान उसीसे किसी किसी इतिहास में जेहाद वा धर्म्म-युद्धके नामसे प्रसिद्ध है। किन्तु प्रकृत इतिहासकी आलोचना करनेसे देख पड़ता है कि, फिरङ्गियोंका युद्धाभियान धर्म्मके आवरणके भीतर रहकर इस देशके व्योपार का नाश कर रहा था। क्रूशकी प्रतिष्ठा करने की कामना से फिरङ्गी लोग भारतवर्ष में नहीं आये थे। भारत के अमूल्य धन सम्पद को लूटकर लिस्बनमें कुवेर का भाण्डार बनाने के लिये ही वे लोग यहाँ आये थे। इसीसे उन्हों ने छल, बल तथा कौशल और देशकी 'विभीषण नीति'में कुशल राजाओं के गृह-विवादकी सहायतासे गोआ नगर जीतकर खूनकी नदी बहायी थी।

लड़ाई में जीत कर विजयी फिरङ्गी ने हुक्म दिया कि, 'जो आदमी जो कुछ लूटकर पावेगा वह सब उसीका होगा'। लुटेरे फिरङ्गी लोग मतवालों की तरह एक घरसे दूसरे घरमें दौड़ने लगे। उन लोगों की चोखी तलवार की मारसे अनगिनती मुसल्मानों ने प्राण खोये। नागरिक लोगोंका सर्व्वनाश हो गया। मुसल्मानों की स्त्रियाँ फिरङ्गियों के पाशविक अत्याचार से धर्म्महीना होकर रोने पीटने लगी और गोआ नगर श्मशान तुल्य हो गया।

उस महा विपदसे केवल ब्राह्मण और किसान लोग बच गये। क्योंकि आलबूकार्कने हुक्म दिया था कि उन लोगो पर कोई अत्याचार होने न पावे।

गोआ जीतने के बाद आलबूकार्कने राजा इमैन्युएल के पास जो लम्बा चौडा पत्र लिखा था उसके एक हिस्से में देखा जाता है :—

"गोआपर अधिकार करने के समय तुर्कियों के ३०० आदमी मरे है। बहुत लोगो ने पैर कर नदी पार करने की कोशिश की थी। हमलोगों ने उन्हें जलमें डुबा दिया है। उसके बाद हमने नगर में आग लगा दी थी। चार दिन तक हत्याकाण्ड बन्द नहीं हुआ। हम लोगों ने किसीको क्षमा नही किया। केवल ब्राह्मण और किसानों ने रक्षा पाई है। छः हजार मूरों के खूनसे धरती रँग गई थी। यह विराट व्योपार खूब अच्छी तरह पूरा हो गया है।"[४]

लूटमार के काम में नरहत्या करके इतनी हिम्मत पाना केवल फिरङ्गियो के ही इतिहासमें शोभा पाता है।

गोआ में जब युद्धका डंका निस्तब्ध हुआ, तब आलबूकार्क पुर्त्तगीज़ों के साथ क़ैद की हुई मुसल्मान स्त्रियोंका विवाह करने लगे। सुन्दरी युवती के लोभ से अनेक फिरङ्गियोंने ख्रीष्टान धर्म्मको रोक टोक और अनुशासन भूलकर

It was indeed a great deed and will carried out Albuquerque's letter to King Dom Manœl, 22 December 1510

मुसल्मान स्त्रियोंका पाणिग्रहण किया और गोआमें रह-कर भारतवासी बने। अनेक हिन्दू और मुसल्मानोंने भी स्वार्थान्ध होकर उस समय खृष्टान धर्म्म ग्रहण कर लिया। गोआमें फिरङ्गियों का राज्य संस्थापित हुआ। आलबूकर्क ने अपने राजाको खबर दी, 'गोआ एक बड़ा विख्यात स्थान है। जो कभी हिन्दुस्तान भर फिरङ्गियों के हाथसे निकल जाय और केवल गोआ ही रह जाय, तो भारतवर्ष फिरसे अधिकार करने में देर नहीं लगेगी।' किन्तु इतिहास कहे देता है कि गोआ में अधिकार फैलाकर राज्य स्थापन करना ही फिरङ्गियों के पतन का कारण हुआ। आल्बूकर्क ने समझा था कि, सभी फिरङ्गी उनकी तरह स्वदेशप्रेमी, साहसी, लड़ाके और स्वार्थशून्य है, किन्तु वह उनकी भूल थी। जो उठता है वह गिरता है और जो गिरता है वह फिर उठता है, यह विधाता का अखण्डनीय नियम है। *उसीके अनुसार उसके बन्दोबस्तमें ईश्वर ही लगे हुए थे। लेकिन आलबूकर्क की तेज़ दूरदृष्टि ने उस बन्दोबस्त को नहीं देख पाया था।

पुर्त्तगालके राजाने हुक्म दिया था कि, उच्चवंशके प्रधान प्रधान सरदारों के साथ मुसल्मानी स्त्रियोंका विवाह करो। किन्तु आल्बूकर्क ने राजाके उस हुक्मपर ध्यान न देकर सभी फिरङ्गियों की इच्छा पूरी की थी। *इतिहासकी आलोचना

*Portuguese in India.—Dauvers.

करने से देखा जाता है कि लगभग दो हजार फिरङ्गी ब-नियों ने इस देशकी स्त्रियोंका पाणिग्रहण करके, जीवन नि-वाहने के लायक धन आदि पाया था। खुद आलबुकर्क भी इस देशकी स्त्रीके साथ विवाह करके कृतार्थ हुए थे।

आल्बूकर्क के विजय की बातने हिन्दुस्थानके राजाओं के हृदय में डर पैदा कर दिया। कैम्बे के राजा ने तुरत उनके साथ मेल करनेकी इच्छासे दूत भेजा और किला बनाने के लिये डिउ बन्दर छोड देनेको राजी हुए। ओनो-वर-राजने भी गोआ में दूत भेजकर मित्रता की बातचीत की। यहाँ तक कि फिरङ्गियों के खास और पुराने वैरी कालो-कटके जमोरिन पर्य्यन्त आल्बूकर्क के साथ मित्रता करने के लिये व्यस्त हो गये और अपने राजमें पुर्त्तगीज़ दुर्ग बनाने के लिये अच्छी जगह देनेको सम्मत हुए।

विजयी आल्बूकर्क इस समय गोआ को सुरक्षित कर रहे थे। फिरङ्गी कारीगर लोग इस देशके मिस्त्रियों की सहायता से गोआ नगरको ऐसा दृढ बनाने लगे कि, जिसमें कोई शत्रु उसपर चढ़ भी आवे तो कुछ हानि न कर सके। लेकिन तब भी आदिलशाह की हिम्मती सेनाओं के भयसे आल्बूकर्क काँपते थे। वे, केवल आदिलशाहसे ही डरते थे। उसीसे जहाँ तक हो सका किला बनाने और नगर की रक्षा करने का काम जल्दी ही खतम करने लगे। किलेके लिये पत्थर की जरूरत हुई। आल्बूकर्क झट

मुसल्मानोंके समाधि-मन्दिरों को तोड़ फोड़कर उन्हींके पत्थरों से गोआमें फिरङ्गियों का क़िला बनाने लगे। *

उस समय मलक्का द्वीप खूब धन दौलत से भरा हुआ था। चौदहवीं सदीके एक प्रसिद्ध भूगोलिक अबुलफ़िदा कह गये है कि उस समय मलक्का, अरब और चीन के व्योपार का केन्द्रस्थल कहकर प्रख्यात था। मुसल्मान, पारसी, हिन्दू और चीना व्योपारी लोग उस समय मलक्का ही में व्योपार करते थे। गोआ जीतकर ही फिरङ्गी सरदार आल्बूकर्क मलक्कापर चढाई करने का बन्दोवस्त करने लगे। मुसल्मानी व्योपार जिसमें एकदम नष्ट हो जाय उसी का वे जो जानसे उपाय कर रहे थे। आगे कह आये है कि, वही इच्छा पूर्ण करने के लिये आल्बूकर्क ने बहुतसे उपायों से पारस्य उपसागर और लाल सागर का प्रवेश-पथ जीत लिया था। उसीसे नील और उफ़रात नदीके तीर परके स्थानोंका मुसल्मानी-वाणिज्य हमेशा के लिये विलुप्त हो गया था। उसके बाद ही फिरङ्गी सरदार ने मालाबार तीरका व्योपार नाश किया। गोआ नगर सुरक्षित होकर उन्हीं समृद्धि शाली व्योपारके कलङ्क मलिन समाधि मन्दिरोंकी रक्षा करने लगा। तब भी मलक्का बाक़ी था।

* Portuguese in India—Dauvers

Threw down the sepulchres of the Moors to provide stone for the fortification "

मलक्का द्वीपमें बहुतसा मसाला पैदा होता था और अब भी होता है। मुसल्मान बनिये वह सब मसाला ले आकर मालाबार किनारे और अन्यान्य स्थानोंमें बेचते थे। आल् बुकर्क वह सब साधारण बाजार-बिक्री बन्द करके भी ठण्डे नहीं हुए—कौन मूर्ख वैसा होता है! उसीसे व्योपार की जन्म भूमिपर अधिकार करनेके लिये फिरङ्गी सेना सजने लगी।

इधर फिरङ्गी सरदार लोग पहिले हीसे समुद्र के किनारे किनारे घूमते फिरते थे। समुद्र में लड़ाई का जहाज देखते ही वे लोग उसे पकड़कर गोआ बन्दर में भेज देते थे। गोआ जिससे फिरङ्गियोंकी विजय-कीर्त्ति की तरह इतिहासमें स्थान पावे, गोआ ही जिस में व्योपार का केन्द्र हो जाय और दक्षिण का सब व्योपार गोआ में ही आकर फिरङ्गियों की थैली पूरे, इसी उद्देश्य से आल्बुकर्क ने समुद्र के रास्ते से व्योपारी जहाज़ों का आना जाना बन्द कर दिया था। फिरङ्गी लोग व्योपारी जहाज देखते ही उसे पकड़कर गोआमें भेज देते थे। लेकिन गोआ में आकर निस्तार नहीं था। जबरदस्तीकी जाने लगी।

बनियों को वहां से बाध्य होकर अरमुज (Ormuz) बन्दर को जाना पड़ता था। लाल समुद्र का व्योपार जिस में समुद्र के अथाह जल में डूब जाय और जिसमें फिरङ्गियों का व्योपार लाल समुद्र में अकेला अधिकार पावे, इसी इरादे से गोआ में इकट्ठे होनेवाले व्योपारी जहाज अरमुज़

(Ormuz) बन्दरमें भेजे जाते थे। जो जाति इतनी मिहनती, इतनी कौशली और इतनी तेज नजरवाली है, उस जातिका इतिहास पृथ्वी के इतिहास में जो अलौकिक कहकर न प्रसिद्ध होगा तो किसका होगा? वह जाति जो भारतवर्ष के स्वार्थान्ध, कलह-निपुण, घरघरके झगड़े तकरार से क्षीण, सौभाग्य के सूत्रपात में ही प्रसन्न और धैर्यहीन राजाओं के चिताभस्म पर कीर्त्ति का ताज महल न बनावेगी तो कौन बनावेगा? आलबूकार्क वही ताजमहल बना रहे थे। डीगामा भिखारी की तरह इस देश में आकर जिस ताजमहल की जड़ की प्रतिष्ठा कर गये थे, आलबूकार्क सम्राट् की तरह उसी नींव के ऊपर मन्दिर खड़ा कर रहे थे। विशाल यूरोपखण्ड में पुर्त्तगाल एक बिल्कुल छोटासा प्रदेश मात्र है। यूरोप की अन्यान्य विराट शक्तियों के सामने पुर्त्तगाल की शक्ति सूर्य्यके सामने जुगनू के समान थी। किन्तु उस ज़रासे जुगनू के पेटमें जो प्रलय का तेज गुप्त था, उसने युरोपीय शक्तिके इतिहास को म्लान कर दिया है।

जो मुसल्मानों का वाणिज्य बहुत दिनोंसे भारत समुद्र में एकमात्र छत्रपति की तरह विराज रहा था, अब उसके सब व्योपारी जहाज जो आफ्रिका से पारस्य उपसागर, पारस्य उपसागरसे मालाबार तीर और मालाबार तीर से मलक्का द्वीप भरमें राजत्व करते फिरते थे, मुट्ठी भर फिरङ्गियों की हिकमत, रणचातुरी, ठगविद्या और अलौ-

भन से भारत समुद्र के अगाध जल में डूब गये। मुसल्मानों की भारतकी वाणिज्य श्री अनाथिनी की तरह रोने लगी। किन्तु उस रोने की आवाज को और किसीने न सुना। वह अनन्त समुद्र की लहरों के हर हर शब्द में जाकर मिल गई। एक पक्षपातहीन अंगरेजने वह देखकर कहा है।*

मलक्का जीतने के लिये फिरङ्गी लोग तैयार ही हो रहे थे। आल्बुकर्कने अब सेना समेत यात्रा की। रास्ते में सुमात्राके राजा और यावा द्वीपके अधिपतिने उन्हें ज़रा भी नहीं रोका टोका, बल्कि उनका आनुगत्य स्वीकार करके वे लोग कृतार्थ हुए। यहाँ मलक्काराजने पहिलेही से कई फिरङ्गियो को कैद कर रक्खा था। आल्बुकर्क की तोप वज्र की तरह गरज कर कहने लगी:—'जो भलाई चाहो, तो कैदियों को छोड़ दो'। मलक्काराज की यह इच्छा नहीं

---

* The acheivcment would have been a splendid one for the greatest of European powers. Accomplished by one small Christian Kingdon it makes the histoty of Portugal read like romance *

W W Hunter

The strategic design for converting the Indian Ocean from a Moslem to a Christian trade route was complete. It only remained for his (Albuquerque) successors to fire in the details *

Sir W. W. Hunter.

थी कि फिरङ्गियों के साथ युद्ध करें। किन्तु 'विधिकर लिखा को मेटनहारा'। मलक्काके मुसल्मान और गुजराती व्यौपारी लोग उन्हें उत्तेजित करने लगे। आलबूकर्क की भी इच्छा थी कि, जो बिना लड़ाई झगड़ा किये ही उद्देश्य सिद्ध हो जायगा तो हथियार नहीं उठावेंगे। किन्तु वैसा न हुआ। मलक्काराज मेल करने में राजी न हुए।

तब दस नावें और थोड़ी सी फिरङ्गी-सेना मलक्काके तीर पर उतरी और क्षण भरमें गृहस्थो की झोपड़ियों में आग लगाकर निकटवर्त्ती कई एक गुजराती व्यौपारी जहाज़ों को जला दिया। इस आपद की खबर पातेही मलक्काके राजाने कैद किये हुये फिरङ्गी रुइ दा-अरंजो और उनके कई एक साथियों को आलबूकर्क के पास भेज दिया। किन्तु चुपके चुपके वे लड़ाई के लिये तैयार होने लगे। मलक्का-राजमें उस समय बीस हज़ार योद्धा तैयार थे।

शीघ्रही लड़ाई आरम्भ होगई। पुर्त्तगीज़ फौज बड़ी बहादुरी से नगरमें घुसने लगी। उस समय मुसल्मानी सेनाके सिपाही लोग नगरमें एक पुल की रखवारी में लगे हुए थे। वे लोग बिल्कुल कापुरुष की तरह उसे छोड़ कर भाग गये। तब मलक्काके राजा खुद घोड़े हाथी वगैर: लेकर वहाँ पहुँचे और सूरी सेनाको उत्साहित करने लगे। किन्तु वे लोग क्षणभरमें छत्र भङ्ग हो गये। उनलोगो की मस्जिद आल्कार्क बूके हाथ में चली गई। अब मलक्काराज २०,०००

फौज लेकर फिरङ्गियोंके साथ युद्ध करने लगे। फिरङ्गि-योंके बर्छों की चोट से उनके हाथी का सिर छिन्न भिन्न हो गया। मतवाले हाथीने महावत को सूँड में लपेट कर मार डाला। राजा घायल हो कर जमीन पर गिर पड़े। ऐसी गड़बड़ मची कि उन्हें कोई पहचान भी न सका और वे उसी मौके पर पुत्र और दामाद का लेकर भाग गये। आल्बूकर्क तब मूरी सेनाओं को मारने लगे। मतवाले फिरङ्गी लोग पुलपर अधिकार जमाये ही रहे। सेनापति की आज्ञासे नगर के दोनों प्रान्तों में आग लगा दी गयी और समृद्धिशाली नगरी पलभर में लङ्का की तरह जलने लगी।

दूसरे दिन मलक्काके राजाने फिर आल्बुकर्क के पास दूत भेजा। आल्बूकर्क ने कहा 'हम ऐसे क्षमा नहीं करेंगे। लेकिन जो मलक्काके राजा पुर्त्तगालके राजा की वश्यता मञ्जूर करें तो क्षमा कर सकेंगे', किन्तु वह न हुआ। चतुर मलय-सिपाहियों ने अग्नि का जहाज लेकर फिरङ्गियों के जहाज में आग लगाने के लिये बहुत बार कोशिश की, किन्तु कुछ फल न हुआ।

आल्बूकर्क की फौज के सरदारों में उस समय एक झगड़ा पैदा होगया था। कोई कोई बोलते थे कि, मलक्कामें क़िला बनाने से कुछ लाभ नहीं होगा। इससे बेफायदा, इस अनर्थक युद्ध की कुछ ज़रूरत नहीं है। किन्तु आल्बू-कर्क बड़े चतुर थे। उन्होंने उन लोगों को समझा

दिया कि मुसल्मानों को मलक्कामें से निकाल देने से ही काइरो और मक्का आपही विनष्ट हो जायँगे। वीनिस तक के लोग माल मसाले के लिये वाध्य होकर पुर्त्तगाल से भीख माँगेंगे और विनीसियों का स्वाधीन व्यौपार विलुप्त हो जायगा।

सरदार की इस अखण्डनीय युक्ति को हृदयङ्गम करने में फिरङ्गियो को ज्यादा देर न लगी। वे लोग ताज़े उत्साह से फिर लड़ाई में भिड़े। फिरङ्गियों की तोपों के गोलों के मारे मलक्कावासी बड़े हैरान हो गये। मूरलोग मलक्का से निकाल दिये गये। बहुत से लोग घायल होकर भाग गये। आल्बूकर्कने तब फिरङ्गियो को आज्ञा दी, जिसको पाओ उसी को हत्या करो। फिरङ्गियों की तलवार की चोट से कितने सिर कटकर ज़मीन पर गिरे उनकी गिनती करना कठिन है। केवल नयन शेठी नाम के एक हिन्दूने आल्बूकर्क की आज्ञा से रक्षा पायी थी। फिरङ्गियोंने लूट मार के समय किसीकी धन सम्पत्ति नहीं छोडी थी, लेकिन नयन शेठी की एक कौडीतक किसीने नहीं छूई। शेठीने कुछ दिन पहिले कैद किये हुए फिरङ्गी बंदीओं की कुछ सहायता की थी, उसीसे आल्बूकर्क ने उसको छोड़ दिया था।

मलक्का जीतकर आल्बूकर्कने उसी नयन शेठीके ही हाथोंमें उसका शासन भार सौंप दिया। इधर मलक्काके राजाने जङ्गलों और पर्वत की गुफाओंमें फिर फिर कर सहायता की चेष्टा में

बहुत जगह दूत भेजे। किन्तु फिरङ्गियो के साथ लड़ाई करने के लिये कोई भी आगे न बढ़ा। लिङ्गद्वीप के राजा मलक्काके आधीन थे। विपदके समय वे भी सहायता करनेसे इँकार कर गये। उनको यह न सूझ पड़ा कि, मलक्का फिरङ्गियों के हाथमें दे देना जो है, माल मसालेके वाणिज्य को लात मार के दूर कर देना भी वही है। मलक्का के राजाने जब देखा कि, अपने देश में सहायता पाना असम्भव है तब उन्होंने चीन देश में दूत भेजा। लेकिन 'काकस्यपरिवेदना' चीनके राजाने भी मुँह मोड़ लिया। उन्होंने कहा कि हम अभी तातार लोगोंके साथ युद्ध करने में लगे हैं। इस समय मलक्का को कुछ सहायता नहीं कर सकते। सुना जाता है कि चीन देशके कई एक बनिये मलक्का तीरपर मलय लोगोंके हाथसे पकड़ लिये गये थे, इसीसे चीन-राजने मलक्काको सहायता देने से इँकार किया था।*

राज्यभ्रष्ट, स्वजनबन्धु-हीन, मलक्का-राज और अधिक दिन न जी सके। उनकी मृत्युके साथही साथ मलक्का के उठने की आशा भी सदाके लिये दूर हो गई। भारत समुद्र के वाणिज्यने बहुत वर्षों के लिये फिरङ्गियों के चरणों को शरण ली। चञ्चला वाणिज्य-लक्ष्मी फिरङ्गियों को रत्नहार पहिना कर, पुर्त्तगाल-राजको अविरल उपहार देने लगीं।

आलबूकर्क अब मलक्का में किला बनाने लगे। थोड़ेही

* Portuguese in India —Dauvers

दिनों में "ए फोमोसा" (Afomosa) नामक सुरचित किला मल्लका में फिरङ्गियों की असीम शक्ति की जागती मूर्ति की तरह खड़ा हो गया। उसके एक एक पत्थर का टुकड़ा रो रो कर कितने ही बीते युगोंके कर्मवीर मलक्काके राजाओं का इतिहास गाने लगा। आल्बुकार्कने मल्लका राजाओंके समाधि मन्दिर तोड़ कर और मुसल्मानों की मसजिदों को चूर चूर करके उनके पत्थरों से किला बनाया था। मलक्काराज के पन्द्रह सौ विश्वासी नौकर और साथी लोग फिरङ्गियोंकी ताड़ना से राज-समाधि मन्दिरों को तोड़ तोड़ कर पत्थरों के टुकड़े ले आने लगे, और कोई कोई उन्हीं सब पत्थरों के टुकड़ों को गढ़ गढ़ कर फिरङ्गियों का विजय मन्दिर गढ़ने लगे।

फिरङ्गियों के क़िले, फिरङ्गियोंके व्योपारी जहाजों और फिरङ्गियों की तोप बन्दूकों से मलक्काद्वीप धीरे धीरे सुशोभित हो गया। आलबुकार्क तब पुर्त्तगाल के राजा के नाम की प्रचलित मुद्रा तैयार करने लगे। देशमें घोषणा कर दी गई कि,जो कोई मलक्का-राजके नामका मुद्रा पाकर फिरङ्गियों की टकसालमें न दे देगा तो उसकी जान लेली जायगी। प्राणके भयसे डरे हुए मलक्कावासी ढेर के ढेर पुराने मुद्रा ला ला कर फिरङ्गियों की टकसाल भरने लगे। राजा इमेन्युएल के नाम के नये रुपये पैसे तैयार होकर मल्लकामें घर घर फिरङ्गियों की शक्ति और प्रतिष्ठा जगाने लगे। नये प्रचलित

मुद्राओं को लेकर फिरङ्गी लोग नगर में फिरने लगे। बहु मूल्य झूलों से सजे हुए हाथी पर चढकर वे लोग नगर की परिक्रमा करने लगे और रास्ते में मुट्ठी भर भर कर नये रुपये पैसे लुटाने लगे। चकित नागरिक लोग बड़े आनन्द से उन्हें लूटने लगे।

आल्बूकर्क तब मलक्का की हत श्री को फिर से फिरा लाने की कोशिश में हे। सब स्थानों पर शान्ति संस्थापित करके, उन्होंने राज-कार्य्य में हिन्दुओ को ही अधिक अधिकार दिया। मलक्का के सब बन्दर फिर विदेशी व्योपारी जहाजों से भर गये।

मलक्का विजय करके सुदक्ष गवर्नर आल्बूकर्कने बड़ी खुशी से राजा इमैन्युएल के पास सन्देशा भेजा। राजा इमैन्युएल ने खुशी मनसे क्रस्तानों की विजय-कहानी पोप को सुनायी। तलवार और क्रूश की लड़ाई में क्रूश की जीत की बात सुनकर, पोपने बड़ी धूम धाम से रोम नगर में उत्सव किया। समस्त खीष्ट राज्यों का उस उत्सव में मान हुआ। मुसल्मानों का वाणिज्य सर्व्वदा के लिये डूब गया और फिरङ्गी लोग बहुत वर्षों के लिये भारत समुद्र के एक मात्र सम्राट हो गये।

पन्द्रहवाँ अध्याय।

आल्बूकर्क निश्चिन्त मनसे गोआ छोड़ कर मलक्का विजय के लिये आगे बढ़े। उस समय हनोवर के राज-भाई मलहर राय गोआके शासनकारी थे। आदिलशाह ने देखा कि यही ठीक मौका है। उन्होंने उस सुयोग को त्याग न करके अपने सेनापति फौलादखाँका गोआ जय करने को भेजा। समुद्री डाकू तिमोजा और मलहर रायके साथ युद्ध होने लगा। अन्तमें तिमोजा हारकर भाग गये। फौलाद खाँ बलेस्तरिम नामक स्थान में छावनी सस्थापन करके, गोआ जीतने के लिये जी जान से कोशिश करने लगे, किन्तु आदिल शाह का वैसा हुक्म नहीं था। उन्होने कहा कि, लड़ाई में जीत होनेसे फिर जब तक हमारी आज्ञा न पाना तब तक गोआ की ओर न बढ़ कर किसी उपयुक्त स्थान में अपेक्षा करना। फौलाद खाँ उस समय जीत क जोममें फूले हुए थे। वे अपने मालिक की आज्ञा पर ध्यान न देकर सामने जितने लड़ाई के जहाज मिल सके लेते देते गोआपर धावा करने को आगे बढ़े। अन्तमे फिरङ्गी राडरिक और राविरो ने चार सौ नेयारों की फौज के साथ फौलाद खाँको घेर कर परास्त कर दिया।

आदिल शाहने जब देखा कि, उद्धत सेनानायक के हठके

कारण ईश्वर का दिया हुआ ऐसा सुयोग पाकर भी गोआपर अधिकार नहीं कर सकते। तब बड़ी आशा करके अपने श्रेष्ठ सेनापति रसूल खाँको भेजा। गोआमें तब बड़ाही गड़बड़ मचा। फिरङ्गियोंने जब सुना कि रसूल खाँ असंख्य तोप और सैन्य सामन्त लेकर गोआ पर चढ़ाई करने आते हैं तब वे लोग किंकर्त्तव्य विमूढ़ होगये।

फ़ौलादखाँ का मन उनके मालिकके काम से बिलकुल हट गया। उन्होंने समझा था कि गोआ जीतने का सम्मान अकेले हमको ही मिलेगा किन्तु वैसा न होता देखकर वे बड़े दुःखी हुए और सुना कि, उनके दूसरे वैरी रसूलखाँ यशके ढेर के अंशीदार होकर आये हैं, तब वे एकदम उद्दत हो गये और रसूलखाँ के आदेश और उपदेश को मानने के लिये राजी न हुए। फ़ौलादखाँ को लाञ्छित और अपमानित करने की इच्छासे रसूलखाँ फिरङ्गियों के साथ मिल गये और उनलोगों की सहायता से फौलादखाँ को भगा कर उन्होंने खुद बालेस्तरिम में छावनी स्थापित की। आलबुकर्क जो गोआमें होते तो शायद वे फ़ौलादखाँ को ही सहायता करते। किन्तु भावी प्रबल होती है। जितने पुर्त्तगीज सेनापति उस समय वहाँ थे वे सब रसूलखाँ की हिकमत से पराजित हुए। उन लोगोंने समझा था कि, प्रबल शत्रु को सन्तुष्ट कर सकने से ही गोआ की रक्षा होगी। किन्तु जब देखा कि, बालेस्तरिम सुरक्षित कर रसूलखाँ मित्र बन कर

गोश्रामें घुसना चाहते हैं, तब उन लोगों का भ्रम दूर हो गया और उन को सूझ पड़ा कि सर्व्वनाश उपस्थित हुआ है। उस समय गोआमें १२०० से ज्यादा सेना न थी, लेकिन रसूलखाँ के सात हज़ार योद्धा लड़ने को तैयार थे। सुविटम के फिरङ्गियोंने जान छोड़कर लड़ना आरम्भ किया। रसूलखाँ गोआ घेरेही रहे। फिरङ्गियों में से बहुत लोग प्राण के भयसे रसूलखाँ के साथ मिल गये।

रूमके तुर्कों का डर उस समय तक फिरङ्गियों के पेट में उछला करता था। आफ़त के समय सब भयों की तरह रूमके तुर्कों के भयने और भी प्रबल होकर घिरे हुए फिरङ्गियोंको एक दम अकर्मन्य कर दिया। आल्बूकर्क तब कोचीन कानानोर और भाटफल वगैर: जगहों में व्योपार का खूब बन्दोबस्त करके फिरे आते थे। उनके आनेका सन्देशा पाकर वैरियों का दल मानों जादूके बलसे बलहीन होगया। दो एक बार हलकी हलकी लड़ाईयों के बाद रसूलखाँ ने हार मान ली। वे जैसे वीरकी तरह आये थे वैसेही जो पहले ही वीर की तरह युद्ध करते तो शायद फिरंगियों के इतिहास में कुछ फेरफार होजाता। वैसा होने से कदाचित आल्बूकर्क फिर गोआमें न उतरते। फिरंगियो का प्रतिष्ठा मन्दिर भी कदाचित् लुट जाता। किन्तु रसूलखाँ ने हिकमत से गोआ लेना चाहा, अन्तमें उन्हें हार कर भागना पड़ा। आदिलशाह की अन्तिम आशा डूब गई।

रसूलखाँ अपनी सेना सहित केवल बचे खुचे कपड़े मात्र लेकर अपने देशको चले।* इसके पहिले जिन फिरंगियो ने लुक्का चोरी से रसूलखाँ के साथ मेल कर लिया था, आलबू-कर्कने उन लोगों का विचार किया। विचार में फ़रनओ-लोपेस और उनके साथियों के दहिने और बाँये हाथों के अँगूठे काट लिये गये।

गोआ में शान्ति स्थापित करके आलबूकर्क कालीकट में किला बनाने के लिये व्यस्त हुए। किन्तु उनके भी शत्रुओं का अभाव नहीं था। उन लोगोंने पुर्त्तगाल नरेश को जनाया कि, गोआ का हवा पानी बहुत ही खराब है। यहाँ किला बनाने में भी बहुत खर्च पड़ेगा। ऐसे खराब स्थान की रक्षा के लिये सेना और धन का नाश न करना ही अच्छा है।" राजा इमैन्युएलने भी इसीसे आलबूकर्क के पास वैसाही आदेश भेजा। आलबूकर्क के सिर पर विधाता का बज्र टूट पड़ा। जिस गोआके लिये उन्होंने इतना युद्ध किया, जिसको रक्षाके लिये इतना अर्थ नाश किया और जिस गोआको रक्षा होने से भारतवर्ष में फिरङ्गियों का राजत्व सुप्रतिष्ठित होता, उसी गोआके सम्बन्ध में राजा की ऐसी राय जानकर स्वदेश-प्रेमी और स्वार्थशून्य आल्बूकर्क का दिल एकदम टूट गया।

---

* The enemy then all retired to the mainland, taking with them nothing but the clothes they wore.—

Portuguese in India,—Danvers

अन्तमें उन्होने राजा को जो लम्बा चौड़ा पत्र लिखा था उसकी हर एक लकीर में उनके हृदय का आभास प्रकाशित होता है और उसी पत्र के एक एक अक्षर में उनकी गम्भीर मर्म्मवेदना प्रकाश पाती है। आल्बूकर्क ने लिखा था ,—

आपकी आज्ञासे ही हमने गोआ अधिकार किया है। हमलोगों को भारतवर्ष से निकाल बाहर करने की जो सम्मेलनी हुई थी, गोआही उसका केन्द्र था। इसीसे हमने गोआ अधिकार किया है। गोआ नदीके किनारे तुर्कों ने जो सब जहाज तैयार किये थे उनमें भरी हुई तोप, और बारूद और रूमियो के युद्ध-जहाज जो आकर हमलोगों पर धावा करते तो हम लोग फूँक से ही उड़ जाते। पुर्त्त-गालके भीमकाय, महाशक्तिशाली जहाजो के आने से भी फिर हम लोगोकी रक्षा न हो सकती। किन्तु गोआ अधिकार कर-ने के बादही सब आपत्ति दूर होगई है। हमलोग जो चाहते है वही मिलता है। गत १५ वर्षके नौ युद्धमें इस देशमें पुर्त्त गाल को जितना सम्मान मिला है एक गोआ विजय ही उसका कारण है।

जिन लोगोंने गोआकी कहानी लिखकर आपके पास भेजी है उनकी बात पर विश्वास रखकर आप जो समझे गे कि, केवल कोचीन और कान्नन्धारमें ही किले रहने से इस देश में फिर गियों का राज्य अकण्टक रहेगा तो आप बिल्कुल भूल करेंगे। क्योंकि वैसा होना असम्भव है। जो पुर्त्तगालके

युद्ध-जहाज एकबार केवल एकही युद्धमें हार जायँ तो पुर्त्त-गालका ऐसा कोई किला आदि इस देशमें नहीं है कि, हम-लोग फिर स्वाधीनता से एक दिन भी इस देशमें रह कर अपनी धन सम्पत्ति की रक्षा कर सकेंगे। भारत के राजा-लोग जब चाहें तभी हमलोगों को पलभर में निकाल बाहर कर सकते हैं। कारण देखिये, जो कभी कोई फिरंगी इस देशमें किसी आदमी के पास से कोई चीज जबरदस्ती से छीन लाता है तो तुरन्त वे लोग किलेका दरवाजा घेर लेते हैं और तब युद्ध करना जरूरी हो पड़ता है। किन्तु गोआमें वैसा नहीं हो सकता। चाहें किसी मूर बनिये के ऊपर अत्याचार हो चाहें फिरंगीका ही निग्रह हो, फिरंगी के अधिनायकके सिवा और किसी के पास वह बात नहीं जास-कती। इस देशमें जो लोग हमलोगों के विरुद्ध काम करते हैं, उनका मनोरथ हमने यहाँ तक नष्ट कर दिया है कि, कोम्बे के राजा के माफ़िक़ एक महा शक्तिशाली नरपतिने भी हमको सन्तुष्ट करने के लिये घबरा कर दूत भेजा है और उन्होंने भी अपनी इच्छासे जिन फिरंगियों को कैद कर लिया था उनको छोड़ दिया है। केवल यही नहीं डिउकी तरह एक अत्यावश्यक स्थान में उन्होंने हमको किला बनाने का अधिकार तक दे दिया है। यह बात इतने आश्चर्य की है कि, हम खुद इसपर विचार करने का साहस नहीं कर सकते। इसके सिवा कालीकट के जमोरिन भी हमसे बड़ी

विनती करके कहते है कि, हम जिसमें उनकी राजधानी में एक क़िला बनावें। यहाँतक कि, वे पुर्त्तगाल-राजको सालाना राज-कर भी देने को तैयार है। यह सब हमलोगों के गोआ अधिकारका ही फल जानियेगा। इस के लिये हमको हिन्दुस्थानी राजाओ के साथ एक युद्ध भी नहीं जूझना पडा।

हम निःसंशय कह सकते है कि, जो डिउ और कालीकटमें दो क़िले बनाकर उन्हें सुरक्षित करलें, तो सुलतान के हजार युद्धके जहाज आने पर भी ये सब स्थान नहीं छीन सकते।* भारत की नीतिको हम जहाँतक समझ सकते है, आपके मन्त्री लोग भी जो वैसेही समझ सकते होंगे तो वे लोग भी यही कहेंगे कि, केवल नौ-शक्ति होने से ही आप भारतवर्ष की तरह एक विशाल साम्राज्य के अधिपति नहीं हो सकते। मुसलमान लोग भी चाहते हैं कि, आप इस देश में क़िला न बनावें, क्योंकि वे लोग खूब जानते है कि, जो राज्य केवल नौबलसे प्रतिष्ठित होता है वह अधिक दिन नहीं रहता। वे लोग चाहते है कि आराम से अपने अपने देशमें रह कर माल मसाला आदि लेकर स्थल के रास्ते से अपने

---

*I hold it to be free from doubt that if fortress be built in Diu and Calicut (as I trust in Our Lord they will be) when once they have been fortified, if a thousand of the Sultan's ships were to make their way to India, not one of those places could be brought again under his dominion — (D Albuquerque's commentaries)

आगीके जाने सुने हाट बाजारो में बेचे। वे लोग आपकी प्रजा होना नहीं चाहते और आपके साथ मित्रता भी करना नही चाहते। आपके साथ वाणिज्य व्यवहार करने को भी तैयार नही है। वे लोग जो यह सब कुछ नहीं चाहते तब क्या गोआ में फिरङ्गियों की प्रतिष्ठा देखकर कभी वे सन्तुष्ट हो सकते हैं? गोआ की तरह एक प्रसिद्ध और नितान्त आवश्यक स्थानमें हमारी शक्ति दिन दिन बढती और हमलोगों को गोआकी खूब रखवारी करते देख कर, क्या वे लोग हमे अच्छी तरह बाधा देने की कोशिश न करेंगे?

जिन लोगोंने गोआ का विषय आपको जनाया है उन लोगोंने कहा है कि, गोआको फिरसे ले लेने की बहुत वार कोशिश हुई है। इससे ही समझा जा सकता है कि, आदिलशाह जैसे एक महा प्रतापी राजा के पास से राज्यलाभ करना और भी कितना कठिन है। आदिलशाह इतने दुर्द्धर्ष हैं कि, जो उनसे हो सकेगा, तो वे पुर्त्तगाल का सम्मान और प्रतिष्ठा चूर चूर करके जिस तरह से होगा गोआ उद्धार करनेकी चेष्टा अवश्य ही करेंगे। जब कभी आदिलशाह का कोई सेनापति गोआ के सामने आकर खड़ा होगा तब क्या शत्रु की शक्ति की परीक्षा विना किये ही हम लोग उनके हाथ अपनी जान सौंप देंगे? यही जो हुजूर की इच्छा हो तो फिर झगडा लड़ाई का काम नहीं है। मुसल्मान हो

इस देशके मालिक हों। शक्तिहीन जहाजों पर निर्भर करके और खूब धन खर्च करके आप तब भारतवर्ष के मूरोंके बीच में अपनी शक्ति और सम्मान की प्रतिष्ठा की चेष्टा कीजिये।

जिन सब आलसी लोगोंने आपसे कहा है कि, गोआको रखवारी करने में बहुत धन खर्च किया जा रहा है उन लोगों की बातके जवाब में हम कहना चाहते हैं कि, भारतवर्षकी एक छोटी सी चीज का भी दाम इतना ज्यादा है कि पुर्त्त-गालराज की सब जमीनदारी जो गिरो रख दी जाय तब हम-लोगों का जो यहाँ खर्च होता है उसका कुछ हिस्सा निकले।* उन लोगोंने यदि यह बात आपसे कही हो कि, हमने गोआ पहिले अधिकार कर लिया है उसीसे उसकी रखवारी करने के लिये हमारा इतना आग्रह है, तो उसका उत्तर यह है कि, भारतवर्ष का खेल दूसरी तरह का देखने की इच्छासे, उन लोगो की राय होने से, आपकी आज्ञा पाते ही हम खुद सबके पहिले किले की दीवार पर कुठार मारते और बारूद खाने में अपने हाथ से आग लगा देते। किन्तु हम जब तक

---

*"The mere dross of India is so great that, if the Portuguese possissions be properly formed by your officers, the revenues from them alone would suffice to repay a great part of these expenses to which we are put"

Letter of Albuquerque to King Dom Manoel

जीवित है और जितने दिनो तक भारतवर्ष का हिसाब किताब आपको समझा देने के लिये हम जिम्मेवार है उतने दिन गोआ की धक्का नहीं लगने पावेगा। हमारे शत्रु लोग जो गोआ का अंग भग देख कर हँसेंगे, वह हमसे सहा न जायगा। जितने दिनों तक पुर्त्तगाल से कोई दूसरा शासन-कर्ता आकर हमारा स्थान नहीं लेता, उतने दिनों तक हम अपने घरके खर्च मे गोआकी रखवारी करेंगे।

जिन लोगों को गोआके हाल चालके सम्बन्ध में सन्देह है वे लोग जो हमारे साथ सहमत न होसकें तो महाराज आप जानियेगा कि अभी भी अकेला एकही आदमी गोआ शासन कर रहा है। यद्यपि हम बूढे और कमजोर हो गये है तब भी जो महाराज ऐसा हुक्म दें कि, मुसल्मानों का राज्य, हम अपने इच्छामत सहायता करनेवाली सेनाओं में बाँट कर दे सकते हैं, तो इस राज्यका भार हम खुद लेनेको तैयार है। चिर अप्रिचित, अभद्र पुर्त्तगीजोंने मन्दिर में अचल पुतलियों की तरह घरमें बैठे रह कर हमारे विरुद्ध झूठी गवाही दी है इससे आप हमको एक छोटासा तह-सीलदार समझ कर हर साल हमारे कामकाज का हिसाब किताब न माँगा कीजिये। वरन हमारा उपयुक्त सन्मान किया कीजिये और धन्यवाद दिया कीजिये, कारण हमारे पास जो कुछ है वह अचल है। सब खर्च करके हम अपने शुरू किये हुए कामको पूरा करेंगे।

अन्तमें हमारी यह प्रार्थना है कि, आज हो, कल हो, चाहे दसदिन बाद हो जो आप गोआ नगर तुर्कियों के हाथमें दे देंगे तो हम समझेंगे कि, भारतवर्ष में फिरङ्गियों के राजत्व का अवसानही परम पिता का अभिप्राय है। महाराज यह निश्चय जानियेगा कि, हमारे हाथमें जितने दिन शासनभार स्थापित रहेगा उतने दिन हम काल्पनिक राज्यका चित्र लिखकर आपके पास न भेज सकेंगे। भुजाओं के बल से जितने राज्य जीतेंगे और भविष्यत् की ओर देखकर सुरक्षित करेंगे, हम केवल वही सब चित्र भेजेंगे। गोआके सम्बन्ध मे यही हमारा अभिप्राय है।

नरपति इमैन्युएल बड़े विचक्षण थे। उन्होंने आल्बूकर्क का यह कड़ा लेख पढकर बड़े सन्तुष्ट होकर उनको अशेष धन्यवाद दिया और लिखा कि "गोआ को खूब रखवारी करो। हम समझ गये है कि गोआ नगर के ऊपर ही भारतवर्ष में पुर्त्तगाल की प्रतिष्ठा निर्भर करती है।" आल्-बुक़र्क ठण्ढे हुए। भारतवर्षके भाग्ये की परीक्षा समाप्त हुई।

सोलहवां अध्याय।

फिरङ्गी लोग इस देशमें केवल व्यौपार करने आये थे, इस देश को जीतने नहीं आये थे। वाणिज्यकी ही उन्नतिके लिये भारतवर्ष के नाना स्थानो में सुदृढ़ क़िले बनाने की

कोशिश करते थे। उस उद्देश्य को पूरा करने के लिये उन लोगो के न करने लायक कोई काम ही नहीं था। केवल रूमके तुर्कियों के धावे का भय ही समय समय पर इनको घबरा देता था। तेजस्वी आल्बूकर्क फिरङ्गियों के उस भयको बहुत कुछ दूर करने में समर्थ हुए थे और उसीसे उन्होंने फिरङ्गी नृपति को बारम्बार लिखा था 'इस देशमें अब व्योपारी जहाज भेजने को कुछ जरूरत नहीं है। जहाजो की संख्या यहाँ काम नहीं है। हमको अब बहुत सा युद्धका सामान चाहिये।' अनन्त अत्याचार के स्रोत में भारतभूमि को डुबाकर, निरपराधी शान्त, शिष्ट प्रजाओंका खून बहाकर, शानदार तलवार को कलङ्कित करके पुर्त्तगाल के फिरङ्गी बनियों ने इस देशमें प्रतिष्ठा लाभ की थी। उन लोगोंने सिद्धान्त किया था कि एशियावासी मात्र ही दयाके पात्र नहीं हैं।* विक्रम सम्वत् १५६३ में जब चेउल में फिरङ्गियो की तोप गर्जी, और उस गर्ज्जना से महाराष्ट्र प्रदेश भर काँप उठा था, तब भी उस देशमें स्वाधीन मुसल्मान राजा रहते थे। किन्तु वे सब फिरङ्गियों की तोप की गर्ज्जना सुन कर मारे डरके बिलों में घुस गये। अपना अपना क्षुद्र स्वार्थ और हीन आत्म-कलह परित्याग न करके उन लोगो ने जान बूझ

* The permanent attitude of the Portuguese to all Asiatics, who resisted, was void of compunction—W W. Hunter

१५०७ ख्रीष्टाब्द वा ईसवी सन्। Nov 23,150

कर अपने पैरो में कुल्हाडी मारी। विदेशी लुटेरों को खूब यत्न से अपनी अपनी घर का रास्ता दिखाया और जान बूझ कर लक्ष्मी को लात मार कर दूर करके अन्तमें आक्षेप करने लगी। सम्वत् १५६४ ‡ में जब फिरङ्गियो के युद्ध-जहाज धवल (Dabul) नदी में घुसे, उस समय लूट मार और अत्याचार की बिल्कुल फुरसत नहीं थी। फिर-ङ्गियोंने जो द्वीप पहिले जीता था, वही अब गोआके नामसे इतिहास में प्रसिद्ध है। फिरंगी बनियो ने पुर्त्तगाल, को लिखा—

"धवल के अधिवासी लोग कुत्तों के समान है। उन लोगोंको खाली तलवार हाथमे लेकर ही शासन करना होगा।" † आगे ही हमलोग देख चुके है, कि फिरंगी आलबूकर्कने गोआके लिये कितना आयास स्वीकार किया था। यद्यपि वीर यूसुफ आदिलशाह ने रणमत्त फिरंगी बनियो के हाथों से गोआ को बचानेकी चेष्टा की थी, किन्तु वे कृतकार्य्य न हो सके। † गोआ जीतकर आलबूकर्क की राज्य पाने की लालसा धीरे धीरे बढी। वे मलक्काद्वीप और अदन वगैर' जीतने के लिये निकले। फिरंगियोका

‡ Duff's History of the Maharattas

† Letters from Joan de Lima for the King, dated Cochin, December 22, 1518

१५०८ ई०

पराक्रम उस समय अजेय था। उन लोगोंके लड़ाई के जहाज को देखते ही इस देशके लोग प्राण लेकर भागते थे। जो लोग विघ्न करने की चेष्टा करते थे वे फिरङ्गियोके पैशाचिक शासन-दण्डसे सदाके लिये शान्त कर दिये जाते थे। हिन्दुस्तान के राजाओंने बिल्कुल असमय में फिरङ्गियोंको छेड़ना आरम्भ किया था। बिल्कुल असमय में उन लोगों की घोर निद्रा भङ्ग हुई थी। इसीसे वे लोग कृतकार्य्य न हो सके। विजयपुर और अहमदनगरके दो राजे सम्वत् सोलह सौ सत्ताइस * (१६२७) में फिरङ्गियोंके साथ जीवन मरण की चिन्ता छोड़कर युद्धमें भिड़ भी गये और उन लोगोंके हाथसे गोआ नगर को छीन लेनेका यत्न भी किया। पर "का वर्षा जब कृषी सुखाने, समय चूक पुनि का पछिताने" समय खोकर चेष्टा करनेसे क्या फल हो सकता है? उन लोगोंकी पराजयकी कहानी के साथ घृणित घूस—रिशवत—का चित्र खींचकर इतिहासने उस समय के वीरों के मुँहमें कालिख लेप दिया है। इतिहास साफ़ साफ़ कह रहा है कि, उस विपदके दिनोंमें भी निजामशाहके प्रधान प्रधान कर्म्मचारी लोग फिरङ्गियों की दी हुई अच्छी अच्छी शराब घूस में लेकर ऐसे मतवाले हो चले थे कि, फिरङ्गी बनियों की जय लाभ करना लड़कोंका खेल होगया था।

---

* इस्वी१५७१

चारों ओर जयलाभ करके आल्बूकर्क कालीकट वाला किला बनानेमें व्याकुल हुए। कानानोर और कोचीनके राजाओंने यद्यपि ऊपरसे आल्बूकर्क के साथ मित्रता रक्खी थी, किन्तु जिसमें समूरि राज (ज़मोरिन) फिरङ्गियोंकी इच्छा पूर्ण न करे, उस विषय में उन लोगोंने पूरी पूरी चेष्टा की थी। आल्बूकर्कके भतीजे नरकादाने दूत बनकर कालीकट में जाकर समूरिराज से मेल करनेका प्रस्ताव किया। उस सन्धिकी अद्भुत शर्तों को देखनेसे जान पड़ता है कि उस समय फिरङ्गी लोग जो चाहते वही कर सकते थे। सन्धिका प्रस्ताव पूरे छलकी तरह मालुम होता है, नहीं तो किसी स्वाधीन राजासे परदेशी वणिक इस प्रकारकी भिक्षा नहीं माँग सकता! नरकादा ने प्रस्ताव किया:—

(१) कालीकटमें फिरङ्गियोंको किला बनानेके लिये स्थान देना होगा। (२) कालीकटमें जितनी मिर्च उत्पन्न होगी वह सब फिरङ्गी बनियोंको देनी होगी। फिरङ्गी लोग उसके बदले में अन्यान्य वाणिज्य-द्रव्य देंगे। कालीकटका सब अदरख फिरङ्गी लोग खरीद लेंगे। (३) आगे मूर बनियोंने फिरङ्गियोंका जो सब धन रत्न लूट लिया है वह समस्त फेर देना होगा। (४) फिरङ्गियोंके बनाये हुए नये किलोंका खर्च और जितने फिरङ्गी उसकी रक्षा करनेके लिये रक्खे जाँयगे उनका भी थोड़ा बहुत खर्च समूरि राजको देना होगा।

यह सब प्रस्ताव हाथमें भिक्षा माँगनेकी तूम्बी लिये हीन फिरङ्गी भिखारियोंकी 'कातर प्रार्थना' समझी जाती थी। समूरिराज वह प्रार्थना मञ्जूर तो न कर सके, किन्तु उन्होंने साफ़ साफ़ खोलकर उत्तर देनेका भी साहस नहीं किया। आल्बूकर्क ने तब एक घृणित कौशल (हिकमत) का अवलम्बन किया। राज्यके लोभी राजा के भाईको अपने हाथमें करके वे कालीकट के सर्वनाशका बन्दोबस्त करने लगे। उन्होंने वेङ्कटके राजाके भाईसे कहा कि 'यदि तुम किसी प्रकारसे विष देकर समूरिराजको मार डालो, तो तुमको ही हम कालीकट का राजा बना देंगे।' नरकुल कलङ्क पापी जमोरिनके भाईने इस घृणित प्रस्तावमें सम्मत होकर जहर देकर समूरिराजको मार डाला।

मूरोंमेंसे बहुतेरे, उस समय भी, फिरङ्गियोंको राज्यमें न आने देनेका उपाय कर रहे थे। किन्तु भ्रातृहन्ता नये जमोरिनने उन सबको अपने सामने मरवा डाला और विदेशी मूर बनियोंको बालबच्चों समेत अपने राज्यसे निकाल बाहर करके, फिरङ्गियोंके चरण कमलोंमें तेल देना आरम्भ कर दिया।

हत भाग्य जमोरिनने भाईके दिये हुए तेज़ विषको पान करके प्राण त्याग दिया। आलबूकर्कको बहुत दिनोंसे पाली पोषी आशा सफल हुई। कालीकटमें फिरङ्गियोंका किला सिर उठाकर उस कलङ्क कालिखसे लपेटे हुए चित्रका अमर साक्षी बनकर खड़ा हुआ। भारत महासागरका अनन्त

नील जल क्षण क्षणमें उसके चरणोंको धोकर पीने लगा। समूरि राजके साथही साथ हिन्दू मुसल्मानोंकी प्रधानता भी भारतवर्षके उपकूलसे सर्व्वदाके लिये चली गई। फिरङ्गियोंने नये ज़मोरिनके साथ सन्धि करके, भारतवर्षके किनारे अपना पूरा पूरा जोर जमा लिया। उनके सन्धि-पत्रमें लिखा था:—

"पारा, सेंदुर, ताँबा, मूँगा, रेशमी कपड़ा, फिटकिरी, रोली (कुंकुम) और पुर्त्तगालसे जो अन्यान्य चीजें लायी जायँगी वह सब कालीकटके बन्दरमें और पुर्त्तगीज़ोंकी कोठी में बेची जा सकेगी। समूरिराजके राज्यमें जितने प्रकार का गरम मसाला और औषधि आदि द्रव्य पैदा होती हैं, वह सब रफ़्तनी (Export) के लिये पुर्त्तगीज़ों को दिया करेंगे और फिरङ्गी लोग दाम देकर वह सब चीज़ें ख़रीदा करेंगे। ख़रीददार लोग उनसे जो कुछ ख़रीदेंगे उसका महसूल भी वे ही लोग देंगे। हरमुज, सुम्भा, मलक्का, सुमात्रा और सिंहल वगैरः स्थानोंसे जो सब मुसल्मानी व्योपारी-जहाज़ समूरिराजके राज्यमें आवेंगे उनसे उचित कर लिया जायगा। कानानोर और कोचीनके जहाज़ोंको छोड़कर किसी दूसरे स्थानसे जो जहाज़ माल लेने आवेंगे, उन्हें पुर्त्त-गीज़ लोग माल देंगे। देशी व किसी पुर्त्तगीज के आपसमें झगड़ा तकरार करनेसे समूरि राज देशीका और फिरङ्गियों के क़िलेके सरदार फिरङ्गीका विचार करेंगे। समूरिराज को जो कुछ आमदनी होगी उसका आधा भाग पुर्त्तगाल-

राज ले लेंगे। जरूरत होनेसे पुर्त्तगालको सेना समूरिराज की सहायता करेगी और समूरिराजकी सेना फिरङ्गियोंकी सहायताके लिये अग्रसर होगी। फिरङ्गी लोग जितनी गोल मिर्च और अन्यान्य पदार्थ खरीदेंगे उनका दाम वे दूसरी वाणिज्य द्रव्य देकर पूरा कर दिया करेंगे और सब तरहका कर देनेके लिये वे लोग वाध्य न रहेंगे।

जमोरिनने इस सन्धि-पत्रको परम आशीर्व्वाद समझकर सिर पर चढ़ा लिया।

सत्रहवाँ अध्याय।

Even a high minded soldier and devout cavalier of the Cross like Albuquerque believed a reign of terror to be necessity of his position and in giving no quarter, he best rendered service to Christ and acted with the truest humanity in the long run to the heathen —Sir W W. Hunter

आलबूकर्क की मनोवाञ्छा पूरी हुई। वे पहिलेसे जानते थे कि, भारतवर्ष के तीर पर फिरङ्गियों को जितने युद्ध करने होंगे उनमें छोटे छोटे सामन्त राजाओं को ही जीत लेनेसे पुर्त्तगालकी प्रतिष्ठा न होगी। पुर्त्तगाल जब मिले हुए मुसल्मानोंका बल तोड़नेमें समर्थ होगा, तभी उसका जोर भारतवर्ष में जमने पावेगा। अन्तमें अलबूकर्कको सभी वासनाएँ पूर्ण हुई थी।

भारतवर्ष का वाणिज्य अकेले अपने हाथमें कर लेनेके लिये पुर्त्तगाल जीव जानसे कोशिश कर रहा था। आलवूकर्कने कहीं तो कृपाणके बलसे और कही कौशलसे सन्धि करके अपने उद्देश्यको पूरा किया था और प्रधानता पाकर बाहु-बलसे उसकी रक्षा करनेका भी बन्दोबस्त किया था। उसी से हमें देख पड़ता है कि, फिरङ्गियोंके सुदृढ़ किलोंने मलका, हरमुज, कालीकट, कोचीन और कानानूरमें गर्व्वके साथ सिर उठाया था। आलबूकर्क उसीसे भारतवर्षमें फिरंगियो के राज्यकी प्रतिष्ठा करने वाले कहे जाकर इतिहासमें चिरस्मरणीय है। आलोचना करनेसे हमें देख पड़ता है कि, लोहित समुद्रसे लेकर मलकाके द्वीपो तक सब स्थानोंमें एकही चित्र वर्तमान है। हरमुजहीकी सन्धि उस चित्रका परिचय देती है। हरमुजके राजाने भयके मारे स्वीकार कर लिया था कि :—(१) हरमुजकी गद्दी सदा पुर्त्तगालकी प्रजा और आश्रित कहकर प्रसिद्ध होगी। (२) हरमुजमें फिरगियोका किला और कारखाना बनेगा। (३) वे हरसाल पुर्त्तगाल राजको राज-कर दिया करेंगे। इतनाही नहीं, बल्कि जिस फिरङ्गी सेनाने उनको खूब सताया और हलाकान किया था वे उसका भी खर्च जुटा देंगे। फिरङ्गी लोग प्रतिष्ठाके यही तीन मूल मन्त्र लेकर भारतवर्षमें आये थे और जहां कहीं मिहरबानगीकी नजर फिरी थी वहीं उस बीज मन्त्रका उच्चारण किया था। जिस सन्दरसे पुर्त्तगाल के

व्योपारी-जहाज आकर लगते वही फिरङ्गी लोग बिना महसूल (चुँगी वा कर) दियेही व्योपार करते थे और उलटा उसी देशके बनियोंके पाससे कर अदा करते थे। पुर्त्तगालकी सन्धिकी नीति हमें बराबर यही एक चित्र दिखाती है।

आलबूकर्क फिरङ्गी सरदारोंमें सबसे चालाक थे। वे कल बल और कौशलसे इसी नीतिका अनुसरण करके चलते थे। अत्याचार करने और खूनकी नदियाँ बहानेमें ज़रा भी नहीं हिचकते थे। कालीकटका इतिहास पढ़नेसे हमें ज्ञान पड़ता है कि, चतुर फिरङ्गी बनिये कभी तो पैर दबाकर और हाथ जोड़कर और कभी कृपाणकी चोटसे अपना उद्देश्य पूरा करते थे। कालीकट भारतवर्षके किनारेका एक बड़ा समृद्धिशाली वाणिज्य-केन्द्र (व्योपारका नाका) था। उसमें उस समय अथाह शक्ति थी और जमोरिनका बल भी बेहद था। इसीसे फिरङ्गियोंने पहिले कालीकटका आनुगत्य स्वीकार किया था। किन्तु पैर रखने और सिर बचानेका स्थान पातेही, वे लोग जमोरिनको ले बैठे। सम्वत् १५६८ में कालीकटके साथ फिरङ्गी बनियोंकी जो सन्धि हुई थी उसके बलसे वे लोग गोल मिर्च और अदरख (Ginger) लेने लगे, लेकिन उन लोगोंको उसका ठीक ठीक दाम देना पड़ता था। जमोरिन ने देशके अधिपति होने पर भी केवल दो व्योपारी-जहाज हरमुजमें भेजनेका अधिकार पाया था। वह भी जब फिरङ्गी बनिये आज्ञा देते तब। पुर्त्तगालसे जितना वाणि-

न्य द्रव्य आता था फिरङ्गी लोग उस समय तक उसका मह-सूल देते थे।

थोड़ेही दिन बाद फिरङ्गियोंका सुदृढ़ दुर्ग कालीकटमें चोटी फटकार कर खड़ा हुआ। उसके साथही जमोरिनके गलेकी जञ्जीर और भी कस गई। उसके बाद सं० १५७१ में फिर सन्धि हुई। जञ्जीर और भी सुदृढ़ हो गई। जमोरिनने तब पुर्त्तगाल-राज का दासत्व स्वीकार किया और प्रतिज्ञा की कि, फिरङ्गियोंके शत्रु को अपने राज्य में रहने न देंगे। क्रुशके भक्तोंने यहाँ तक कि इस देशके क्रूश-भक्तोंने भी राज-कार देनेसे मुक्ति पाई। इतनाही नहीं, जमोरिनने पुर्तगीजो के व्यौपारका भी आधा खर्च देना स्वीकार किया।* चतुर फिरङ्गी बनिये जितने जोरसे गलेकी जञ्जीर खींचने लगे, साँस-बन्द जमोरिन भी उतनेही शिथिल होने लगे, अन्त में स्वीकार किया कि 'हमारे राज्य में जितनी गोल मिर्च और जितना अदरख उत्पन्न होगा वह सब हम विना मूल्य लिये ही फिरङ्गियो के हाथों में सौंप देंगे। वह सब माल हमारी ओर से पुर्त्तगाल-राजके चरण कमलों में पूजा की तरह दिया जायगा। हम पुर्त्तगाल के शत्रु को सर्वदा अपने राज्य से विताड़ित किया करेंगे।" जमोरिन की इच्छा रहने पर भी वे इतना ही कहकर चुप न रहने पाये उन्हें और भी स्वीकार करना पड़ा कि "हम अरब के

---

* *Sir W W. Hunter*

साथ किसी तरह का वाणिज्य सम्बन्ध न रक्खेंगे। अपनी कोई प्रजा को भी वाणिज्य-पोत लेकर अरब के तीर पर न जाने देंगे। पतन का पथ सर्वदा चिकना पिछलानेवाला होता है। जमोरिन उसी पिछलानेवाले रास्ते पर घोर अन्धकार में भहराय पड़े। भलाई बुराई का कुछ खयाल न करके उन्हों ने प्रतिज्ञा कर ली कि "हम एक भी युद्ध-जहाज न रक्खेंगे। हरवे हथियारों से भरी कोई पुरानी धुरानी लड़ाई की नाव भी हमारे पास न रहेगी।" ज़मोरिन के पतन का अन्त हुआ। हिन्दू मुसल्मान अँगरेजों के न आनेतक भारत महासागर में डूब गये। फिरङ्गियों के विजय ढोल के शब्द से यूरोप खण्डपर्य्यन्त काँप उठा। कालीकट का स्वर्ण सिंहासन और उसी सिंहासन पर बैठकर ज्ञान बुद्धिहीन कठपुतली की तरह राजा और कालीकट की हीरा मोती से सुसज्जित लक्ष्मी भी उस समय फिरङ्गियों के चरण कमलों में अर्घ्य देने लगी।

कालीकट का जो हाल हुआ था अन्यान्य वाणिज्य-केन्द्रों का भी कुछ दिन बाद वही हाल हुआ। आल्बूकार्क के आगेके सरदार क्याकराल ने कोचीन-राज को आशा दी थी कि किसी न किसी दिन उन्हीं को जमोरिन की गद्दी पर बैठावेंगे। आल्बूकार्क के शासन-कौशल से भ्रातृहन्ता जमोरिन के भाई अन्तमें ज़मोरिन के सिंहासन पर बैठे। कोचीन-राजको ओर किसीने

फिरके भी नहीं देखा। कारण कोचीन के वर्ण-गन्ध-मधुने उस समय फिरङ्गियों को खूब तृप्त कर दिया था। फिरङ्गियों के कौशल-जालने उस समय कोचीन में जो एक पल्टन थी उसे भी इस तरह उखाड़ फेंका था कि बिल्कुल मारखाने का भय ही न रह गया था। कोचीन-राजने अश्रु-धारा से तराबोर होकर व्यर्थ पुर्त्तगाल-राजको लिखा था कि महाराज! आपने ही हमको सोनेका मुकुट भेजा था। उसको पाकर हमने समझा था कि हम द्वीपों समेत भारतवर्ष के मुख्य राजा होंगे। आपके शासनकर्त्ता ने हम ही को राजा कहकर गद्दीपर बैठाया था और प्रतिज्ञा की थी कि, हमारे गद्दीपर बैठने में जो कोई बाधा डालेगा पुर्त्तगाल की सेना उसे चूर चूर कर डालेगी। हमने भी स्वीकार किया था कि, जितने दिन हमारे शरीर में बिन्दु मात्र भी रक्त रहेगा उतने दिन हम पुर्त्तगीजों की रक्षा करेंगे। पुर्त्तगीज़ोंने भी पवित्र मन्दिरमें उपविष्ट होकर हमारी ही तरह प्रतिज्ञा की थी। किन्तु धीरे धीरे बारह वर्ष व्यतीत हुए आजतक उस प्रतिज्ञाका केवल नाम ही नाम वर्त्तमान है। आज पर्य्यन्त वह प्रतिज्ञा पालित नहीं हुई। अब हम देखते हैं कि, आल्बूकार्क कालीकटके साथ सन्धि कर रहे हैं। कोचीन निःसहाय होकर डूबा जा रहा है।"

कुइलन कोचीन की अपेक्षा बल-हीन था। उसकी अवस्था और भी भयानक हो गई थी। कुइलन के अधिवासी

भद्र लोग तथा अन्यान्य मुसल्मानो को वेखटके खीष्ट धर्म्म ग्रहण करने का अधिकार मिला। खीष्टानो के धर्म्म-मन्दिर में जय जयकार होने लगी। कुइलनको रानीका कुछ दोष न रहने पर भी, वहाँ पर एक फिरङ्गी मारडाला गया था, उसीके कारण कुइलन को ढाई हजार मन गोल मिर्च दण्ड देनी पड़ी थीं। उसके बाद सम्वत् १५७६ में जो सन्धि हुई उसमें सेण्ट टामस खीष्टान लोग कुइलन में फिरङ्गियों की तोपोंकी छायामें रहकर दिन दिन बलिष्ट होने लगे। कुइ-लनकी सब गोल मिर्च पुर्त्तगाल को भेजी जाने लगी। रोक-टोक करनेवाला कोई था ही नहीं, पुर्तगीज व्यौपारी-जहाजों ने भी अन्तमें महसूल-मुक्त (Duty free) होकर अबाध व्यौपार करना आरम्भ कर दिया।

पारस्य उपसागर में फिरङ्गियों का जोर दिन दिन बढ़ने लगा। सम्वत् १५७१ में आल्बूकर्क के विजय-दुर्गने हरमुज को अपने अधिकार में करही लिया था। १५७८ में जो सन्धि हुई थी उसमें पुर्तगीजोंने रफ्तनी (Export) करनेके लिये जमा किये हुये द्रव्योंके सिवा अन्य समस्त चीजोंके लिये महसूल देने से भी छुटकारा पाया। इतनाही नहीं, हरमुज फिरङ्गियोंका राज्य हो गया। पुर्तगाल-नरेश इच्छा होने ही से वेखटके सिंहासन लेलेंगे। सन्धि-पत्रमें यह भी पहिलेमे लिखा गया था। 'और जबतक कृपापूर्व्वक पुर्त्तगाल-राज हरमुजका सिंहासन छीन न लेंगे, तबतक हरमुज मणि, मुक्ता और हीरा

आदि देकर प्रतिवर्ष ६०,०००० जिराफिन पुर्त्तगाल-राजके चरण कमलोंमें अर्पण करेगा।"

परन्तु लोभी फिरङ्गी बनिये इतने पर भी सन्तुष्ट न हुए। अब यह नियम पास हुआ कि, हरमुज में कोइ मुसल्मान हथियार न बाँधने पावेगा। केवल राजा को देहरक्षक सेना (Body guards) और नगरके कोतवाल वगैरः इस नियमसे बचे थे। जो कोई मुसल्मान अस्त्र शस्त्र सहित पकड़ा जाता था उसको प्रथम वार क्षमा मिलती थी। दूसरी वार बेत लगते और तीसरी वार प्राण-दण्ड मिलता था। फिरङ्गियों ने मुसल्मानो को सर्वदा के लिये उखाड कर फेंक देना चाहा था। उसीसे और भी क़ानून पास हुआ कि 'मुसल्मान व्यौपारियों को सब प्रकारके माल मसालों का महसूल देना पडेगा। केवल फिरङ्गियो को इस देश में बिना महसूल व्यौपार करनेका अधिकार रहेगा। पारस्य उपसागरका प्रवेश-मुख तो इसतरह से फिरङ्गी बनियों के हाथमें आ गया, पर लोहित सागरका प्रवेश-मुख अपने अधिकार में करनेके लिये आल्बूकार्क स्वयम् चेष्टा करके भी, मिश्रके मुसल्मानी वाणिज्य का नाश न कर सके।

उन्होंने मालाबार पर अधिकार जमा लिया और मलक्का के द्वीपों पर फिरङ्गियो का अधिकार हो जाने से मुसल्मानों का जो सिंहल में एकाधिपत्य-वाणिज्याधिकार था वह विलुप्त हो गया। समयानुसार पर्त्तगाल-राजने अपने सेनापतियोंको

राज्यपर अधिकार करने की आज्ञा दी। स्थान स्थान पर पुर्त्तगालकी पताकाएँ उड़ने लगीं। अन्तमें अंगरेज़ बहादुर जब इस देशमें आये तब वे समस्त सिंहासनों पर भारतके चारों ओर पुर्त्तगाल का अधिकार देखकर बड़े ही विस्मित हुए। पर उनके आनेसे भारतने महाविपदसे छुटकारा पाया।

पुर्त्तगीज़ोंने खूब समझ लिया था कि जब तक उन लोगोंका नौ-बल अटूट रहेगा तबतक भारतवर्ष पुर्त्तगालका है। पर उन लोगोंने जब देखा कि पश्चिम भारत में दो राज्य जहाज़ निर्माण करने में बड़े प्रवीण हैं, तब वे कुछ भयभीत हुए। कालीकट और गुजरात के जहाजों में कितना बल रहता था सो फिरङ्गी सरदार आलमिदा खूब जानते थे। इसीसे डिउका युद्ध जय करने के बाद ही फिरङ्गियों ने आज्ञा दी कि इस देशमें और कोई युद्ध-जहाज़ न बनने पावेगा। दक्षिणमें तब भी कालीकट सुसज्जित जहाज लेकर चारों ओर जय कर सकता था। किन्तु फिरङ्गियो के सन्धि-पत्रने कालीकट को बिलकुल बलहीन कर दिया था। जहाजों की बात तो दूर रही, छोटी सी नाव भी कालीकट में न रह गई। सम्वत् १५९० (ई० सन् १५३४) में गुजरात ने स्वीकार किया कि उसके बन्दर में अबसे जहाज़ न बना करेंगे। जिन फिरङ्गियों की नीति ने मूर बनियो का हथियार बाँधना बन्द कर दिया था, उसी नीति ने भारत वर्ष को युद्ध जहाज़ो से हीन कर दिया। लगभग तीन सौ वर्ष

के बाद लण्डन और लिवरपूल के रोने की आवाज सुनकर कम्पनी बहादुर ने जो किया था, फिरंगियों ने बहुत पहिले ही वह कर डाला था, किन्तु इतना होने पर भी उन्नीसवीं शताब्दी तक भारत में जहाज बनाने का काम जीवित था *

अठारहवाँ अध्याय।

They (the Portuguese) boldly struck into the wars and intrigues of the native Princes from Africa to the Molaccas, securing substantial returns for their support and finding in each dynastic claimant a stipping stone to power — Sir, W W, Hunter

फिरंगी बनियों ने जितने थोड़े समय में भारतवर्ष में जैसा जोर जमा लिया था और जैसा नाम पाया था, उसे सुनकर जल्दी विश्वास नहीं होता। जान पड़ता है कि, फिरङ्गियों की जीत और उनके जोर जुल्म की बात केवल एक काल्पनिक वा बनावटी कहानी है। और फिरंगी बनियों का इतिहास केवल एक उपन्यास है। सचमुच कठोर नहीं

---

* The correct forms of ships only elaborated within the past ten years by the science of Europe—have been familiar to India for ten centuries

Notes on India—Dr Burist Bombay.

है, किन्तु फिरंगियो के इतिहास ने ही हमें पहिले दिखा दिया है कि हमीं ने अपने हाँथो से अपना नाश किया है। हमीं ने अपने हीरे मोतियोंके महल्ल तोड फोड कर फेंक दिये है, हमीने अपने विरुद्ध हँथियार बाँधे है। हमने धर्म्मका बन्धन नहीं माना, अपने देशको नहीं पहचाना और अपनी भलाई बुराई का विचार नहीं किया, इन्हीं कारणोंसे अँगरेजी राज्य न होनेतक हमारी कुत्तोकी सी दुर्दशा हुई।

फिरंगी वनिये जब इस देशमें पहिले पहल आये थे, तब उन लोगोंके साथ केवल मुट्ठी भर सिपाही थे। उस मुट्ठी-भर सेना की ताकत नहीं थी कि वे लोग भारतवर्ष में जोर जमा लेते, किन्तु फिरंगी वनियो ने यहाँ आकर इस देश के अधिवासियोको अपनी सेना में भरती कर लिया। १५६० (ई० सन् १५०४)में फिरंगी पार्कियो ने जब कोचीनमें युद्ध किया था तब उनके दलमें १५० फिरंगी और २०० मालाबारी सिपाही थे। यही मालाबारी सिपाही लोग सबके पहिले भारतवर्ष के विरुद्ध हथियार उठाकर इतिहासमें कारिख पोत गये है। सम्वत् १५६६ (ई० सन् १५१०) में आलबुकर्क ने जब गोआ जय करने की चेष्टा की थी तब उनके आधीन केवल दो सौ इस देशके सिपाही थे; लेकिन कुछ काल बाद उस गोआ की रक्षा के लिये जब युद्ध हुआ था तब उनकी ओरसे एक हजार देशी सिपाहियो ने युद्ध किया था और गोआ में फिरंगियों को सुप्रतिष्ठित

करने के लिये अपना प्राण दिया था। बिना सकुचाये अपने भाई बन्धुओ के गले में तीक्ष्णधार तलवार घुसेड कर उनके खून को नदियाँ बहाई थीं। गोआको सेना पर फिरंगियों का सम्पूर्ण भरोसा था। आलबूकर्क का जोर जिस समय गोआ पर अच्छी तरह जमा हुआ था उस समय उनके पास केवल एक हजार फिरंगो सेना थी, किन्तु इस देश के सिपाहियों की संख्या दो हजार थी। इस देश के सिपाहियों को लडने की हिकमत (कौशल) सिखानेके लिये पुर्त्तगीजोंने कोई बन्दोबस्त किया था कि नहीं सो तो नहीं कह सकते, किन्तु इतिहास पढनेसे केवल इतना मालूम पडता है कि क्या जलयुद्ध और क्या स्थलयुद्ध सभी जगह उस समय एशिया वासियों की ही सेना का फिरंगियोंको मुख्य सहारा था। सम्वत् १५६८ में जब आलबूकर्क ने अदनपर आक्रमण किया था तब उनके साथ १७०० फिरंगो और ८३० देशी सेना थी। दो वर्ष बाद जब उन्होंने हरमुज पर हमला किया था उस समय ७०० देशी सेना उनकी पताकाके नीचे एकत्रित हुई थी। जल-युद्धके इतिहासमें भी देखा जाता है कि फिरङ्गी सरदार सोआरिज जब १५७२ में लोहित समुद्रकी ओर बढे थे तब उनके साथ ८०० हिन्दुस्थानी नाविक और ८०० इस देश वासियोंकी सेना थी। इस देशकी सेनायें बराबर फिरङ्गियोंके दलको पुष्ट करती रहती थीं। घुडसवारोंकी सेनामें इस देशका एक भी सिपाही नहीं था। इस देशके

सिपाही उस समय केवल पैदल सेना में काम करते थे।

उन दिनों भारतवर्ष में दास-प्रथा (Slavery) प्रचलित थी। फिरङ्गियोंको उस दास-व्योपारमें इस देशके जितने मनुष्य मिलते थे, उन्हें वे लोग पलटन ही में भरती करते थे। उस समयमें चार शिलिंग (तीन रुपये) होने से ही हिन्दुस्तान में एक दास खरीदा जा सकता था। एक लावन्यमयी सुन्दरी के खरीदने में भी तीन ही रुपया लगता था। इसीसे हम देखते हैं कि सम्वत् १५८६ में जब नानोबाकुन्हा अदन जीतनेको चले थे तब उनकी उस विशाल वाहिनीमें ८००० दास काम करते थे।* किन्तु कुछ दिन बाद फिरङ्गी-उपनिवेशों के अधिवासी लोग बड़े स्वेच्छाचारी पदातिक हो गये थे। इसीसे चतुर आलबूकर्क अलेकजण्डरकी तरह इस देशकी स्त्रियोंके साथ फिरङ्गी पैदलोंका विवाह कर देते थे। लिस्बनके राज-कोषसे उन नयी व्याही बहुओंको यथोचित अर्थकी भी सहायता मिलती थी और इसी तरहसे क्रूशका धर्म्म भी क्रमशः बढ़ता जाता था। धर्म्म-याजक लोग इस चालको खूब पसन्द करते थे और इस प्रकारसे व्याहे हुए मनुष्यो पर राजाकी भी अधिक कृपा रहती थी।

जब धीरे धीरे मनुष्योंकी संख्या बढ़ने लगी। तब फिरङ्गी लोग खाने पहिननेके मोहताज होने लगे। भूख हमेशा

---

* Danvers Portuguese in India

चालाक चाकरकी तरह काम करती है। उस भूखने इन असवर्णों का बड़े निठर समुद्री डाँकुओंके दलमें मिला दिया। वे लोग तब आस पासके राजाओंके निकट अपना अपना अस्त्र शस्त्र बेचकार लुण्ठन-व्यवसायमें नियुक्त हो गये थे।

फिरङ्गी लोग सदा अपने युद्ध-जहाजों पर ही निर्भर करते थे। उन लोगोंके युद्ध-जहाजोंनेही उन्हे भारतवर्षके वाणिज्यका एक छत्र सम्राट बना दिया था। पुर्त्तगालसे जितने जहाज आते थे उनको छोड़कर गोआ और डामनमें भी अच्छे और मजबूत जहाज निर्म्मित होकर फिरङ्गियोंके बलको पुष्टि करते थे। यहाँ तक कि 'कान्स्टन टाइना' नामका एक इस देशके जहाजने सतरह बार उत्तमाशा अन्तरीपकी प्रदक्षिणा की थी और पच्चीस वर्षों तक खूब मजबूत जहाज कहकर प्रसिद्ध था।

फिरङ्गी लोग एशियाके उपकूलमें साढ़े सात हजार कोस तक अपना अधिकार जमाकर गुलछर्रे उड़ाते थे। इसीसे जहाँ से जो चाहता वहींसे वे लोग शत्रु पर आक्रमण कर सकते थे। सुविशाल अनन्त सागर सर्व्वदा उनको रक्षा करता था। समुद्रकी शरणमें रहकर फिरङ्गी लोग मेघनाद को तरह शत्रुओंसे युद्ध करते, उनको हराते और फिर जरा भी असुविधा मालूम पड़नेसे क्षणमात्रमें दिङ्मण्डल (Horizon) के निकट अनन्त नीलिमामें लुक जाते थे। वे जहाँ लड़ाईमें जीतते वहीं किला बनाते और उसकी रक्षा

करते थे। और कहीं अमानुषिक अत्याचार करके और कहीं बन्दरोंकी तरह घुड़की दिखाकर यहाँके अधिवासियोंको वशमें करके पराधीनताकी पाशमें बाँध लेते थे। लोहित सागर से लेकर एक दम पूर्वके द्वीपों तक समस्त स्थान फिरङ्गियोंके भयसे कांपते थे। उनकी गतिको रोकनेवाली उस समय भारतवर्ष भरमें कोई शक्ति नहीं थी। पुर्त्तगाल-राजने भारतवर्षके प्रत्येक बन्दरकी परीक्षा कर ली थी। एक बन्दर से दूसरे बन्दरकी दूरी और दूर एक बन्दरमें जहाज बाँधनेकी सुविधा तथा असुविधा आदि सब हाल पूरा पूरा मालूम कर लिया था। अफ्रिकासे चीन और चीनसे जापान तक कोई स्थान पुर्त्तगालकी तीक्ष्ण परीक्षासे नहीं बचा था। इन्हीं सब तथ्योंने पुर्त्तगीजोंकी प्रतिष्ठाका पथ सुगम कर दिया था। वे लोग तुरन्त समझ गये थे कि, लोहित समुद्रके मुँह पर सिंहलके सिंहद्वार पर और मलक्काकी नहरके प्रवेश-मुख पर चौकस चौकीदार रखनेसे ही एशियाका वाणिज्य चिरकाल तक फिरङ्गियोंके चरण तले पड़ा रहेगा। फिरङ्गियोंके पास सुरक्षित दुर्ग थे। दुर्गोंमें अस्त्र शस्त्र और समुद्रमें अगणित युद्ध-जहाज थे। इन सब युद्ध-जहाजोंमें से अग्नि-मुख तोपें गरज गरज कर शत्रुओंका हृदय कँपा देती थी। इसके अतिरिक्त-पुर्त्तगीज़ोंका साहस भी अतुलनीय था। उन लोगोंने कौशलसे जो जोर जमाया था, साहसके बलसे उसकी रक्षा भी की थी। केवल कौशल (हिकमत) फैलाने से ही काम नहीं चलता।

पुर्त्तगीज़ लोग भारतके 'परस्पर विवाद' को मध्यस्थ कर के अथवा एक पक्षको दूसरे पक्षके विरुद्ध खडा करके और उसे सहायता देकर सर्व्वदा अपना उद्देश्य पूरा करते थे। फिरङ्गियोके इतिहासमें ऐसे दृष्टान्तोंकी कमी नहीं है। किन्तु इन सब चेष्टाओंके भीतर फिरङ्गियोका एक महामन्त्र देख पडता है। फिरङ्गियोने अपने स्वार्थके लिये कोई कार्य्य नहीं किया। उन लोगोका किया हुआ कार्य्य चाहें अच्छा हो चाहें बुरा सभी जन्मभूमिके चरणोंमें अर्घ्यकी तरह दे दिया जाता था। आलबूकर्कने जो भाईको मारनेकी सलाह देकर कालीकटके जमोरिनको मरवा डाला था, वह भी उस जन्मभूमिके कल्याणकी वाञ्छासे किया गया था, स्वार्थ साधन करनेकी इच्छासे नहीं।

विदेशी लोग इस देशमें आकर, वाध्य होकर, यहाँके रहने वालोंको अपनी सेनामें भरती करते थे। कारण वैसा न करनेसे चलताही नहीं था। फिरङ्गियोने जिस दिनसे भारतवर्षमें खड़े होनेको स्थान पाया था उसी दिनसे उन लोगोको इस देशके अधिवासियोंके द्वारा युद्ध-विभाग पुष्ट करना पडा था। उसके बाद मुगलोंके राज्यके पहिले, अर्द्ध शताब्दी तक,भारतवर्षमें जो अराजकता और विशृङ्खलता नृत्य करती थी, फिरङ्गियोंने उसीकी सहायता लेकर भारतकी सेनासे अपने दल को पुष्ट किया था। किन्तु मुगलो का जोर जबसे अच्छी तरह जम गया था तबसे प्रायः दो सौ वर्ष तक विदेशियोकी यह

हिकमत पहिलेकी तरह काम नहीं करती थी। मुगलोंका जोर टूटनेके बाद फिर उपरोक्त नीतिका अनुसरण किया गया।

उन्नीसवाँ अध्याय।

The plunder of the Moslem ships, tributes and ransoms from the coast chiefs, and above all, sea trade, formed from first to last the revenue of Portugal in the East.—Sir, W. W Hunter.

सैकड़ो योजन दूर रहने वाला पुर्त्तगाल हर साल इस देशमें युद्ध-जहाज भेजता था। हर साल लड़ाईके सामान यहाँ आते थे। उच्च श्रेणीके पुर्त्तगालवासी प्रतिवर्ष इस देशमें आकर वाणिज्य बढ़ानेकी चेष्टा करते थे। इन सब व्यौपारों और दुर्ग बनानेमें पुर्त्तगालका जो कुछ खर्च होता था भारतवर्ष में वाणिज्य करके वे लोग उससे बहुत अधिक लाभ करते थे। पुर्त्तगालकी निजकी जितनी आमदनी थी उससे इतने भारी खर्चका भार उठानेकी ताकत उसमें नहीं थी। विक्रम सम्बत् १५५४ से १६६८ तक ८०६ पुर्त्तगीज वाणिज्य-पोत (व्यौपारी-जहाज) वाणिज्य करनेमें लगे थे। भारतमें भेजने लायक एक व्यौपारी-जहाज तैयार करनेमें मल्लाह आदिका वेतन वगैर' लेकर उस समय ४०७६ पाउण्ड अथवा लगभग ४२७८८ रुपया खर्च होता था। इसके सिवा फिरङ्गी लोग युद्ध करके बहुतसे जहाज जीत भी लेते थे और थोड़े बहुत भारतवर्षमें भी तैयार होते थे। यदि हिसाब किया जाय तो देख पड़ेगा कि सौ वर्षमे प्रायः एक

सहस्र व्यौपारी-जहाज़ फिरङ्गियोंकी प्रतिष्ठाके लिये समुद्रमें फिरने लगे थे। यह सब देखने सुननेसे सहजही जाना जाता है कि भारतवर्ष की अथाह रत्न राशिको लूटकर किस प्रकार फिरङ्गी वनिये कुवेर बन गये थे। वास्कोडीगामाने जब प्रथम वार इस देशसे पुर्त्तगालको प्रत्यावर्त्तन किया था तब इस देशमें फिरङ्गियोका कुछ भी नहीं था, तथापि डीगामा के अभियानमें जो कुछ खर्च हुआ था उससे साठ गुना अधिक लेकर वे पुर्त्तगाल पहुँचे थे। सम्वत् १६०७ में केवरेल जब स्वदेशको लौटे थे तब "उनके साथ भी बहुत से हीरे मोती आदि थे" ऐसा कहकर फिरङ्गियोका इतिहास गर्व्व करता है। तीन वर्ष बाद आलबूकर्क भी आध मन मोती और चार सौ हीरेके टुकड़े लेकर— अपने देशको फिरे थे, इसके अतिरिक्त अन्यान्य चीज़ें तो थीं हीं।

सहज और सभ्य उपायोंसे केवल वाणिज्य करके फिरङ्गी लोग जो कुछ लाभ करते थे, लूट मार करके वे उससे बहुत अधिक प्राप्त करते थे। मुसल्मान अथवा हिन्दू राजाओंके व्यवसाई-जहाज़को देखतेही फिरङ्गी लोग उसे लूट लेते थे। इतिहासमें देखा जाता है कि उस समयको एक छोटी सी व्यवसाई नावको लूटकर फिरङ्गियोंने अन्यान्य बहुमूल्य चीजों के साथ डेढ सौ बहुमूल्य मोती पाये थे। तीन वर्ष बाद विक्रम सम्वत् १५५८ में उन लोगोंने एक नावमें देव मूर्ति पायी थी। वह मूर्त्ति सोनेकी बनी थी। उसका वजन प्राय १५

सेर था, ऐसा इतिहासमें लिखा है। मूर्त्ति की दोनो आँखें भास्कर मणिकी बनी हुई थीं। एक बड़ासा हीरेका टुकड़ा कौस्तुभ मणिकी तरह देवताकी छातीपर जड़ा था। उसकेहाथ पैर आदि सब हीरे मोतियोंसे खचित सोनेसे बने अङ्गोंसे सुशोभित थे।

भारतके हीरा, मोती, मणि, चन्दन और इलायची आदिके बदलेमें पुर्त्तगालसे इस देशमें चाँदी आती थी और उसीके साथ काँच, मुँह देखनेका शीशा या आयना, मूँगा, छुरी, कैंची और रङ्गीन कपड़े आदि भी उस देशसे इस देशमें आते थे। अरब और मिस्रसे पुर्त्तगाल अफीमके व्योपारमें वेहद लाभ करता था। चीन देशके साथ भी आठ सौ वर्षसे अफीमका कारबार हो रहा था। आल्बूकर्कके समयमें मलक्कासे जितने चीनके जहाज़ अपने देशको लौटते थे उनमें अफीमही रहती थी। आलबूकर्कने देखा कि भारतवर्षमें भी अफीम पैदा हो सकती है। उन्होंने झट सिद्धान्त कर लिया कि या तो अफीमका व्योपार ही बन्द कर देंगे, नहीं तो उसे केवल फिरङ्गियोंके हाथका रोजगार बना लेंगे। किन्तु आलबूकर्ककी वासना पूरी न हुई, उन्होंने अफीमकी ढूँढ़ी पुर्त्तगाल ही में आबाद करना आरम्भ किया। वे जानते थे कि भारतवासी लोग अफीमके बिना एक दिन भी जीवित न रह सकेंगे। चतुर आलबूकर्कने यह भी पहलेही समझ लिया था कि अफीमकी आमदनी होनेसे हर साल एक जहाज अफीम बिकेगी। वैसाही हुआ भी।

पुर्त्तगालके साथ जो भारतवर्षका वाणिज्य-सम्बन्ध था उसके सिवा फिरङ्गी बनिये मालाबार तीरसे लेकर पारस्य उपसागर और मलक्कासे जापान तक सब जगहके बन्दरोंमें वाणिज्य करते फिरते थे। उस वाणिज्यमें उन लोगोंको अपरिमित धन मिलता था। पुर्त्तगाल और हिन्दुस्तानके व्योपारमें एकही जहाजसे पुर्त्तगाल-राजने २२५०००० बाईस लाख पचास हज़ार रुपया (१५०००० पौण्ड) पाया था। इसके सिवा जितना मणि माणिक आदि मिला था उसका तो कुछ हिसाब ही नहीं! इतिहास बताता है कि गोआसे चीन तक एक बार जाकर एक जहाजी सरदारने एकही जहाज़से ३३७५०० तीन लाख सैंतीस हज़ार पाँच सौ रुपया (२२५०० पौण्ड) लाभ किया था। इसके सिवा उसने अपनी निजकी चीज़ोंको बेचकर भी उतना ही पाया था।

अब देखिये लूटमार करके फिरङ्गी बनिये कितना लाभ करते थे। विद्रू उफरिया नामक एक सरदारको दो वर्षकी लूट मारमें जितनी चीज़ें मिली थी उनको बेंचकर उसने प्राय: १६५०००० सोलह लाख पचास हज़ार रुपये (११०००० पौण्ड) प्राप्त किये थे"। यह कहानी सुनकर सहसा विश्वास करनेकी इच्छा नहीं होती, किन्तु यह कहानी विधाताके निष्ठुर अभिसम्पातकी तरह सत्य है।

समुद्र किनारेके राजा लोग सर्व्वदा धन देकर फिरङ्गी

* Dauvers Portuguose in India

बनियोंको सन्तुष्ट करते थे। केवल गोआ, डिउ और मलक्का में जो महसूल (शुल्क) मिलता था और समुद्रके तीर परके राजा लोग जो धन देते थे वह जोड़कर ६०००००० साठ लाख रुपये (४०००००० पाउण्ड) होते थे। पुर्त्त-गाल-राज उसमेंसे ३३७५००० तेंतीस लाख पचहत्तर हज़ार रुपये (२२५००० पाउण्ड) ले लेते थे। पुर्त्तगीज लिखित पुर्त्तगालकी इतिहास से जाना जाता है कि फिरङ्गी-राज हर साल इसका दूना धन प्राप्त कर सकते थे। किन्तु उनके आधीन जो विचक्षण चाकर लोग थे उनके मारे वैसा नहीं होने पाता था। सभी लोग अन्तमें भारतवर्षसे बिना परि-श्रम मिलने वाले धनको लेनेकी चेष्टा करने लगे थे; उसीसे पुर्त्तगाल राजकी आमदनी कुछ दिन बाद कम हो गई थी।

राजा इमैन्युएलने जब पहले पहल उत्तमाशा अन्तरीप का रास्ता पाया था, तब वे अपनी प्रजाके साथ भारतवर्षके वाणिज्यमें शामिल हो गये थे। प्रति वर्ष जितना लाभ होता उसका चतुर्थांश लेकर वे तृप्त हो जाते थे। किन्तु कुछ काल बाद जब देखा गया कि प्रजा इस भारी वाणिज्यसे अधिक लाभ नहीं कर सकती तब राजा स्वयम् उसे अपने नामसे चलाने लगे। मसाले वगैरःसे हर साल ६७५००० छः लाख पचहत्तर हज़ार रुपये (४५००० पाउण्ड) आने लगे और साधारण वाणिज्यसे भी आय हुई। हर साल २२५०००० बाईस लाख पचास हज़ार रुपये (१५०००० पाउण्ड), इसके

सिवा लुण्ठन-व्यवसायमें जो धन मिलता था उसका और राज-कर या महसूल आदिका भाग लेनेमें राजा स्वयम् कुण्ठित नहीं होते थे। उसमें उन्हें प्रति वर्ष ३३७५००० तेतीस लाख पचहत्तर हजार रुपये (२२५००० पाउण्ड) मिलते थे ; उसीसे देखा जाता है कि भारतवर्ष से पुर्त्तगाल-राज हर साल ६३००००० तिरसठ लाख रुपये (४२०००० पाउंड) प्राप्त करते थे। फिरङ्गी ऐतिहासिक लिखते हैं कि, युद्ध आदिके खर्च में ही राजाका सब धन चुक जाता था।

बीसवाँ अध्याय।

फिरङ्गियोंकी भारतीय शक्तिका पतन।*

"नीचैर्गच्छत्युपरिच दशाचक्र नेमिक्रमेण" यह इतिहास का सिद्धान्त अप्रमेय है। जिस द्रुत वेगसे भारतवर्षमें फिरङ्गियोंका उत्थान हुआ था उसी तेजीसे उनका पतन भी हुआ। इस वेगवान पतनका कारण दो भागोंमें विभक्त किया जा सकता है। एक तो वाह्य वा बाहरी और दूसरा आन्तरिक वा भीतरी। सम्वत् १६३६ (ई० सन् १५८०) में पुर्त्तगीजो के साथ स्पेन (Spain) का जो मेल हुआ था वही फिरङ्गियोंके पतनका मुख्य बाहरी कारण था। महाराज द्वितीय फिलिप (Phillip II) के राज्याभिषेकके साथही पुर्त्तगालके साथ डच और अँगरेजोंका युद्ध आरम्भ हुआ। ऐशियाके वाणिज्य-द्रव्यके लिये जो सौदागर लोग आमस्टरडम (Amsterdam) और लन्दनसे लिस्बनमें आते थे उनका आवागमन एक दम बन्द कर दिया गया। अतएव उन लोगोंने स्वयम पूर्वमें आकर

---

* यद्यपि यह छोटा सा निबन्ध पुर्त्तगीजोंके आद्योपांत इतिहासका यथायोग्य परिचय नहीं द सकता और इसमें उस प्रकारकी चेष्टा भी नहीं की गई है, तथापि जिस जातिकी बढतीका कुछ मुख्य २ हाल पाठकोंने पढा है उसके पतन का भी थोडा सा विवरण देना अनुचित न समझा जायगा।

माल मसाला ले जानेका विचार किया और सम्वत् १६५१ (ई० सन् १५८५)में डचोंका प्रथम जहाज उत्तमाशा अन्तरीप पहुँचा। सम्वत् १६५७ (ई० सन् १६०१) में अँगरेजोंके व्यवसाई जहाजो ने भी उसका अनुसरण किया। यहाँपर यह स्मरण रखना चाहिये कि, ये सब जहाज डच और अँगरेज़ व्यौपारियों के थे, इनमें से कोई भी राजाकी तरफ़ से नहीं भेजा गया था। पुर्त्तगीजो ने यहाँ जबरदस्तीसे घुस आनेवालों को निकाल बाहर करने के लिये बहुत चेष्टा की, किन्तु किसी तरह समर्थ न हुए।

इस असामर्थका कारण फिरङ्गियोंके पतनके भीतरी कारणों में पाया जाता है। स्पेनका मेल ही फिरङ्गियोके प्रतिस्पर्धियोंको पूर्वी समुद्र में लाया था, किन्तु उन प्रतिस्पर्धियो की जीत खास पुर्त्तगीजोंकी बलहीनताके कारण हुई थी। उस बलहीनता का कारण पुर्त्तगीज् जातिका चय होना था। केवल तीस लाख मनुष्योंकी बस्तीवाला छोटासा देश पुर्त्तगाल प्रतिवर्ष तीन तीन और चार चार हजार योद्धाओंसे भरे हुए जहाज़ोंको पूर्वमें भेजा करता था। इन योद्धाओंमें से थोड़े से मनुष्य ही लौट-कर अपने देशको पहुँचते थे। कितने तो युद्धमें, कितने जहाज डूबने से और कितने जलवायुके दोषसे मर जाते थे, और जो लोग बचते थे वे भारतवर्ष की निम्नश्रेणी की स्त्रियों के साथ विवाहित होकर चिरकालके लिये भारतवासी बनने को उत्साहित किये जाते थे। ईसाकी सोलहवी शताब्दी के

आदिसे लेकर अब तक बराबर पुर्त्तगाल से भारी भारी चुने हुए योद्धा भारतवर्षको ओर धाराकी तरह बहते चले आते थे। उन योद्धाओं के बदले में पुर्त्तगालको धन अवश्य मिलता,था किन्तु धन कदापि मस्तिष्क और माँसपेशी (brain & muscles) का स्थान नहीं पा सकता। इसके सिवा पुर्त्त-गीजों की लोक-संख्या चीण हो जानेसे उनके गुण भी शीघ्रही विलुप्त हो गये थे। क्या योद्धा,क्या नाविक और क्या राज-कर्मचारी सभी क्रमशः अधःपतित होने लगे थे। सम्वत् १६२६ (ईस्वी १५७०) में गोआके आक्रमण में ही फिरङ्गियो के प्रशंसनीय साहस का अन्त हो गया था। उसके बाद पुर्त्तगीज वीरों की वीरता का एक भी उल्लेख नही पाया जाता। आल्बूकर्क के मरने के बाद उनकी महाराजकीय कल्पना दूर कर दी गई और वाणिज्य-विस्तार तथा ईसाई धर्म्म प्रचार के स्थानपर विजय और साम्राज्य की परिकल्प-नाये स्थापित की गई थीं।

एशियावासी पुर्त्तगीजों का अन्तिम इतिहास उनके द्रुत विनाश की कहानीसे परिपूर्ण है। सम्वत् १६५८ (ईस्वी १६०३) और सं० १६८५ (ईस्वी १६३८) में डचों ने गोआको घेर लिया था। सम्वत् १७१२ (ईस्वी १६५६) में उन लोगोंने कानानोर से और सम्वत् १७१७ (ईस्वी १६६१) में क्विलन के बन्दर नोगापाटम * और कायनकोलमसे तथा सम्वत् १७१९

* मद्रास प्रान्तके तंजोर जिलेमें (१० अंश ४५' कला ३१ विकला उत्तर

(ईस्वी १६६३) में कनानोर और कोचीन से फिरङ्गियों को निकाल बाहर कर दिया। डचों की विजय केवल भारतवर्ष में ही सीमावद्ध नहीं थी। उन लोगोंने सम्वत् १६७१ (ईस्वी १६१८) में जावा द्वीप (Isle of Java) में बटेविया (Batavia) की नींव डाली और सम्वत् १६८६ (ईस्वी १६४०)में मलक्का अधिकार करके समस्त व्यंजन उपद्वीपों(spice Islands) का अपने नये राज्यमें मिला लिया। सम्वत् १७-१४ (ईस्वी १६५८) में जकिनापातम के लुट जानेके बाद उन लोगोंने सीलोन (लंका) पर भी अपना पूरा अधिकार जमा लिया था। अँगरेज् लोग डचोंसे कुछ पीछे क्षेत्रमें उतरे थे। सम्वत् १६६७ (ईस्वी १६११) में सर हेनरी मिडिल्टन ने कैम्बे में पुर्त्तगीज़ों को पराजित किया। इसके बाद सम्वत् १६७१ (ईस्वी १६१५) में फिरङ्गी लोग सूरतके बन्दर स्वाली में कप्तान बेष्ट (Captain Best) से हारे। इसी तरह धीरे धीरे डच और अंगरेज़ व्योपारियोंने थोड़े ही काल में पूर्व देशको आच्छादित कर लिया। ईसाकी सत्रहवीं शताब्दी के मध्यमें एशिया के वाणिज्य के साथ फ़िरङ्गियो का सम्बन्ध एक दम छूट गया। पुर्त्तगीज़ों की पूर्वीय शक्तिका नाश करनेवाले अँगरेज नहीं थे, वह सम्राट शाह जहाँ थे।* उन्होंने सम्वत् १६८५ (ईस्वी १६२८) में हुगली

अक्षांश और ७९ अंश ५३ कला २९ विकला पूर्व देशान्तरमें) ताग पत्तन एक कसूबा तथा प्रसिद्ध बन्दर गाह और रेलवे ष्टेशन है।

* उसे बंगालकी बर्दवान विभाग में (कलकत्तेसे १२ कोस पश्चिम) रेलके

को अपने अधिकार में करलिया और एक सामान्य लड़ाई के बाद १००० एक हज़ार फिरङ्गियों को कैद कर लिया। उसके बाद सम्बत् १६७८ (ई०सन् १६२२)में परसियाके शाह अब्बासने अरमुज (Ormuz) को लूटा। स० १७२६ ई० १६७०, में थोड़ेसे अरबियोंने मस्कटसे आकर डिउ बन्दर को लूटा। इसी डिउ के दुर्गने फिरङ्गो सिलवीरा और मस्करेनूइस Silvi-era & Mascorenus) के आधीन रहकर मुसल्मानोकी महान शक्ति का जल और स्थल युद्धोमें समान प्रतिरोध किया था।

इसी समय महाराष्ट्रियो ने भी फिरङ्गियोके भारतवर्षीय राज्यको लूटना सहज समझा और सम्बत् १७८५ (ई० सन् १७३८) में इन दुरद्दर्ष योद्धाओ ने बेसिन को लूटा और साथ ही साथ गोआको दीवारो तक अपना आक्रमण बढ़ाया। अठारहवीं शताब्दी में पुर्त्तगीजो ने महाराष्ट्रियो के हाथसे अपने स्वत्त्व की रक्षा करनेके लिये जी जानसे चेष्टा की और उसमें वे लोग कृतकार्य्य भी हुए। इस महान चेष्टासे गोआ का सूबा बहुत बढ़ गया। अन्तमें यह बात स्मरण रखने

ह शमसे दो मील दूर हुगली नदीके दहिने अर्थात पश्चिमी किनारे पर जिलेका सदर स्थान हुगली एक कस्बा है। पुर्तगीजोंने सन् ईस्वी १५३७ सम्वत् १५९३ में इसको बसाया और पीछे हुगलीके वर्त्तमान जेलखाने के निकट एक किला बनवाया जिसके चिन्ह अबतक विद्यमान हैं। ई० सन् १६३२ (सम्वत् १६८८) में दिल्लीके बादशाह शाहजहाने पुर्त्तगीओंको शिकायत सुनकर हुगलीमें एक बडी सेना भेजी। किला तोपोंसे उड़ा दिया गया। एक हजार से अधिक पुर्त्तगीज मारे गये और लगभग १००० स्त्री पुरुष आगरे भेज दिये गये। वह मुसलमान बनाये गये।

योग्य है कि सम्वत् १७१७ (ई० सन् १६६१) में फिरङ्गियों ने बम्बई उपद्वीप व्रगञ्जा की कैथराइन (Catharine of Braganza) के दहेज में इंगलैण्ड को समर्पण कर दिया।

फिरङ्गियोका बचा खुचा स्वत्व गोआ, दामन और डिउ आदि अब इतने शक्तिहीन हो गये है कि अँगरेज के भारतीय साम्राज्य के विरुद्ध वे टिक हो नहीं सकते। वे अब पुर्त्तगीजों के लाभ के लिये नहीं, वरन् केवल उनको गतकालीन विजय के स्मारक की तरह पर रक्षित है। सम्वत् १८३४ (ई० सन् १८७८) में पुर्त्तगीजों के साथ एक सन्धि हुई थी। उसमें पुर्त्तगोजों ने अँगरेज् सरकार को निमक बनाने और राज्यकर अदा करनेका अधिकार समर्पण कर दिया। उसके बदले में अंगरेजो ने उन्हें वार्षिक चार लाख रुपया देना स्वीकार किया। यह धन गोआके निकटवर्त्ती मर्मगाँव नामक स्थानमें रेलकी सडक बनाने के लिये बन्धक के तौर पर रख दिया गया। मर्मगाँव में एक बडा सुन्दर बन्दर है। वह सम्भवत कुछ दिनों बाद बिलारी और उसके निकटवर्त्ती ब्रिटिश (अँगरेजी) राज्यमें उत्पन्न होनेवाली रूईकी रफ्तनीका बन्दर बनाकर अपनी समृद्धिको बढावेगा।

फिरङ्गियोंके गतकालीन आधिपत्यका एक मनोरञ्जक ध्वंशावशेष यह था कि, उन लोगों को भारतवर्ष भरमें रोमन कैथलिक प्रधान धर्म्माध्यक्ष के नियुक्त करने का अधिकार था। यह अधिकार सोलहवीं शताब्दी में स्वाभाविक था किन्तु

उन्नीसवीं शताब्दी में वह अनर्थक होगया। इस अधि-कार के सम्बन्ध में पुर्त्तगाल-राज के साथ पोप महाशय का जो विवाद उपस्थित हुआ था, वह थोड़े दिन हुए एक नियम द्वारा तय कर दिया गया है।

भारतवर्षीय पुर्त्तगीजोंके बारेमें तुहफ़तउल मुजाहिरीन नामक ग्रंथमें एक सुविज्ञ ग्रंथकार शेख जीनउद्दीन लिखते हैं :—

"फिरङ्गियों का सर्व्वसाधारणपर अत्याचार और खास-कर मुसल्मानोंके साथ विद्वेष इतना बढ़ गया था कि उससे घबराकर देशभर के अधिवासी उद्विग्न और उन्मत्त हो गये थे। यह भयङ्कर अत्याचार कोई आठ वर्ष तक बराबर चलता रहा और अन्तमें मुसल्मानों को दुरावस्था की शेष सीमा तक पहुँचाकर शान्त हुआ। उस समय मुसल्मा-नोंमें इतनी शक्ति नहीं थी कि वे लोग अपने शत्रुओंको विता-ड़ित कर सकते अथवा उनके अत्याचार से अपनी रक्षा करते।

जिन मुसल्मान राजा बाबुओं के पास भारी भारी फ़ौजें और यथेष्ट युद्धका सामान था वे लोग ऐसे ऐश आराम में मस्त थे कि अपने दीन हीन स्वदेशवासी और स्वजाति की आपत्ति की ओर बिलकुल ध्यान ही नहीं देते थे, यहाँ तक कि ये ज़ुल्मी काफ़िर (नास्तिक) हाथ से अपने देश और जाति धर्म्मकी रक्षा के निमित्त एक पैसा भी देनेको प्रस्तुत नहीं होते थे।"

"फिरङ्गियों ने मुसल्मान-धर्म्मको नाश करने और इस्लाम के सेवकोंको खृष्टान धर्म्मावलम्बी बनाने के लिये, क्या साधु क्या असाधु,क्या छोटे क्या बड़े, क्या शक्तिशाली और क्या बलहीन किसी को भी कष्ट देनेमें त्रुटि नहीं की थी (ईश्वर ऐसी आपत्ति से सर्व्वदा हमारी रक्षा करे)। इस अमानुषिक अत्याचार के रहते भी फिरङ्गी लोग ऊपर से मुसल्मानों के प्रति बड़ा शान्त भाव प्रदर्शित करते थे, इसका कारण यह था कि समुद्र-तीर के बन्दरों के मुख्य भागोंमें मुसल्मान ही वास करते थे अन्तमें यह बात भी कहने योग्य है कि फिरङ्गी लोग केवल मुसल्मानों ही से द्वेष और घृणा करते थे और मुसल्मानों ही के धर्म्म की अवज्ञा करते थे। नायर और पैगानों से वैसी घृणा नहीं करते थे।*

काँजीवरम के वेङ्कटाचार्य्य नामक एक ब्राह्मण ने सोलहवीं शताब्दी में विश्वगुणादर्श नामक अपने संस्कृत पद्य ग्रन्थमें पुर्त्तगीजोंके सम्बन्ध में लिखा है :—

"हूना (फिरङ्गी) लोग बड़ नीच, गर्हनीय और निर्दय होते हैं। वे लोग ब्राह्मणोंका लेश मात्र भी मान नहीं करते और किसी प्रकार के पूजा पाठ की पवित्रता को नहीं मानते। उनके पापों का पारावार नहीं है, किन्तु वे लोग संयमी और सत्यप्रिय होते हैं। उनलोगोंका शिल्प विद्या में ज्ञान और नियम (Law) का मान प्रशंसनीय है।"†

---

* Tuhfut ul Mujahideen P P 6,7,10 109, 120

† यह ग्रन्थ निर्णय सागर प्रेस बम्बईमें छपा है और वहींसे मिल भी सकता है।

उपसंहार ।

यद्यपि इस छोटे से ग्रन्थ में हमसे जहाँ तक हो सका है हमने थोडेही में पुर्त्तगीजोंके भारत सम्बन्धी इतिहासका पूरा पूरा दिग्दर्शन किया है किन्तु इस समय देशकी अवस्था कुछ शोचनीय होनेके कारण हमारी सम्पूर्ण इच्छाएँ पूर्ण नहीं हुईं। जो हो पुर्त्तगीजोंके सम्बन्धमें हम जो कुछ लिख सके है उससे अधिक जानने की जिनकी इच्छा हो वे निम्नलिखित पुस्तकों की सहायता से जान सकते है ,—

(1) *A* Tentative list of books and some mss relating to the History of the Portuguese in India proper by Dr A C Burnell Mangalore 1880 P 131

(2) The Commentaries of Albuquerque by Braz de Albuquerque published in 1557 Reprinted in 1576 and Republished in four Volumes in 1774 Translated into English for the Hakhyt society by Walter de Gray Birch in four volumes 1875—1884

(3) Carlas do Affonse de Albuquerque, seguid as di documentos que as elucidam. Edited by Raymundo Antonio de Bulhao Pato Published in 1884 under the direction of Academia Real das sciencianus de Lisbon

(4) Asia - dos Feitos que as Portuguezes fizeram no des cobrimento e conquista dos mares e Terras do Oriente By Joao de Barros It is written in imitation of Livy, and is divided into Decades The first Decade was published in 1552, the second in 1555, the third in 1563, and the fourth after author's death in 1615, and it

carries the history down to 1539 The best edition is that in nine volumes, Lisbon, 1777 –78

(5) Lendas da India by Gasper Corria published at Lisbon in four volumes, 1858—64 A portion of this work has been *translated by Lord Stanley of Alderley for the* Hakhuyt society, under the title of the three Voyages of Vasco da Gama, and his Viceroyalty, *1869*

(6) Historia as Descobrimento e Conquista da India pelos Portuguezes, Fernao Lopes de Castanheda

(7) Commentarines Rerum Geslarum in India citra Gangem a Lusitanis, Louvain, 1539 , this is a small early work

इन उपरोक्त पुस्तको के सिवा और भी कई एक छोटे मोटे ग्रन्थ हैं जिनमें पुर्त्तगीजों के भारतवर्ष सम्बन्धी पुरावृत्त विवरण का जानने योग्य सग्रह किया गया है , किन्तु इन्ही सात ग्रन्थोंके मुख्य समझे जानेके कारण हमने यहाँ पर केवल इन्होका नाम लिखा है। इस पुस्तक की भूमिका में जिन पुस्तकों का नाम दिया गया है उनसे भी पुर्त्तगीजों का बहुत हाल मालुम हो सकता है।

Perfect I call Thy plan,
Thanks that I was a man !
Maker, remake, complete,
I trust that Thou shall do.

Browning

रामनाथ पाँडे।

संयुक्तांश।

कान्नानोर वा कननूर।

मद्रास अहातेके मालाबार जिलेमें (११ अंश, ५१ कला, १२ विकला उत्तर अक्षांश और १५ अंश, २४ कला, ४४ विकला पूर्व्व देशान्तर में) समुद्रके किनारे एक तालुकेका सदर स्थान और फौजी स्टेशन कननूर है। कननूर एक प्राचीन बन्दर गाह है। इस बन्दर गाहमें किनारेसे २ मील दूर लङ्गरकी जगह है।

सन् १८८१ को मनुष्य-गणनाके समय फ़ौजी छावनीके साथ कननूर कसबेमें २७४१८ मनुष्य थे, अर्थात् १३२७३ मनुष्य और १४१४५ स्त्रियाँ। इसमें १२५६८ मुसल्मान, ११७०७ हिन्दू, ३११० क्रस्तान, ३० पारसी, और ३ जैन थे।

कननूरके चारों ओर पहाड़ियाँ और तङ्ग घाटियाँ और जगह जगह पर नारियलके वृक्षोंके झुण्ड हैं। एक अन्तरीप पर किला है, जो अंगरेजी अमलदारी होनेके पीछे मज़बूत किया गया है। ३० फीटसे ५० फीट तक ऊँची एक खड़ी पहाड़ीके किनारी पर अँगरेज़ी अफ़सरोंके बहुतसे बँगले बने हैं। कननूर में सरकारी कचहरियाँ जेलखाने, स्कूल, अस्पताल, कष्टम हौस, बहुतसे आफ़िस, बहुतेरी मसजिदें (जिन

में दो प्रसिद्ध है) और अनेक मिशन हैं। छावनीमें यूरो-पियन और एक देशी पैदलकी रेजीमेन्ट अर्थात पल्टन रहती है। कननूरका पवन पानी मुलायम, एक रस तथा स्वास्थ्य-कार है।

इतिहास—सन् १४९८ में पुर्त्तगाल का वास्कोडीगामा कननूरमें आया। उसके ७ वर्ष पीछे उसने वहाँ एक कोठी बनाई। सन् १६५६ में हालेण्डवाले कनानूर में बसे। उन्होंने अपनी रक्षाके लिये कनानूरके वर्त्तमान किलेको बनवाया। सन् १७६६ में मैसूर के हैदरअलीने हालेण्डवालोंसे कनानूर का किला छीन लिया। सन् १७८४ में अँगरेजोंने कनानूर को ले लिया और वहाँका राजा ईष्ट इण्डिया कम्पनीके आ-धीन हुआ। उसके ७ वर्ष बाद अँगरेजोंने फिर कनानूरको लेकर अपने राज्यमें मिला लिया।

कोचीन।

समुद्रके बन्दर गाहके पास मदरास अहातेके मालाबार जिलेमें कोचीन तालुकेका सदर स्थान कोचीन क़सबा है। कोचीनके बन्दर गाहसे साप्ताहिक आगबोट सीलोनके कोल-म्बोको जाते हैं। किनारेसे डेढ़ मील दूर जहाजके लंगरका स्थान है। रेलवे स्टेशन तुतिकुडीसे अथवा कालीकटसे आगबोट द्वारा कोचीन जाना होता है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय कोचीन क़सबेमें

१७६०१ मनुष्य थे, अर्थात् ८७६८ क्रस्तान, ४७१६ हिन्दू ३०९० मुसल्मान और २७ यहूदी।

(२) कोचीन क़सबेमें सरकारी कचहरियाँ, जेलखाने, अनेक आफ़िस, बहुतेरे स्कूल तथा गिरजे और हालेण्डवालों की बहुत सी पुरानी इमारतें हैं। अँगरेज़ी कोचीन और देशी राज्यके कोचीनकी सीमाके भीतर कस्टम हौस है। पुराने क़िलेकी अब कोई निशानी नहीं है। उसकी जगह पर लाइट हाउस बना है। उसके पास यूरोपियन लोगोंके बँगले हैं। बन्दर गाहमें जहाज़ बनाये जाते हैं।

(३) समुद्रके पास उत्तरसे दक्षिण तक १२ मील लम्बी और १ मीलसे सवा मील तक चौड़ी भूमि समुद्रके खाल और धारोंकी खाड़ियोंसे बनी है। उसके उत्तरके किनारेके पास कोचीन क़सबा है। उसके उत्तर एक टापू है। पहिले कोचीन क़सबा कोचीनके राज्यकी राजधानी था। किन्तु अब अँगरेज़ी ज़िले मालाबारमें है। इसके निवासियोंमें आधेसे अधिक क्रस्तान हैं।

इतिहास—कहावतसे विदित होता है कि सन् ५२ ईस्वी में सेन्ट टामसने कोचीन में जाकर उन क्रस्तानोंको बसाया जो नसरानी मापिला कहलाते हैं। ऐसा भी प्रसिद्ध है कि यहूदी लोग सन् ईस्वीके पहिले वर्ष में उस जगह बसे जिस जगह पर वर्त्तमान समय में उनकी बसती है। पीछे उन्होंने क्रम क्रमसे अन्य स्थानों में अपने मुक़ाम क़ायम किये। ताँबेके

पत्रोंके लेखोंसे ज्ञान पड़ता है कि ८ वीं सदी में यहूदी और सीरियन कोचीनमें बसे थे ।

सन् १५०० में पुर्त्तगालके पुर्त्तगीज लोग कालीकट पर गोले चलानेके पश्चात् कोचीनमें उतरे और जहाज़ पर मिर्च लादकर पुर्त्तगालको फिर गये। सन १५०२ मे वास्कोडीगामा अपनी दूसरी यात्रामें कोचीनमें आया। उसने वहाँ एक कोठी नियत की। सन् १५०३ में आलबूकर्क कोचीन मे पहुँचा, जिसने वहाँके क़िलेको बनवाया। हिन्दुस्थान में पहिले पहिल वही यूरोपियन क़िला बना था। कालीकटके राजा जमोरिनने कोचीन पर आक्रमण किया, किन्तु पुर्त्तगालवालोंने उनको खदेड़ दिया। सन् १५२५ में वह क़िला बढाया गया। सन् १५७७ में पहिले पहिल कोचीन में किताब छापी गई। उससे पहिले भारतवर्षमें कोई किताब नही छपी थी। सन् १६१६ के कई वर्ष बाद पुर्त्तगीजोंकी रायसे कोचीनमें अँगरेज़ी कोठी बनी। सन् १६६२ में हालेण्डवालोने पुर्त्तगीजोंसे कोचीन क़सबा और क़िला छीन लिया। अँगरेज़ लोग दूसरी जगह चले गये। हालेण्डवालो ने कोचीनमें यूरोपियन तरीके पर अच्छी अच्छी इमारतें बनवाईं। उन्होंने वहाँ सौदागरीकी बड़ी उन्नति की। सन् १७७८ में उन्होंने फिरसे क़िलेको बनवाया और क़िलेको बगलोमें खाई बनवाई। सन् १७९५ में अँगरेज़ी मेजर पेटरीने आक्रमण करके हालेण्डवालोसे कोचीन ले लिया। सन्

१८०६ में अँगरेजोंने कैथेड्रलको तोपोंसे उड़ाकर किले और उत्तम इमारतोंका विनाश कर दिया। सन् १८१४ की सन्धिके अनुसार अँगरेजोंको कोचीन मिल गया तबसे वह इन्हींके अधिकारमें है।

कोचीन कसबेसे डेढ मील दक्षिण राजाका कोचीन कसबा है उसमें राजा सरवीर केरल वर्मा नामक के, सी, आई, ई, उपाधिधारी एक क्षत्री राजा राज्य करते है। उनकी अवस्था ४४ वर्ष की है। महाराज न्याय शास्त्रके पूरे पण्डित है और उनको शास्त्रार्थका बडा शौक है। उनके राज्यसे १६१८००० रुपये मालगुजारी आती है, जिसमेंसे २००००० रुपया अँगरेजी गवर्नमेंण्टको राज-कर दिया जाता है।

राज्यके जङ्गलोंमें बेश-कीमती लकडी होती है। पहाडियोंमें अनेक भाँतिकी दवा, रङ्ग तथा गोंद और बहुत हिस्सो में इलायची होती है। जङ्गलोंमें बहुतसे हाथी भालू, साँभर बाघ, तेंदुए, और भाँति भाँतिके हरिन रहते है।*

गोआ।

बम्बई से कुछ दक्षिण की ओर समुद्र के किनारे पर (१५ अंश, ३० कला उत्तर अक्षांश और ३७ अंश ५७ कला पूर्व

---

* राजा कोचीनका विशेष हाल जानना हो तो बाबू साधुचरण प्रसाद कृत "भारत भ्रमण" चौथा खण्ड देखिये। इसका मूल्य २) है। खीगेश्वर यन्त्रालय काशीमें मुद्रित हुआ है।

देशांतर में गोआ नगरी पुर्त्तगीजोंके हिन्दुस्थान के राज्य की राजधानी है। वास्तव में तीन क़सबोंका नाम गोआ है। पहिला गोआ, पुराना गोआ और पञ्जिम। इनमें से पहिला गोआ जो ज्वारी नदीके किनारे पर कदंब वंशके राजाओं द्वारा बनाया गया था, मुसल्मानों के आक्रमण से पहिले हिन्दूओं का पुराना शहर था, किन्तु उसकी इमारतों की अब कोई निशानी नहीं है। दूसरा गोआ जिसको लोग पुराना गोआ कहते हैं पहिले गोआ से लगभग ५ मील उत्तर है। उसको वास्कोडीगामा के हिन्दुस्थान में आनेसे १८ वर्ष पहिले (सम्बत् १४७८) सन् ई० १५३५ में मुसल्मानों ने बसाया। उस प्रसिद्ध शहर को जब पुर्त्तगाल वालो ने जीता तब वह पुर्त्तगीजों के एशिया के राज्य को राजधानी हुआ। १६ वीं सदीमें वह खूब बढा चढा था, किन्तु पीछे महामारी से मनुष्य-संख्या घट जानेसे और पुर्त्तगाल गवर्नमेंण्ट का सदर स्थान पञ्जिम होनेके कारण वह शहर खँडहर हो गया। परन्तु अबतक वह हिन्दुस्थान के रोमन कैथोलिक पादड़ियोंका सदर स्थान बना है। वहाँ अब जङ्गल जम गया है, गिरजों और पादड़ियो के मकानो के सिवा और कुछ नहीं है। उनमें चार पाँच गिरजे बे-मरम्मत पडे हैं। सन् ई० १८८० में पुराने गोआ में केवल ८६ मनुष्य थे।

पञ्जिम—पञ्जिम को नया गोआ भी कहते है। मोरमू (मर्म) गाँव से ४ मील उत्तर पञ्जिम शहर तक अच्छी सड़क

बनी है। समुद्रके पासकी एक जमीन की पट्टीके ऊपर मँडावी नदीके बाँये किनारेपर उसके मुहाने से लगभग ३मील दूर पुर्त्तगालवालों के राज्यका सदर स्थान पञ्जिम है, जिसमें सन् १८८१ में ११८५ मकान और ८४४० मनुष्य थे और इस समय लगभग ६५०० मनुष्य हैं जिनमें से आधे से अधिक लोग देशी क्रस्तानों के वंशधर हैं। पञ्जिम के बीच वाले मुहल्ले से रिवंदर शहर तली तक लगभग ३०० गज लम्बी एक ऊँची सड़क बनी है, जिससे होकर प्रधान सड़क पुराने गोआ को जाती है। पञ्जिम शहर खूब सुन्दर और साफ है। उसमें पुर्त्तगाल गवर्नमेण्ट की बहुत सी सुन्दर इमारतें बनी हुई हैं। बारक अर्थात् सैनिकगृह (जिसमें पलटन रहती है) दूर तक फैले हुए हैं. जिनमें तीन सौ सेना रहती है। बारक के पास पुर्त्तगीज़ा के पूर्व्व गवर्नर (शासन कर्त्ता) आलबुकर्क की ५ फीट से अधिक ऊँची प्रतिमा खड़ी है। पुराने क़िलेमें गोआके गवर्नर रहते हैं। इनको छोड़कर पञ्जिम में हाईकोर्ट, कष्टम हौस (महसूलघर चौकी वा कर-सञ्चय-गृह) अस्पताल, जेलखाना, स्कूल, म्यूनिसिपल-आफ़िस (वह स्थान जहाँ शहरकी सफ़ाई जल-वायु, स्वास्थ्य तथा और और कामोंकी देखा भाली के लिये सरकारी कर्मचारी रहते हैं) और अन्यान्य अनेक आफिस हैं।

गोआका राज्य—यह पश्चिमी किनारेपर पुर्त्तगीजों का राज्य है। इसके पश्चिम ओर समुद्र और तीन ओर अंगरेज़ी

जिले है अर्थात इसके उत्तर सावतवाडी का राज्य, पूर्व पश्चिम घाट, पहाड़ियों का सिलसिला जो बेलगाँव जिले से इसको अलग करता है। दक्षिण तरफ उत्तरी किनारा जिला और पश्चिम समुद्र है। इसकी सबसे अधिक लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक ६२ मील और सब से अधिक चौडाई पूर्व से पश्चिम तक ४० मील तथा सम्पूर्ण क्षेत्रफल प्राय १०६२ वर्ग मील है।

गोआ राज्य पहाडी देश है। उसकी सबसे ऊँची पहाडी की सोन सागर नामक चोटी, जो राज्य के उत्तरीय भागमें है, समुद्र के जलसे ८३७ फीट ऊँची है। छोटी नदियाँ बहुत है। बहुतेरी नदिया एक दूसरी को काटती हुई बहती है, जिससे बहुत से छोटे २ टापू बन गये है, जिनमे १८ प्रधान है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय गोआ राज्य के आठों जिलो में ४४५४४८ मनुष्य थे। अर्थात् २५६६११ यूरेशियन और देशी क्रस्तान ६१५ यूरोपियन और अमेरिकन, २३० अफ्रिकन और बाकी में हिन्दू मुसलमान इत्यादि। उस समय गोआ राज्य के कसबे मोरमू गाँव में २५२२ मकान और ११७८४ मनुष्य, मपुका में २२८५ मकान और १०-२८६ मनुष्य तथा पञ्जिम में ११८५ मकान और ८४४० मनुष्य थे।

गोआके राज्य में अब तिजारत बहुत कम होती है; किन्तु वहाँ के बढई, लोहार, सुनार तथा जूता बनाने वाले

बड़े कारीगर है। वे अपनी कारीगरीकी चीजोंको बनाकर बेचते हैं। नारियल, कसैली, आम, तरबूज, कटहल इत्यादि फल, दालचीनी, मिर्च आदि मसाले और नमक आदि चीजें उस राज्यसे अन्य स्थानोंमें भेजी जाती है और कपड़ा, चाँवल, तमाकू, चीनी, शराब, धातु और शीशेके वर्तन इत्यादि विविध प्रकारकी वस्तुएँ अन्य स्थानोंसे गोआ राज्यमें आती हैं। सन् १८७३-१८७४ में गोआकी गवर्नमेन्ट को गोआ राज्य से १०८१४८० रुपये मालगुजारी आई थी और १०७१४४० रुपये खर्च पड़े थे।

पुर्त्तगीज़ों के हिन्दुस्थान का राज्य—हिन्दुस्तान में पुर्त्तगाल के बादशाह के आधीन गोआ, दमन और डिउ हैं। यह तीनों बम्बई अहाते में हैं। गोआ उत्तरी किनारा जिलेके उत्तर, दमन, सूरत और थाना ज़िलेके मध्यमें और डिउ काठियावाड़ के दक्षिण भागमें है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय पुर्त्तगीज़ो के हिन्दुस्थानके सम्पूर्ण राज्यका क्षेत्र फल १०६६ वर्ग मील था और सम्पूर्ण मनुष्य-संख्या ५६१३८४ थी।

इतिहास—सन् १०८ इस्वीसे गोआ कदंब वंशके राजागोके, जिनमेंसे पहिले राजाका नाम त्रिलोचन कद्ंब था, अधिकार में चला आया। सन् १३१२ में दिल्लीके अलाउद्दीन के सेनापति मलिक काफूर ने उसको अपने अधिकार में किया। सन १३७०में विजय नगर के हरिहर के मन्त्री विद्यारन्य माधव ने मुसल्मानोंको परास्त करके गोआ छीन लिया।

सन् १४४९ में बहमनी खानदान के बादशाह दूसरे मुहम्मद ने गोआ को जीत कर बहमनी राज्य में मिला लिया। लगभग १५ वीं सदी के अन्त में यह बीजापूर के आदिल शाही खानदान के हस्तगत हुआ। सन् १५१० को १७ वीं फरवरी को पुर्त्तगाल के बादशाह के गवर्नर "अल्फन्सो-डो-आल्बूकर्क" ने बीजापूरवालो से गोआ छीन लिया। उसने वहाँ किलाबन्दी करके पुर्त्तगीजो का राज्य नियत किया। उसके पश्चात वह बहुत शीघ्रता से प्रसिद्ध होकर पुर्त्तगीज़ों के पूर्व्वी राज्य की राजधानी हुआ। जब गोआ शहर बढा चढा था तब उसमें लगभग २००००० मनुष्य बसते थे और उसमें बडी भारी तिजारत होती थी। पुर्त्तगीजों ने अनेक गिरजे बनवाये। हालेंड वालों तथा महाराष्ट्रोंके कई बार आक्रमण तथा देशी लोगोकी बगावतसे गोआ की बडी हानि हुई। बार बार की लूट पाट तथा वहाँके जल वायुके रोगवर्द्धक होने के कारण उसके निवासी उसको छोडने लगे।

पहिले पुराने गोआ में पुर्त्तगीजों के शासन कर्त्ता रहते थे। सन् १७५९ में पञ्जिम अर्थात नया गोआ, जो मछुओं का छोटा गाँव था, गवर्नर का सदर स्थान बना। वहाँ बीजापूरके यूसुफ आदिलशाह का बनवाया हुआ किला पहिले ही से था। उस समय से पुराने गोआ की आबादी तेजी से घटने लगी। सन् १८४३ में गोआ कसबा पुर्त्तगाल वालोके हिन्दके राज्य की राजधानी हुआ।

दमन।

बम्बईके कुलाबा स्टेशनसे १०९ मील उत्तर दमन रोडका रेलवे स्टेशन है। बम्बई अहातेके गुजरात प्रदेशमें पुर्त्तगालके बादशाहके हिन्दुस्तानके राज्यका एक भाग गोआके गवर्नरके आधीन दमन एक राज्य है। उस राज्यके दो भाग है, एक खास दमन परगना और दूसरा नागर हवेली परगना। सन् १७८१ की मनुष्य-गणनाके समय दोनो परगनोंके ८२ वर्ग मील क्षेत्र फलमें १०२०२ मकान और ४९०८४ मनुष्य थे।

खास दमन परगनेका क्षेत्र फल २२ वर्ग मील है जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २९ गाँवोंमें ८१६२२ मनुष्य थे। दमन परगना दमन गङ्गा नामक नदी द्वारा दो भागोंमें विभक्त है। नदीके दक्षिण थाना जिलेके पास बड़ा दमन और नदीके उत्तर सूरत जिलेकी सीमाके पास छोटा दमन है।

दमन गङ्गा नामक नदीकी दोनों बगलों पर दो किले है। दोनोंकी दीवारों पर तोपें रक्खी हैं। नदीकी बाएँ ओरका पत्थरका किला, जिसकी बगलमें जमीनकी ओर खाई है, प्राय मुरब्बा शकलमें है, उसमें वहाँके शासनकर्ता और उनके आधीनस्थ कर्मचारियोंके कार्यालय तथा मकान बने हैं और म्यूनिसिपल आफिस, अस्पताल, जेलखाना, अनेक बारक, ६ नये चर्च और बहुतसे खानगी मकान हैं। उस

किलेमें पुर्त्त गीजोंके गवर्नर, फौजी सामान, पुर्तगाल सरकार के कर्मचारी लोग और चन्द खानगी निवासी रहते हैं जो प्राय: सब क्रस्तान हैं। नदीकी दक्खिनी ओरका किला नई बनावटका है। उसकी दीवारें बड़े किलेकी दीवारोंसे ऊँची है। उसके भीतर एक गिरजा, एक पादड़ी की कोठी, एक भजनालय आदि इमारतें हैं।

दमन परगनेकी पूर्व्व ओर ६० वर्ग मील क्षेत्रफलमें नागर हवेली परगना है, जिसमें सन १८८१ की मनुष्य गणनाके समय ७२ गाँव और २७४६२ मनुष्य थे।

इतिहास—सन् १५३१ में पुर्त्तगालवालोंने दमनको लूटा। देशियोंने फिर उसको संवारा। सन् १५५९ में पुर्त्तगालवालोंने उसको ले लिया। सन् १७४० में पूनाकी सन्धिके अनुसार महाराष्ट्रोंने पुर्त्तगीजोंको नागर हवेलीका परगना दे दिया। पुर्त्तगालवालोंके हिन्दुस्तानके राज्यकी बढ़तीके समय दमनमें बड़ी सौदागरी होती थी, किन्तु अब बहुत कम होती है।
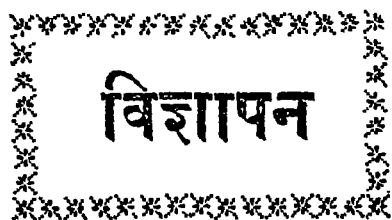
कैथे।

कैथे चीन देशका प्राचीन नाम है और रूस वा रशिया वाले अब तक चीन देशको उसी नामसे पुकारते है।

मोम्बासा।

मोम्बासा अँगरेजोंके पूर्वी अफ्रिकाकी राजधानी है। इसके अधिवासियोंकी संख्या २७,००० है। यहाँ ज़ञ्जिवारके उत्तरमें स्थित १५० माइलका उपद्वीप है। मोम्बासासे विक्टोरिया नियाँजा तक ४०० माइल रेलवेकी सड़क है।

॥ इति ॥

विज्ञापन

स्वास्थ्यरक्षा ।

(द्वितीय आवृत्ति)

यह वही पुस्तक है जिस की तारीफ़ समस्त हिन्दी समाचार पत्रोंने दिल खोल कर की है। इस की उत्तमता के लिये यही प्रमाण काफी है कि इसका दूसरा सम्करण छप गया और बिक भी गया। अब तीसरे की तय्यारियाँ होरही है। जो कोक शास्त्र की जरूरी बातो को जानना चाहते है, जो संसार का सच्चा सुख भोगना चाहते है, जो बहुत दिनोंतक जीना चाहते है, जो अपने घरका इलाज आप ही करना चाहते है, उन्हें यह पुस्तक अवश्य ही दिल लगाकर पढ़नी चाहिये। इसमें जो विषय लिखे गये हैं वह सभी आजमूदा हैं। मनुष्य को अपने सुख के लिये जो कुछ जानने की जरूरत है वह सभी इस में लिखा गया है। जो संसारमें सुखसे जीवन का बेड़ा पार करना चाहते है, उन्हें यह अनमोल पुस्तक लोभ त्यागकर अवश्य खरीदनी चाहिये। छपाई सफ़ाई इतनी सुन्दर है कि पुस्तक को छाती से लगाये बिना जी नहीं मानता। दाम १॥) डाकखर्च ।) सुन्दर फैशनेबिल जिल्दवाली का दाम २) और डाकखर्च ।)

अंगरेज़ी शिक्षा

प्रथम भाग।

(चतुर्थ आवृत्ति)

आजतक ऐसी किताब नहीं छपी। इस किताबके पढने से थोडी भी देवनागरी जाननेवाला भी बिना गुरु के अँगरेजी अच्छी तरह सीख सकता है। इसके पढने से २।३ महीने में ही साधारण अंगरेजी बोलना, तार लिखना, चिट्ठी पर नाम करना, रसीद और हुण्डी वगैर' लिखना बखूबी आसक्ता है। किताब की छपाई सफाई मनोमोहिनी है। हर एक अँगरेजी शब्द का उच्चारण दिया गया है। इसमें कूडा करकट नहीं भरा गया है। इस पुस्तक में वही बातें लिखी गई है जो व्योपारियों, रेलमें काम करनेवालों, डाकखाने में काम करनेवालों तथा तार घर आदि में काम करनेवालों के काममें आती हैं। दाम १५० सफो की पोथी का ॥) डाक-खर्च ≥)

अंगरेज़ी शिक्षा

दूसरा भाग।

जिन्होंने हमारा पहिला भाग पढ लिया है या जिन्होंने कोई दूसरी पुस्तक थोडी बहुत पढली है उनके लिये हमारी

"अँगरेज़ी शिक्षा" का दूसरा भाग निहायत उपयोगी है। इसमें अँगरेजी व्याकरण(English Grammar) बड़ी उत्तमतासे समझाया गया है। आजतक कोई पुस्तक हमारी नज़र नहीं आई, जिसमें इससे उत्तम काम किया गया हो।

व्याकरण वह विद्या है जिसके सीखे बिना किसी भी भाषाका आना महा कठिन है। कितनी ही किताबें क्यो न पढ़लो , जबतक व्याकरण का ज्ञान न होगा तबतक पढनेवाले का हृदय सूना ही रहेगा , लेकिन व्याकरण है बडा कठिन विषय।

इस कठिन विषय को ग्रन्थकर्त्ताने अत्यन्त सरल कर दिया है। हिन्दी जाननेवाला, अगर शान्त स्थान में, एकाग्रचित्तसे, इसका अभ्यास करे तो बहुत जल्दी होशियार हो सकता है। इसके सीख जाने पर उसे चिट्ठियाँ लिखना, बाँचना, अँगरेजी समाचारपत्र पढना बिल्कुल आसान हो जायगा। हम दावेके साथ कहते है कि हमारी अँगरेजी शिक्षाके चारों भाग पढ लेने पर जिसे अँगरेजी में अखबार पढना, चिट्ठियाँ वगैर: धडाके से लिखना न आजायगा तो हम दुगुनी कीमत वापिस देंगे। मगर किताब मँगा लेने से ही कोई पण्डित नही हो सकता, उसका याद करना भी ज़रूरी है। दाम केवल १) रुपया और डाक महसूल ≶) है।

अंगरेजी शिक्षा

तीसरा भाग।

इस भाग में विशेषण और सर्वनाम (Adjective और Pronoun) दिये गये है और उनको इतने विस्तार से समझाया है कि मूर्ख से मूर्ख भी आसानी से समझ सकेगा। इसके बाद सब प्राणियो की बोलियाँ तथा संज्ञा और विशेषणो के चुने हुए जोडे दिये है जिनके याद करनेसे अखबार नॉविल आदि पढनेमें सुभीता होगा। इनके पीछे उपयोगी चिट्ठियाँ और उनका अनुवाद दिया गया है। शेषमें, शब्दोंके संक्षिप्त रूप (Abbreviations) बहुतायतसे दिये है। यह भाग दूसरे भाग से भी उत्तम और छोटा है। दूसरे भागके आगेका सिलसिला इसी भागमें चलाया गया है। दाम १) डाक खर्च ⁄)

अंगरेजी शिक्षा।

चौथा भाग।

हमारी लिखी हुई अँगरेजी शिक्षाकी तीनों भागोंको पबलिक ने दिलसे पसन्द किया है। अत: हमें अब प्रशंसा करनेकी आवश्यकता नही है। इतना ही कहना है कि अँग-

रेजी व्याकरण जितना बाकी रह गया था वह सभी इस भागमें खतम कर दिया गया है, साथ ही और भी अनेक उपयोगी विषय दे दिये गये हैं। दाम १) डाकखर्च ॥)

हिन्दी बंगला शिक्षा

बङ्गला साहित्य आजकल भारत की सब भाषाओंसे ऊँचे दर्जे पर चढ़ा हुआ है। उसमें अनेक प्रकार के रत्नोंका भण्डार है। अतः हर शख्स की इच्छा होती है कि हम उन ग्रन्थों को देखें और आनन्द लाभ करें। किन्तु बंगला सीखनेका उपाय न होनेसे लोगोंके दिलकी मुराद दिलमें ही रह जाती है। हमारे पास ऐसी पुस्तक की, जिसके सहारे से हिन्दी जाननेवाला बँगला बोलना, लिखना और पढ़ना जान जावे, हज़ारो माँगें आईं। मगर ऐसी पुस्तक न तो हमारे यहाँ थी और न बाज़ारमें ही मिलती थी।

अब हमने सैकडो रुपया खर्च करके यह पुस्तक हिन्दी और बँगलामें छपाई है। रचना-शैली इतनी उत्तम है कि मूर्ख भी इसको पढने से बिना गुरुके बँगला का अच्छा ज्ञान सम्पादन कर सकता है।

जिन्हें बँगला सीखने का शौक हो, जिन्हें बँगला के अपूर्व रत्न देखने हो, जिन्हें बँगाल देशमें रोजगार व्योपार

और नौकरी करनी हो, उन्हें यह पुस्तक खरीद कर बँगला अवश्य पढ़नी चाहिये।

इस किताब में एक और खूबी है कि बँगला जाननेवाला इससे हिन्दी भाषा और हिन्दी जाननेवाला बंगला सीख सकता है। ऐसी उत्तम पुस्तक आजतक हिन्दीमें नहीं निकली। खरीददारों को जल्दी करनी चाहिये। देर करने से यह अपूर्व्व रत्न हाथ न आवेगा। दाम ॥) डाक खर्च ॰)

अक़्लमन्दीका ख़ज़ाना

यह पुस्तक यथा नाम तथा गुण है। ऐसी कौन सी नीति और चतुराई की बात है जो इस पुस्तक में नहीं है। भारतवर्षके प्राचीन नीतिकारों की नीति, गुलिस्ताँके चुनीदा उपदेश तथा और भी अनेक चतुराई सिखानेवाली बातें इसमें कूट कूट कर भरी गयी है।

जो दुनिया में किसीसे धोखा खाना नहीं चाहते, जो सभा-चातुरी सीखना चाहते हैं, जो विदुर, कणिक, चाणक्य, शुक्राचार्य्य की नीतिका स्वाद चखना चाहते हैं, जो शेख सादी की अपूर्व्व नीतिका मजा लूटना चाहते हैं, जो चीन देश के विद्वान बुद्धिमान कॉन्फ्यूशियस की अक़्लमन्दी को

अद्भुत बातें जानना चाहते हैं, जो संसारमें सुखसे जिन्दगी बिताना चाहते हैं, उन्हें यह पोथी अवश्य खरीदनी चाहिये।

आज तक ऐसी उत्तम पुस्तक हिन्दी में नहीं निकली। यह पुस्तक हिन्दी में नयी ही निकली है। इस पुस्तकके दस पाँच दफे दिल लगाकर पढ लेने पर, महामूर्ख भी महा बुद्धिमान हो जावेगा। जिन्हें अपने लडकों को महा चतुर और अक्लका पुतला बनाना हो वे इस पुस्तक को अवश्य खरीदें। दाम १) डाक खर्च ॐ)

॥ राजसिंह ॥

वा

चंचलकुमारी।

यह राजसिंह सचमुच उपन्यासोंका राजा है, जिस प्रकार से वनका राजा सिंह बनैले जन्तुओंपर अपना पूरा प्रभाव रखता है उसी तरह यह भी उपन्यासोंमें "सिंह" हो रहा है। भारतवर्ष की इतनी कायापलट हो जानेपर भी अभीतक चित्तोरका नाम नहीं गया है, अभीतक चितौरकी उज्ज्वल-कीर्त्ति दिग् दिगान्तरमें गूँज रही है, राजपूतानेकी स्वाधीनता लोप हो जानेपर भी अभी तक चितौरका माथा ऊँचा हो रहा है। उसी प्रकारसे हमारे उपन्यासके नायक "राजसिंह"का

नाम भी इतिहास जाननेवालोंके आगे छिपा नहीं है। राज-सिंहकी वीरता, धीरता, चतुरता, बुद्धिमत्ता, प्रतिज्ञापालनकी पूरी पूरी सत्ता, अचल प्रतिष्ठा, दूरदर्शिता, प्रजापालनमें तत्-परता और निर्लोभता अभी तक उनका नाम निष्कलङ्क कर रही है। हमारा यह "राजसिंह" ऐतिहासिक शिक्षा देने-वाला एक रत्न है। जिस औरङ्गजेबकी कूटनीतिके आगे समूचा भारत थरथराता था, जिस मुगल सम्राट औरङ्गजेबकी अमल्दारीमें हिन्दू-राजे अपनी बहन बेटी व्याह देना अपना माथा ऊंचा करना समझते थे, जिस औरङ्गजेबके कोड़ेसे इशारेमें ही बड़े बड़े राजे महाराजे उनके पैरोंके नीचे लोटते थे, और जिस प्रतापी मुगल सम्राटने बड़े बड़े राजा-ओंसे भी "जजिया" नामक कर वसूल कर लिया था, उसी प्रतापी औरङ्गजेबके चगुलसे एक राजपूत हिन्दू सुन्दरीको बचानेके लिये राजसिंहकी अटल प्रतिज्ञाका पूरा पूरा खाका इसमें खींचा गया है। इसको पढ़नेसे ही प्यारे पाठकोंको मालूम हो जायगा कि राजपूतों को प्रतिज्ञा कैसी अटल होती थी।

इस उपन्यासकी सभी बातें आश्चर्यमें डालनेवाली, कुतूहल को बढ़ानेवाली और शिक्षाको देनेवाली हैं। रूप नगरके राजा विक्रमसिंहका सुन्दर राज्य, राजकुमारी चञ्चलकुमारी का एक तस्वीर देखकर राजसिंहपर मोहित होना, अपनी तस्वीरका अनादर सुनकर औरङ्गजेबका क्रोधित होना,

हज़ारों सिपाही भेजकर चञ्चलकुमारीको बुलवाना, चञ्चलका राजसिंहको विचित्र पत्र भेजना, राजसिंहका विचित्र रीतिसे मुग़लोंके हाथसे चञ्चलको छुड़ाना, माणिकलालकी कूट बुद्धि, औरङ्ग़ज़ेबका भयानक क्रोध, विक्रमसिंहका भारी परिताप, चञ्चलकी सखी निर्मलकी अद्भुत कार्य्यावली, औरङ्गजेबकी कन्या जेबुन्निसाका मुबारकसे गुप्तप्रेम, औरङ्गजेबके शाही महलकी गुप्त घटनायें, राजसिंहका औरङ्गजेबके नाम पत्र भेजना, औरङ्ग़ज़ेबका और भी क्रोधित होना, राजसिंहसे औरङ्ग़ज़ेबकी भयानक लड़ाई, तीन तीन बार औरङ्ग़ज़ेबका हारना आदि घटनायें पढ़ते पढ़ते पाठक उपन्यास-मय हो रहेंगे। ऐसा उत्तम मनोरम और सच्ची घटनाओंसे भरा हुआ उपन्यास बहुत कम देखनेमें आवेगा। सच तो यह है कि यह उपन्यास उपन्यासोंमें मुकुट हो रहा हैं। अवश्य पढ़िये, पहिलेही की भाँति सर्व साधारणको शिक्षा दिलानेके लिये २०६ पृष्ठोंकी उत्तम पुस्तकका दाम कुल ॥) डाक महसूल ≈) रक्खा गया है।

मानसिंह

वा

कमलादेवी।

यह उपन्यास मुसल्मानी अमल्दारी की चालोंका वाय॰

स्कोप और हिन्दू राजाओंके नामका पूरा पूरा उदाहरण दिखा देनेवाला है। हिन्दू-संसार में ऐसे बहुत कम मनुष्य होंगे, जिन्होंने अकबरके दाहिने हाथ महाराज मानसिंहका नाम न सुना होगा। यह ग्रन्थ उन्हीं ऐतिहासिक वीरकी विचित्र कार्यावलीसे भरा हुआ है। मानसिंहके नामका कलङ्क, अपनी बहनको अकबरसे व्याह देना, महाराणा प्रतापका साहसपूर्ण उद्गार, हेमलताका विचित्र प्रेम, एक बाजीगरकी विचित्र चतुराई, बहराम खाँका कपट, नूरजहाँका सलीमसे प्रेम, शेरशाह तथा सलीमका बाहुयुद्ध, शेरखाँका नूरजहाँसे विवाह, कमलादेवीका दरबार, देवसिंहकी भीषण वीरता, राजपूतोंमें आपस की फूट, कमलादेवीका गुप्त प्रेम, इसी गुप्त-प्रेमके कारण मानसिंहकी खराबी, महाराज मानसिंह और हेमलताका सच्चा प्रेम, मानसिंहके दुराचार, हेमलताकी निराशा, अरावली पर्वतपर फिर मानसिंह और मुगलोंका भयानक युद्ध, मानसिंहकी सच्ची वीरता और रणकौशल आदि रहस्यमय घटनाओंको पढते पढते पाठक अपने आपको भूल जायेंगे। ग्रन्थ बडा ही रोचक और भावपूर्ण हुआ है। ऐतिहासिक घटनाओंका इस सुन्दरतासे वर्णन किया गया है कि पढनेवालोंके हृदयमें एक एक बात चुभ जाती है। सच तो यह है कि भारतवर्षकी इस दीन अवस्थामें ऐसे ही उपन्यासोंकी आवश्यकता है जो पढनेवालोंके हृदयपर उनके पूर्व्व पुरुषों का चित्र अङ्कित कर सकें। आशा है हमारा यह

उपन्यास वही काम कर दिखायेगा। इस उपन्यासको पढ़ते समय पाठकोंको परिणामपर भी अवश्य ध्यान रखना चाहिये। हम अब इसकी प्रशंसामें अधिक लिखना व्यर्थ समझते हैं; क्योंकि यह अपना नमूना आपही है। यदि आपलोग इसे मँगाकर ध्यान देकर पढ़ेंगे, तो आपलोगोंको मालूम हो जायगा कि विज्ञापनका एक एक अक्षर सत्य है। अवश्य पढ़िये, ऐसा अवसर बार बार हाथ नहीं आता। सर्व साधारणके सुभीतेके लिये २५६ पृष्ठोंकी पुस्तकका दाम कुल ॥=) रक्खा गया है। डाकमहसूल ≈)

गल्पमाला

यह पुस्तक हाल में ही प्रकाशित हुई है। इस में एक से एक बढ़ कर मनोरञ्जक और उपदेश पूर्ण दस कहानियाँ लिखी गयी हैं। पढ़ना आरम्भ करने पर छोड़ने को जी नहीं चाहता। हिन्दीके अच्छे अच्छे विद्वानोंने इस पुस्तक की प्रशंसा की है। पढ़ते समय कभी करुणाकी नदी लहराती है। कभी प्रेमका समुद्र उमड़ने लगता है। कभी पुण्यकी जय देख, हृदय में पवित्र भावका सञ्चार होता है और कहीं पाप के कुफल को देख कर परमात्मा के अटल न्यायकी महिमा प्रत्यक्ष आँखोंके आगे दिखाई देने लगती है। दस उपन्यासोंके पढ़ने में जो आनन्द हो सकता है, वह केवल गल्पमाला ही से मिल सकता है। दाम ।=) डाकखर्च ≈)

बादशाह लियर

यह विलायतके जगद्विख्यात कवि शेक्सपियर के "किंग-लियर" नामक नाटक का गद्य में बहुत ही मनोमोहन और रोचक अनुवाद है। एकबार पढना आरम्भ करके बिना खतम किये पुस्तक के छोडने को जी नहीं चाहता। शेक्स-पियर ने बादशाह लियर और उसकी तीन कन्याओंका चरित्र बहुत ही उत्तम रूप से लिखा है। मनोरञ्जन होनेके अलावः इस पुस्तक से एक प्रकार की शिक्षा भी मिलती है। पढते पढते कभी हँसी आती है। कभी बूढे बादशाह लियर की दुर्दशा का हाल पढ कर आखोंमें आँसू भर आते है। हिन्दी-प्रेमियोंको यह पुस्तक भी अवश्य ही देखनी चाहिये। दाम ।) डाकखर्च ।)

गुलिस्तां

यह वही पुस्तक है जिसकी प्रशंसा तमाम जगत् में हो रही है। वलायत, जरमनी, फ्रान्स, चीन, जापान और हिन्दु-स्तानमें सर्व्वत्र इस पुस्तकके अनुवाद हो गये हैं। लेकिन अफ़सोस की बात है कि बेचारी हिन्दी में इसका एक भी पूरा अनुवाद नहीं हुआ। इसके रचयिता शेखसादीने इसमें एक एक बात एक एक लाख रुपये की लिखी है। वास्तव

में यह पुस्तक अनमोल है। इसी कारण से यह पुस्तक यहाँ मिडिल, ऐंट्रेन्स, एफ० ए० बी० ए० तक में पढाई जाती है। इस की नीतिपर चलनेवालामनुष्य सदा सुख से रह कर जीवन का बेड़ा पार कर सकता है। मनुष्य मात्र को यह पुस्तक देखनी चाहिये। इसका अनुवाद सरल हिन्दीमें हुआ है। छपाई सफ़ाई भी देखने लायक है। दाम १) डाकखर्च ॥)

राधाकान्त

(उपन्यास)

आज कहने को तो अनेक उपन्यास निकलते हैं किन्तु वह सब रद्दी हैं। उनसे पाठकोंके मन और चरित्र के ख़राब होनेके सिवाय कोई लाभ नही है। इसके पढ़ने से एक अमीर की सच्ची घटना आँखों के सामने आजाती है, आदमी धनमत्त होकर कैसी कैसी ठोकरें खाता है, खोटी संगति में पड कर,धनवानोंके लडके कैसे खराब हो जाते हैं, खुशाम-दी लोग बडे आदमियों की कैसी मिट्टी खराब करते है, जब तक धन हाथमें रहता है तब तक खुशामदी मधुमक्खियों की तरह चिपटे रहते हैं धन स्वाहा होते ही वही बात भी नहीं पूछते, रन्डियाँ कैसी मतलबी और धन की प्रेमी होती हैं और सच्चे और आदर्श मित्र कैसे होते हैं।

इस पुस्तकके देखने से उपरोक्त विषयों के सिवाय ईश्वर में प्रेम होने, ईश्वर पर एक मात्र भरोसा करने, विपत्तिकाल में धैर्य्य धारण करने की युक्तियाँ भी मालुम होगी। अमीरों को तो इस पुस्तक को अवश्य ही बालकों को दिखाना चाहिये। इन्हीं बातों के न जानने और ऐसी पुस्तकों के न पढने से ही लाखं के घर खाक में मिल जाते हैं। पुस्तक अनमोल है। छपाई भी इतनी सुन्दर है कि लिख नहीं सकते। दाम ॥) डाकखर्च ≶)

भारत में पोर्च्युगीज।

(इतिहास)

यह एक पुराना इतिहास है। इस में यह बात खूब ही सरल भाषा में दिखायी गयी है कि पहले पहल फिरङ्गी लोग भारत में कैसे आये, उन्होंने कैसे भारत का पता लगाया। सब से पहले भारत में आनेवाले फिरङ्गी को सात समन्दर चौदह नदियाँ पार कर के भारत की खोज में आने के समय कैसे कैसे कष्ट उठाने पड़े। फिरङ्गियों (पोर्च्युगीजों) ने दक्खन भारतमें कैसे २ अत्याचार किये। भारत का धन वे अपने देशमें कैसे लेगये। भारतीय ललनाओं की कैसी बेइज्जती की। अन्तमें भगवान भारतवासियो पर दयालु

हुए। उन्होंने शान्तिप्रिय, प्रजावत्सला, न्यायशीला ब्रिटिश जाति को भारतवासियों के कष्ट निवारणार्थ भारत में भेजा। अँगरेजों ने सब भारतवर्ष अपने हाथ में लिया। मुसल्मान और पोर्च्युगीजों को भगा कर भारत में शान्ति स्थापन की। आज अँगरेज महाराज के छत्रतले हम भारतवासी सुख चैन की बंशी बजाते हैं। देशमें लूट मार काटफाट बन्द है। शेर बकरी एक घाट पानी पीते हैं। एक महा बूढ़ी डोकरी भी सोना उछालती फिरती है पर कोई यह कहनेवाला नहीं है कि तेरे मुँह में के दाँत है।

यह सब हालात इस पुस्तक के पढने से मालुम होंगे। कौन भारतवासी इन गुप्त और पुराने विषयों को न जानना चाहेगा ? प्रत्येक भारतवासी को अपनी जन्मभूमिका पुराना हाल जानना चाहिये और अँगरेजों की भलाई के लिये उन का कृतज्ञता-भाजन होना चाहिये। दाम ॥) डाकखर्च ≈)

बाल गल्पमाला

यह पुस्तक हिन्दी जगत् में बिलकुल नयी और मनुष्य मात्र के देखने योग्य है। मनुष्य मात्र को चाहिये कि इसे पढे और अपनी सन्तान को पढावे। अगर लोग इसे अपने बालकों को पढावें तो यह अधोगति पर पहुँचा हुआ भारत फिर उन्नतिके उच्चतम शिखर पर चढ जाय। घर

घरमें सुख चैन की बाँसुरी बजने लगे। लड़के मा बाप की आज्ञा पालन करें और सभी स्त्रियाँ पतिव्रता हो जायँ।

इसमें रामचन्द्र की पितृ-भक्ति, भीष्म पितामह का कठिन प्रतिज्ञा पालन, लक्ष्मण और भरतका भ्रातृ-प्रेम, श्रीकृष्ण की विनय, युधिष्ठिर और महात्मा वशिष्ठ की क्षमाशीलता, हरिश्चन्द्र का सत्यपालन, मुद्गलका आतिथ्य-सत्कार, आरुणिक की गुरुभक्ति, महाराणा प्रतापसिंह के प्रोहित की राजभक्ति; चण्डका कर्त्तव्य पालन और कुन्तीका प्रत्युपकार खूब ही सरल और सरस भाषामें दिखाया है। अधिक क्या कहें पुस्तक घर घरमें विराजने और पूजी जाने योग्य है। दाम ।≈) डाकखर्च ≈)

अलिफ़ लैला

पहला भाग।

यह ऐसी उत्तम किताब है कि जिस का तरजुमा फ्रेंच, जरमन, अँगरेजी, रूसी, जापानी आदि भाषाओंमें तीन तीन और चार चार प्रकार का हो चुका है। हमने भी इसका तर-जुमा एक निहायत बढ़िया अङ्गरेजी पुस्तकसे किया है। तरजुमे में कोई विषय छोड़ा नहीं है। भाषा इसकी निहा-यत सीधी सादी और ऐसी सरल रक्खी है कि थोड़े पढ़े बच्चे से लेकर बहुत पढ़े हुए विद्वान तक इससे आनन्द लाभ कर

सकेंगे। उपन्यासोंका स्वाद चखे हुए पाठकोंको यह पुस्तक बहुत ही प्यारी लगेगी। एकबार पढ़ना शुरू करके पढ़नेवाले खाना पीना भूल जायेंगे और इसे समाप्त किये बिन न रहेंगे। पढ़नेवाले औरतों की चालाकियाँ, उनकी बेवफाई, आदि पढ़ कर हैरत में आजायेंगे और कहने लगेंगे कि हे भगवन्! क्या औरतें इतनी मक्कारा होती हैं! देव राक्षस सन्दूकोंमें बन्द रख कर भी अपनी औरतोंकी चालाकी न पकड़ सके। औरतों ने जब देव जिन्नों के ही चूना लगा दिया तब मनुष्य विचारा क्या चीज है? २११ सफोंकी बड़ी पुस्तक का दाम केवल ॥) और डाकखर्च ।) लगेगा।

बीरबल की हाजिर जवाबी और चतुराई

अँगरेजी में एक कहावत है कि 'खुश रहो तो सदा तन्दरुस्त रहोगे"। मतलब यह है कि सदा निरोग और बलवान रहने के लिये मनुष्य को खुश रहने की जरूरत है। काम धन्धे से छुट्टी पाकर, चित्त प्रसन्न करनेवाली पुस्तकें देख कर दिल बहलाना, बहुत ही अच्छा है। इस पुस्तक में ऐसे ऐसे चुटकुले और बढ़िया २ किस्से छाँट छाँट कर लिखे गये हैं कि, पढ़नेवालोंकों को कोरा आनन्द आनेके सिवाय लाख लाख रुपये की नसीहतें भी मिलती है, मित्र-मण्डली हँसी के मारे लोटपोट होने लगती है, उद्विग्न चित्त लोगोंके दिलकी कली कली खिल उठती है। इस भागमें ८४ सफे

हैं। अक्षर साफ बम्बई के समान मोटे मोटे हैं। कागज़ बढ़िया है। तिस पर भी दाम केवल ।) मात्र है। डाक खर्च ᠁)

कालज्ञान।

यह पुस्तक वैद्यों या वैद्यक विद्या से प्रेम रखनेवालों या उसका अभ्यास करनेवालों के बड़े ही काम की है। ऐसी ही पुस्तकों के सहारे वैद्य लोग पहिले नाम और धन कमाते थे। वैद्योंको यह अपूर्व्व पुस्तक अवश्य गलेका हार बना कर रखने योग्य है। चिकने कागज़ पर मनमोहिनी छपाई सहित ७६ सफे की पुस्तकका दाम ।) डाकखर्च ᠁)

संगीत बहार।

यह गानेके शौकीनों लिये बहुत ही अच्छी पुस्तिका है। इसमें दादरा, ठुमरी, कवित्त, दोहे और थियेटरों के अच्छे अच्छे गाने चुन चुन कर दिये गये है। थोड़े दामों में ऐसी सुन्दर पुस्तक और जगह नहीं मिलती। दाम ।) डाकखर्च ᠁)

प्रेम

इसमें एक सती स्त्रीके सच्चे प्रेम और सतीत्व का खाका खूब ही अच्छी तरह खींचकर दिखाया गया है। पुस्तक देखने ही योग्य है। दाम ᠁) डाकखर्च ᠁)

खूनी मामला।

इसमें जासूसी लटके खूब ही दिखाये हैं। कदम कदम पर खूनी अपनी चालें खेलता है और जासूस कैसी चतुराई से उसका पीछा करता है। इसको भी जरूर देखिये। दाम ।) डाकखर्च ॥)

राग-रत्नाकर

यह भी गाने की पुस्तक है। इसमें भी बहुत ही अच्छे अच्छे गाने संग्रह किये गये हैं। बाबू तारा चरण बरियार पुर निवासी की बनाई हुई गजलें देखने ही योग्य हैं। दाम ॥) डाकखर्च ॥)

सँगीत प्रवीणा

इसमें उर्दू की पुस्तकों से ऐसी अच्छी २ गजलोका संग्रह किया गया है कि लिख नहीं सकते। अनेक थियेटरों के गाने, लखनौ, बनारस, दिल्ली और आगरेकी मशहूर मशहूर रण्डियों की बनाई हुई जगत् प्रसिद्ध गजलों का खूब ही समावेश हुआ है। कलकत्ते की जगत् प्रसिद्ध गौहरजान के गानोंकी यदि बहार देखनी हो, कलकत्ते बम्बई के थियेटरों के बढ़िया बढ़िया गाने देखने हों, तो इसको अवश्य मँगाइये। एक खूबी और है कि इस में गाने बजाने के थोड़े

नियम भी समझाये है। जो गाने बजाने के शौकीन हैं उन्हें तो यह पुस्तक देखनी ही चाहिये, किन्तु जो गाने बजाने से प्रेम नहीं रखते उन्हें भी अवश्य देखनी चाहिये। दाम ।⁄) डाकमहसूल ⁄)

रामायण-रहस्य

प्रथम भाग

हिन्दी जगत् में यह भी एक नयी चीज है। रामायण का परिचय देना अनन्त सागर सलिलमें दो चार विन्दु जल डालना है। ऐसा भावमय, ऐसा सुमधुर, ऐसा शिक्षाप्रद, ऐसा भक्तिमय, ऐसा रसीला और दूसरा ग्रन्थ संसार में नहीं है।

इस जगत् में कितने ही ग्रंथ बने और बन रहे हैं परन्तु रामायण के समान किसी का आदर न हुआ। आदर कहाँ से हो, इसके समान और ग्रन्थ है ही नहीं। मातृ-भक्ति, पितृ-भक्ति, स्त्री-धर्म, मित्र-धर्म, राज-नीति, प्रजा धर्म, प्रजा-पालन, युद्ध-शिक्षा, युद्ध-नीतिका जैसा सुन्दर चित्र रामायण में है वैसा और किसी ग्रन्थमें नहीं है। रामचन्द्रकी पितृ-भक्ति, लक्ष्मण और भरत की भ्रातृ-भक्ति, सीताका पति-प्रेम, दशरथका पुत्र-प्रेम, हनूमान की स्वामिभक्ति का नमूना जैसा इस ग्रन्थमें है और ग्रन्थोंमें नहीं है।

महात्मा तुलसीदासजी रामायण लिखकर अमर हो गये हैं किन्तु अनेक लोग ऐसे हैं जो तुलसीदासजी की गूढ़ भावमयी कविता को समझने में असमर्थ होते हैं। इसीसे हमने वाल्मीकि, अध्यात्म, मयङ्क और तुलसीकृत रामायणों के आधारपर इसे अत्यन्त सरल हिन्दीमें एक विद्वान् लेखक से लिखवाकर प्रकाशित किया है। जिन्हें वाल्मीकी आदि सारी रामायणों का सरल भाषामें स्वाद लेना हो वे इसे अवश्य देखें। बहुत क्या लिखें चीज देखने ही योग्य है। पढ़ते पढ़ते बिना खतम किये छोड़ने को जी नहीं चाहता। भाषा उपन्यासों की सी है, इससे चौगुना आनन्द आता है। घटनाएँ पानीकी घूँटकी तरह दिमाग में घुसती चली जाती है। छपाई भी इतनी सुन्दर हुई है कि देखते ही पुस्तक को छाती से लगाने को जी चाहता है। यह प्रथम भाग है। इसमें बालकाण्ड और अयोध्याकाण्ड पूरे हुए है। बड़े आकारके १६० सफोंकी पुस्तकका दाम ॥) डाक खर्च ≶)

हिन्दी भगवद्गीता ।

गीताकी एक एक शिक्षा, एक एक बात, मनुष्यको संसार के दुःख लो शोसे छुड़ाकर तत्वज्ञान सिखाती है और संसारी मनुष्योंके अशान्त मनको शान्ति देती है। आत्मज्ञान जितनी

अच्छी तरह इसमें कहा गया है और पुस्तकों में नहीं कहा गया है। इसके पढने समझने और इस पर विचार करनेसे मनुष्य संसार के बन्धनोंसे, जन्म मरणके कष्टसे, छुटकारा पाकर मोक्ष लाभ करता है। महाराज कृष्णचन्द्रका एक एक उपदेश पृथ्वी भरके राज्य से भी बढकर मूल्यवान है। मनुष्य मात्रको यह भगवद्वाक्य देखना, पढना और समझना चाहिये और अपना भविष्य सुधारना चाहिये। आज तक गीताके कितने ही अनुवाद हो चुके हैं, मगर कुछ तो अधूरे हैं और कुछ ऐसी पुराने ढाँचेकी ऊटपटाँग हिन्दीमें अनुवाद हुए हैं, कि उनका समझना ही महा कठिन है, इसलिये गीता प्रेमियोंका मतलब नहीं निकलता।

यह अनुवाद एकदम सरल हिन्दीमें हुआ है और इतनी अच्छी तरह हरेक विषय समझाया है, कि मूर्खसे मूर्ख बालक भी गीताके गहन विषयोंको बडी आसानीसे समझ कर हृदयङ्गम कर सकेगा। खाली गीता-पाठ करनेसे कुछ लाभ नहीं हो सकता, किन्तु गीताको पढ़कर समझने और विचार करनेसे जो लाभ मनुष्यको हो सकता है वह त्रिलोकीके राज्यसे भी बढकर है। अधिक क्या कहें इस पुस्तकमें ग्रन्थकर्त्ताने जैसी हरेक विषयको समझानेकी कोशिश की है वैसी किसीने भी नहीं की है। जिनके पास गीताके और और अनुवाद हों, उन्हें भी यह अनुवाद अवश्य देखना चाहिये।

पुस्तक मिलनेका पता :-
हरिदास एण्ड को०
२०१, हरीसन रोड बडाबाजार
कलकत्ता